हिन्दी गद्य साहित्य और संरचना

COURSE CODE: SGB24HD102AC

Ability Enhancement Course - Hindi

For Four Year Undergraduate Programmes

Self Learning Material

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

SGOU

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

हिन्दी गद्य साहित्य और संरचना

Course Code: SGB24HD102AC

Semester- IV

SGOU

Ability Enhancement Course - Hindi
For Four Year Undergraduate Programmes
Self Learning Material
(with Model Question Paper Sets)

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

हिन्दी गद्य साहित्य और संरचना

Course Code: SGB24HD102AC
Semester- IV
Ability Enhancement Course- Hindi
For FYUG Programmes

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

Academic Committee

Dr. R. Sasidharan
Dr. Nimmy A. A
Dr N Shaji
Dr. Manoj N
Dr. Bindhu M G
Dr. Girish Kumar K. K
Dr Prathyusha S Nair.
Dr. Gopakumar G.
Dr. Rajan T.K.

Development of the Content

Dr. Lembodharan Pillai B.

Review and Edit

Dr. Sunny M.
Prof. (Dr.) N. Mohanan

Linguistics

Dr. Suma S.

Scrutiny

Dr. Krishna Preethy A.R.
Christina Sherin Rose J.,
Dr. Sudha T.
Dr Indu G. Das.

Design Control

Azeem Babu T.A.

Cover Design

Jobin J.

Co-ordination

Director, MDDC :
Dr. I.G. Shibi
Asst. Director, MDDC :
Dr. Sajeevkumar G.
Coordinator, Development:
Dr. Anfal M.
Coordinator, Distribution:
Dr. Sanitha K.K.

Scan this QR Code for reading the SLM on a digital device.

Second Edition
December 2025

Copyright
© Sreenarayanaguru Open University

ISBN 978-81-995975-0-1

SGOU

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.in

Visit and Subscribe our Social Media Platforms

MESSAGE FROM VICE CHANCELLOR

Dear learner,

I extend my heartfelt greetings and profound enthusiasm as I warmly welcome you to Sreenarayanaguru Open University. Established in September 2020 as a state-led endeavour to promote higher education through open and distance learning modes, our institution was shaped by the guiding principle that access and quality are the cornerstones of equity. We have

firmly resolved to uphold the highest standards of education, setting the benchmark and charting the course.

The courses offered by the Sreenarayanaguru Open University aim to strike a quality balance, ensuring students are equipped for both personal growth and professional excellence. The University embraces the widely acclaimed “blended format,” a practical framework that harmoniously integrates Self-Learning Materials, Classroom Counseling, and Virtual modes, fostering a dynamic and enriching experience for both learners and instructors.

The University aims to offer you an engaging and enriching educational journey. “हिन्दी गद्य साहित्य और संरचना” is a foundational Ability Enhancement course in Hindi, offered in the third semester of the FYUG programmes. This course is designed to equip learners with identifying Hindi literary prose and their reading. The Self-Learning Material has been carefully developed to ensure clarity and accessibility, integrating real-life contexts and examples to enhance understanding and effective communication in Hindi. The Self-Learning Material has been meticulously crafted, in corporating relevant examples to facilitate better comprehension.

Rest assured, the university’s student support services will be at your disposal throughout your academic journey, readily available to address any concerns or grievances you may encounter. We encourage you to reach out to us freely regarding any matter about your academic programme. It is our sincere wish that you achieve the utmost success.

Regards,
Dr. Jagathy Raj V. P. 01-12-2025

SGOU

Contents

BLOCK - 01 हिन्दी गद्य का उद्‌भव और विकास 01

इकाई 1 गद्य के प्रकार 02

इकाई 2 गद्य के अन्य प्रकार 10

इकाई 3 गद्य के अन्य प्रकार -2 16

BLOCK - 02 विविध गद्य रूपों का परिचय 21

इकाई 1 ईदगाह- प्रेमचंद (कहानी) 22

इकाई 2 सदाचार का तावीज़ 29

इकाई 3 रज़िया - रामवृक्ष बेनीपूरी (रेखाचित्र) 36

BLOCK - 03 हिन्दी कहानी का सामान्य परिचय 42

इकाई 1 हिन्दी कहानी का विकास 43

इकाई 2 हिन्दी के प्रमुख कहानिकार 50

इकाई 3 प्रेमचंद, प्रसाद, जैनेंद्र, अज्ञेय और उषाप्रियंवदा का योगदान 57

इकाई 4 वापसी – उषा प्रियंवदा 65

BLOCK - 04 संरचनात्मक व्याकरण 71

इकाई 1 शब्द विचार 72

इकाई 2 संज्ञा, लिंग, वचन, कारक सर्वनाम, विशेषण 78

इकाई 3 क्रिया, क्रिया विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादी बोधक और काल 87

इकाई 4 व्याकरण के व्यावहारिक प्रयोग 97

Model Question Paper Sets 106

SGOU

BLOCK - 01

हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास

SOU

इकाई : 1

गद्य के प्रकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी गद्य साहित्य की विविध विधाओं के आविर्भाव के बारे में परिचय प्राप्त करता है।
- गद्य साहित्य की विविध विधाओं के विकास से परिचय प्राप्त करता है।
- आधुनिक काल के गद्य साहित्य से परिचय प्राप्त करता है।
- आधुनिक काल के प्रमुख गद्यकार और उनके ग्रंथों का परिचय प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक या गद्य काल सचमुच विकास का काल है। हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल भारत के इतिहास के बदलते हुए स्वरूप से प्रभावित था। स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीयता की भावना आदि का प्रभाव साहित्य में भी आया। भारत में औद्योगीकरण का प्रारंभ होने लगा था। आवागमन के साधनों का विकास हुआ। अंग्रेज़ी और पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव बढ़ा और जीवन में बदलाव आने लगा। ईश्वर के साथ साथ मानव को समान महत्व दिया गया। भावना के साथ साथ विचारों को पर्याप्त प्रधानता मिली। पद्य के साथ साथ गद्य का भी विकास हुआ और छापेखाने के आते ही साहित्य के संसार में एक नयी क्रांति हुई।

इस काल में गद्य का वास्तविक उद्भव ही नहीं, उसका सर्वतोन्मुखी विकास भी हुआ है। हिन्दी आज विश्व की उच्चस्तरीय भाषा है। इसका साहित्य समृद्ध एवं सर्वव्यापी है। आधुनिक हिन्दी साहित्य की संपन्नता के पीछे अनेक लेखकों व पंडितों का कठिन परिश्रम परिलक्षित है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचंद्र शुक्ल, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी जैसे आचार्यों, लल्लूलाल, सदल मिश्र, प्रेमचन्द, यशपाल, अज्ञेय, नामवर सिंह, रामविलास शर्मा जैसे लेखकों, हरिऔध, प्रसाद, निराला, अज्ञेय, महादेवी वर्मा के जैसे रचनाकारों के प्रयत्न से हिन्दी साहित्य विक्सित एवं समृद्ध हुए हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

गद्य का उद्भव, आर्य समाज, राजा राममोहन राय, ईसाई मिशनरि, फोर्ट विलियम कॉलेज, लल्लूलाल और सदल मिश्र

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Discussion / चर्चा

साहित्य गद्य और पद्य के रूप में दो प्रकार के होते हैं। पद्य छंद बद्ध है। इसलिए साधारणतः छंद, अलंकार जैसे काव्यगत नियमों का पालन करता है। गद्य छंद मुक्त है। इसलिए बड़ी आसानी से बोल या लिख सकते हैं। गद्य तो पद्य की तुलना में सरल, सहज, आसान और व्यावहारिक भाषा है। गद्य को अंग्रेजी में Prose कहते हैं। गद्य में छंद, अलंकार, रस योजना आदि काव्य संबंधी नियमों के पालन करने की आवश्यकता नहीं है।

भारत में गद्य का विकास अंग्रेजों के आने के बाद हुआ है। गद्य वाक्य बद्ध तथा विचारात्मक रचना है। इसमें मनुष्य अपनी चेष्टाएँ, कल्पनाएँ, मनोभाव, सोच-विचार आदि सरलता से प्रकट कर सकता है। इसलिए आधुनिककाल में गद्य, अभिव्यक्ति का सबसे शक्तिशाली माध्यम हो चुका है।

हिन्दी में गद्य साहित्य आधुनिक काल की उपज है। जब तक राजा-महाराजाओं का शासन जोरों पर था, तब तक पद्य की प्रबलता थी। पद्य दैनिक जीवन में आदान-प्रदान का अनायास माध्यम था। जब जन साधारण को व्यवहारिक स्तर पर आदान-प्रदान के आवश्यक माध्यम की ज़रूरत पड़ी, तब से गद्य का विकास आरंभ हुआ है। अंग्रेजों का आगमन, कोलकत्ता में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना, छपाई यंत्रों की स्थापना, कई पत्र-पत्रिकाओं का आरंभ आदि हिन्दी गद्य साहित्य के विकास के मुख्य कारणों में कुछ हैं। अब हिन्दी में गद्य साहित्य किसी भी भारतीय भाषा के पीछे नहीं है। आजकल कंप्यूटर, इंटरनेट आदि के द्वारा हिन्दी गद्य निरंतर विकासशील है।

1.1.1 हिन्दी की विभिन्न गद्य विधाएँ

मनुष्य के भावों और विचारों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति गद्य से संभव होती है। इसलिए सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक एवं वैज्ञानिक सभी विषयों के लिखने का माध्यम गद्य बन गया है। गद्य अभिव्यक्ति का सबसे सरल-सहज माध्यम है। गद्य से तात्पर्य है कहना अथवा बोलना।

हिन्दी में गद्य साहित्य एक आधुनिक विधा है। गद्य कई प्रकार के होते हैं। साहित्य के विकास के साथ-साथ विविध गद्य विधाएँ हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में शामिल हो गये। शुक्लोत्तर युग में अधिकाँश गद्य विधाएँ विकसित हो गयीं। उपन्यास, नाटक, एकांकी, कहानी, निबंध और आलोचना आदि आरंभिक गद्य विधाएँ हैं।

1.1.1.1 हिन्दी में कहानी

हिन्दी में कहानीआधुनिक काल की उपज है। हिन्दी की आरम्भिक कहानियाँ मात्र मनोरंजन को ध्यान में रखकर लिखी प्रतीत होती हैं। हिन्दी के प्रारम्भिक समय के कहानीकारों में लल्लूलाल (प्रेम सागर), सदल मिश्र (नासिकेतोपाख्यान), इंशाअल्ला खाँ (रानी केतकी की कहानी) आदि के नाम सर्वोपरी है। सन् 1900 में किशोरीलाल गोस्वामी कृत इन्दुमति नामक कहानी सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई। इन्दुमति को हिन्दी के प्रथम प्रामाणिक, मौलिक कहानी मानी जाती है।

1.1.1.2 हिन्दी में उपन्यास

उपन्यास को अंग्रेजी में Novel कहते हैं। हिन्दी में उपन्यास का वास्तविक आरंभ अंग्रेज़ी साहित्य के संपर्क से हुआ है। संसार में पहले पहल उपन्यास का आविर्भाव और विकास यूरोप में हुआ था। हिन्दी का पहला उपन्यास और उपन्यासकार का नाम विवाद स्पद है। आचार्य रामचंद्रशुक्ल एवं अधिकतर विद्वान लाला श्रीनिवास दास सन् 1882 में लिखा गया 'परीक्षा गुरु' को हिन्दी का पहला उपन्यास मानते हैं। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार हैं। उन्होंने हिन्दी उपन्यास के रूप और भाव को पूर्ण रूप में बदल दिया है। उन्होंने हिन्दी में सन् 1906 में 'प्रेमा'नामक उपन्यास प्रकाशित किया है। इसके बाद उन्होंने बारह उपन्यास लिखे हैं। सन् 1936 में कृत 'मंगलसूत्र' (अपूर्ण) प्रेमचन्द का अंतिम उपन्यास है। उनके गोदान विश्व साहित्य के महान उपन्यासों में एक है।

SGOU

1.1.1.3 हिन्दी में नाटक

हिन्दी में नाटक का सही विकास उन्नीसवीं सदी में, भारतेंदु युग में हुआ है। आरंभ काल में हिन्दी नाटक संस्कृत नाटकों की परंपरा का विकसित रूप रहा था। भारतेंदु से पूर्व ब्रजभाषा में प्राणचंद चौहान ने रामायण महानाटक शीर्षकनाटक लिखा है। इसके बाद बनारसी दास जैन ने समय सार नाटक, विश्वनाथ सिंह ने आनंद रघुनंदन आदि नाटक लिखे हैं। सन् 1610 से लेकर सन् 1850 तक करीब 14 नाटक लिखे हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र के अनुसार सन् 1873 में बाबू गोपाल चंद्र गिरिधरदास द्वारा रचित नहुष हिन्दी का पहला नाटक माना जाता है।

जयशंकर प्रसाद हिन्दी के युग प्रवर्तक नाटककार है। 'प्रसाद ने विशाखदत्त', 'अजातशत्र', 'जनमेजय का नागयज्ञ', 'एक घूंट', 'कामना', 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी' जैसे अनेक नाटक लिखकर साहित्य में चिर प्रतिष्ठा पायी है।

1.1.1.4 भेंटवार्ता

भेटवार्ता के लिए हिन्दी में 'भेट', 'चर्चा', 'विशेष परिचर्चा', 'साक्षात्कार तथा' 'इण्टरव्यू' शब्द प्रचलित है। 'इण्टरव्यू' का शाब्दिक अर्थ है- 'आन्तरिक दृष्टिकोण'। भेटवार्त्ता के माध्यम से भेंटकर्ता किसी महान व्यक्ति के मन और जीवन में प्रश्नों के झरोखे से झांककर, उसके आन्तरिक दृष्टिकोण को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। हिन्दी में भेटवार्ता का श्रीगणेश करने का श्रेय बनारसीदास चतुर्वेदी को है। इन्होंने 'रत्नाकार' तथा 'प्रेमचन्द' से भेंट करने के उपरान्त उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व के बारे में लिखा है। भेटवार्ता वास्तविक भी होती है तथा काल्पनिक भी हिन्दी में दोनों ही प्रकार की भेटवार्ता लिखी गई है।

1.1.1.5 आलोचना

आलोचना या समीक्षा आधुनिक साहित्यिक विधा है। किसी साहित्यिक कृति या रचना को भली-भाँति पढ़कर उसका मूल्यांकन करने को साहित्य में आलोचना कहते हैं। साहित्य जीवन की व्याख्या है। आलोचना साहित्य की व्याख्या है। आलोचना वास्तव में साहित्य कृति और पाठक के बीच का पुल है। आलोचना करने वाले को आलोचक कहते हैं। आलोचक का कर्तव्य किसी पक्षपात के बिना रचना का मूल्यांकन करना होता है। जिससे रचना की अच्छाई-बुराई से पाठक को सही जानकारी प्राप्त होती हैं।

हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, गुलाबराय, रामविलास शर्मा, नामवर सिंह, नन्ददुलारे वाजपेयी, नगेन्द्र आदि प्रमुख आलोचक हैं।

1.1.1.6 रिपोर्ताज

रिपोर्ताज शब्द का अर्थ होता है सरस और भावात्मक अंकन। रिपोर्ताज को अंग्रेज़ी में Report कहते हैं। किसी परिपाटी, घटना, संस्था आदि की कलात्मक रीति में तैयार करने वाले विवरण को रिपोर्ताज कहते हैं। रिपोर्ताज गद्य की आधुनिक विधा है। हिन्दी में कई महान रिपोर्ताजकार है। धर्मवीरभारती, प्रकाशचन्द्र गुप्त, उपेन्द्रनाथ अश्क, रामनारायण उपाध्याय, विष्णुकान्त शास्त्री, उदयन शर्मा, अमृतराय, निर्मल वर्मा, विष्णु प्रभाकर, प्रभाकर माचवे, अमृतराय आदि रिपोर्ताजकार के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

1.1.1.7 डायरी

डायरी लेखन गद्य साहित्य की एक विशेष विधा है। प्रतिदिन की घटनाएँ तिथि के अनुसार लिखने को डायरी लेखन कहते हैं। प्रतिदिन जीवन में घटित घटनाएँ डायरी की विषय-वस्तु बन जाती हैं। लेखक उसका क्रमिक वर्णन करता है। डायरी लेखन में कल्पना का कोई स्थान नहीं है। दैनंदिन जीवन में जो घटित हो, उसे वैसे ही लिख सकते हैं। तात्पर्य यह है कि अवास्तविक बातों को डायरी में तनिक भी स्थान न दें। गाँधीजी द्वारा लिखी गयी डायरी हिन्दी की सर्वप्रथम प्रौढ़-गंभीर डायरी मानी जाती है। हिन्दी की डायरी लेखन में रामधारी सिंह दिनकर, धीरेन्द्र वर्मा, शमशेर बहादुर सिंह, मोहन राकेश आदि के नाम उल्ले-खनीय हैं।

1.1.1.8 पत्र साहित्य

पत्र को अंग्रेजी में Letter कहते हैं। पत्र-लेखन पूर्ण रूप में वैयक्तिक है। सहजता एवं सरलता पत्र लेखन का सबसे बड़ा गुण होना चाहिए। पत्र के हर शब्द में उसके लेखक का व्यक्तित्व देखने को मिलता है। पत्र आत्म प्रकाशन का

SGOU

महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली साधन है।

पत्र लेखन दो व्यक्तियों के बीच चलते हैं। इसलिए पत्र-लेखक को अपने पत्र पढ़ने वाले को ध्यान में रखकर पत्र लिखना चाहिए। कुछ पत्र समाज एवं व्यक्ति के लिए अत्यंत लाभदायक होता है। गांधीजी द्वारा समय-समय पर लिखे गए पत्र, नेहरु द्वारा अपनी बेटी इंदिरा गांधी को लिखे गये पत्र (पिता के पत्र पुत्री के नाम) आदि साहित्यिक एवं सामाजिक दृष्टि में उच्च स्थान पर विराजते हैं।

Critical Overview / अवलोकन

गद्य को पद्य का विकसित रूप माना जाता है। यह सच है कि मनुष्य के भावों और विचारों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति गद्य से संभव होती है। गद्य अभिव्यक्ति का सबसे शक्तिशाली माध्यम है। साहित्य के विकास के साथ-साथ विविध गद्य विधाएँ भी हिंदी साहित्य केक्षेत्र में विक्सित हो गए। शुक्लोत्तर युग में गद्यसाहित्य का सर्वोच्च विकास हुआ है।

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी में गद्य साहित्य आधुनिक विधा है।
- साधारण बातचीत में प्रयोग करने वाले शब्दार्थ युक्त भाषा गद्य कहलाते हैं।
- गोकुलनाथ कृत चौरासी वैष्णवन की वार्ता ब्रजभाषा की आरंभिक गद्य रचना है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिक काल का नाम गद्य काल घोषित किया है।
- साधारण बातचीत में प्रयोग करने वाले शब्दार्थ युक्त भाषा गद्य कहलाते हैं।
- हिन्दी के गद्य का विकास पाँच कालों में विभक्त है।
- आधुनिक गद्य का पितामह भारतेंदु हरिश्चंद्र है।
- भारतेंदु के कविवचन सुधा, हरिश्चन्द्र मैगजीन एवं हरिश्चंद्र पत्रिका गद्य के विकास का निदान रहा है।
- प्रयाग से 1900 में निकली सरस्वती पत्रिका ने हिन्दी गद्य के विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- द्विवेदी युग से हिन्दी कहानी का सही विकास माना जाता है।
- प्रेमचन्द द्विवेदी युग के महान लेखक है।
- शुक्ल युग हिन्दी गद्य का तृतीया चरण है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कृत चिंतामणि शुक्ल युग की सर्वश्रेष्ठ रचना है।
- कहानी एवं उपन्यास क्षेत्र में प्रेमचंद सम्राट रहा है।
- रामप्रसाद निरंजनी 1741 में कृत भाषायोगवशिष्ट खड़ीबोली के पहला प्रौढ़ गद्य है।

SGOU

- अंग्रेजों ने भाषा-अध्ययन के लिए कोलकत्ता में 10 जुलाई 1800 में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की है।
- गद्य कई प्रकार के होते हैं, जिनमें कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, आलोचना, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, व्यंग्य, यात्रा वृत्तांत, डायरी, आलोचना, भेंटवार्ता आदि मुख्य है।
- इसमें उपन्यास, नाटक, एकांकी, कहानी, निबंध, आलोचना आदि आरंभ काल की गद्य विधाएँ हैं।
- साहित्य के विकास के साथ-साथ समय-समय पर संस्मरण, रेखाचित्र, व्यंग्य, यात्रा वृत्तांत, डायरी, भेंटवार्ता, आत्मकथा, जीवनी, रिपोर्ताज, गद्य काव्य, भेंट, पत्र साहित्य आदि विधाएँ गद्य क्षेत्र में शामिल हो गये।
- व्यंग्य, आत्मकथा, रिपोर्ताज, डायरी, पत्र साहित्य, भेंट वार्ता आदि के विकास द्विवेदी युग एवं शुक्ल युग में हुआ।
- शुक्लोत्तर युग में भेंटवार्ता, विद्रूप लेखन जैसी गद्यविधाएँ विकसित हो गयी।
- उपन्यास, नाटक, एकांकी, कहानी, निबंध और आलोचना जैसी आरंभिक गद्य विधाएँ अपने आप में एक-दूसरे से स्वतंत्र अस्तित्व रखती हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. गद्य से तात्पर्य क्या है?
2. आधुनिक गद्यके पितामह कौन है?
3. किस युग में अधिकांश गद्य विधाएँ विकसित हो गयीं?
4. हिन्दी गद्य के विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली पत्रिका कौन सी है?
5. सरस्वती पत्रिका कब और कहाँ से निकली है?
6. कौन से युग में गद्य साहित्य का सर्वोच्च विकास हुआ है?
7. कहानी एवं उपन्यास क्षेत्र के सम्राट कौन हैं?
8. हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यास के नाम बताइए।
9. हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यास के रचनाकार कौन हैं?
10. किशोरीलाल गोस्वामी द्वारा लिखी इन्दुमति का प्रकाशन कब हुआ?
11. बड़े घर की बेटी कहानी के रचयिता कौन हैं?
12. हिन्दी में नाटक का विकास कब से माना जाता है?
13. हिन्दी के युग प्रवर्तक नाटककार कौन हैं?

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Answers/ उत्तर

1. साधारण बातचीत में प्रयोग करनेवाले शब्दार्थ युक्त भाषा गद्य कहलाते हैं।
2. आधुनिक गद्य का पितामह भारतेंदु हरिश्चंद्र है।
3. शुक्लोत्तर युग में अधिकाँश गद्य विधायें विकसित हो गयीं
4. सरस्वती पत्रिका
5. प्रयाग से 1900
6. शुक्लोत्तर युग में गद्य साहित्य का सर्वोच्च विकास हुआ है।
7. प्रेमचंद कहानी एवं उपन्यास क्षेत्र में सम्राट रहा है।
8. सन् 1882 में लिखा गया परीक्षा गुरु को हिन्दी का पहला उपन्यास माना जाता है।
9. लाला श्रीनिवास दास
10. सन् 1900 में
11. प्रेमचन्द्र
12. हिन्दी में नाटक का सही विकास उन्नीसवीं सदी में, भारतेंदुयुग में हुआ है।
13. जयशंकर प्रसाद हिन्दी के युग प्रवर्तक नाटककार हैं।

Assignments/ प्रदत्त कार्य

1. अपने विश्वविद्यालय के उपकुलपति के साथ एक भेंटवार्ता तैयार कीजिए।
2. हिन्दी गद्य के विकास पर एक समीक्षात्मक निबंध तैयार कीजिए।
3. प्रेमचन्द हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार हैं, क्यों?
4. हिन्दी में कहानी आधुनिक काल की उपज है - समझाईए।
5. कहानी में प्रेमचंद सम्राट रहा है, स्पष्ट कीजिए।
6. हिन्दी के युग प्रवर्तक नाटककार एवं उपन्यासकार 'जयशंकर प्रसाद'।
7. हिन्दी के गद्य के विकास पाँच कालों में विभक्त है, व्यक्त कीजिए।

SGOU

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र।
3. हिन्दी साहित्य उद्‌भव और विकास - हजारीप्रसाद द्विवेदी।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ.कपूर टंडन।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ.नगेन्द्र।
6. हिन्दी साहित्य का समग्र इतिहास - डॉ.रमेशचंद्रशर्मा।
7. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य – हरिशंकर दुबे।

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई : 2
गद्य के अन्य प्रकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- गद्य साहित्य की विविध विधाओं में निबंध, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्त सामान्य निबंध आदि सभी का विशेष परिचय प्राप्त करता है।
- गद्य साहित्य के प्रमुख निबंधकार, आत्मकथाकार, यात्रावृत्तान्त लेखकों और जीवनी लेखकों के स्थान समझता है।
- गद्य साहित्य के प्रमुख निबंध, आत्मकथा, यात्रावृत्तान्त और जीवनी से परिचय प्राप्त करता है।
- गद्य साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक स्थितियों से अवगत होता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

गद्य साहित्य हिन्दी साहित्य की वह विधा है जिसमें भाषा की सरलता, स्पष्टता और सहजता होती है। हिन्दी साहित्य के इस भाग में नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, आलोचना जैसी प्रमुख विधाएँ आती हैं जो साहित्य की विविधता, गहराई और सामाजिक प्रतिबिम्ब को दर्शाती हैं। हिन्दी साहित्य में निबंध, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्त सामान्य निबंध आदि के विकास। जीवनी एक व्यक्ति के बारे में दूसरा लिखता है। वर्तमान हिन्दी निबंध देशातीत एवं कालातीत है। आत्मकथा और संस्मरण मिलती जुलती होकर भी एक स्वतंत्र साहित्य विधा है। जीवनी और आत्मकथा अलग अलग साहित्यिक विधाएँ हैं।

हिन्दी गद्य साहित्य का विकास भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति के साथ हुआ है। नाटक और उपन्यास जैसे विधाओं ने जनता के विचारों को आकार दिया एवं समाज में जागरूकता बढ़ाने का कार्य किया। निबन्ध और आलोचना ने साहित्यिक विमर्श को समृद्ध किया।

SGOU

Keywords / मुख्य बिन्दु

भारतेन्दु, आकर्षक वर्णन, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्तांत

Discussion / चर्चा

1.2.1 हिन्दी में निबंध

निबंध को अंग्रेज़ी में Essay कहते है। निबंध शब्द का अर्थ है सुगठितया अच्छा-सा बंधा। सीमित आकार में किसी एक विषय का वर्णन विशेष संगति या संबंध के साथ करने वाले साहित्य को निबंध कहते हैं। भारतेन्दु को हिन्दी निबंधका जनक माना जाता है।

निबंध मुख्यतः वर्णनात्मक, विचारात्मक, भावात्मक, विवरणात्मक आदि चार रूपों में विभाजित हैं।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

1. वर्णनात्मक निबंध – निबंध में किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, दृश्य आदि का विवेचन करके रसपूर्ण एवं प्रभाव पूर्ण शैली में लिखने वाले निबंध को वर्णनात्मक निबंध कहते हैं।
2. विचारात्मक निबंध – किसी विषय का तर्क युक्त विवेचन, अन्वेषण तथा विश्लेषण करके लिखने वाले निबंध को विचारात्मक निबंध कहते हैं।
3. भावात्मक निबंध -लेखक के मन में पैदा होने वाले भावों और चिंताओं को व्यक्त करने वाले निबंध को भावात्मक निबंध कहते हैं।
4. विवरणात्मक निबंध – सामाजिक और ऐतिहासिक स्थानों, घटनाओं, दृश्यों आदि के रस पूर्ण विवरण के साथ लिखने वाले निबंध को विवरणात्मक निबंध कहते हैं।

1.2.2 जीवनी

जीवनी गद्य की एक सशक्त विधा है। कुछ लोगों की गलत धारणा है कि जीवनी और आत्मकथा एक है। सच में जीवनी और आत्मकथा में अंतर है। जीवनी को अंग्रेज़ी में Biography कहते हैं। आत्मकथा को अंग्रेज़ी में Autobiography कहते हैं। जीवनी एक व्यक्ति के बारे में दूसरा लिखता तो आत्मकथा लेखक अपने आप लिखते हैं। आत्मकथा संस्मरण (memoir) से मिलती जुलती होकर भी एक स्वतंत्र साहित्य विधा है।

1588 में नाभादास कृत भक्तमाल को हिन्दी की प्रथम जीवनी मानी जाती है। इसके बाद समय-समय पर अनेक महत्वपूर्ण जीवनियों की रचना हुई, जिनमें महात्मा गाँधी, नेहरु, सुभाषचंद्र बोस आदि के जीवन से संबंधित जीवनी उल्लेखनीय है। प्रेमचन्द के पुत्र अमृतराय द्वारा प्रेमचन्द के बारे में लिखी गयी कलम का सिपाही, विष्णु प्रभाकर बंगला लेखक शरद चन्द्रचटर्जी के बारे में लिखी गयी आवारा मसीहा, विख्यात लेखक कमलेश्वर के बारे में उनकी पत्नी गायत्री कमलेश्वर द्वारा 2005 में लिखी गयी 'मेरे हम सफर' आदि विशेष उल्लेखनीय जीवनियाँ हैं।

1.2.3 आत्मकथा

आत्मकथा हिन्दी की नव विकसित साहित्य विधा है। हिन्दी की आत्मकथा को अंग्रेज़ी में Autobiography कहते हैं। आत्मकथा वास्तविक जीवनपर अधिष्ठित साहित्य है। आत्मकथा का सबसे बड़ा गुण ईमानदारी है। सत्यता उसका मूलाधार है। आत्मकथाकार का मुख्य उद्देश्य अपने मन-मस्तिष्क पर संचित अपने विशेष बातों को समाज को परिचय कराना होता है। पहले कह चुका है कि आत्मकथा किसी व्यक्ति द्वारा अपने आप लिखने वाला साहित्य विधा है।

आचार्य शुक्ल के अनुसार हिन्दी की प्रथम आत्मकथा बनारसीदास जैन द्वारा सन् 1641 में कृत अद्धर्कथानक मानी जाता है। 'इसके बाद गाँधीजी के सत्य के प्रयोग' (1923), 'सुभाषचंद्रबोस' (सन् 1935 में) 'कृत तरुण के स्वप्न', 'श्याम सुंदर दास' (1941), 'कृत मेरी आत्म कहानी', 'हरिभाऊ उपाध्याय' (1946), 'कृत साधना के पथ पर', 'राहुल सांकृत्यायन' (1946), 'कृत मेरी जीवनयात्रा', 'राजेन्द्र प्रसाद' (1947), 'कृत आत्मकथा', 'यशपाल' (1951) कृत सिंहावलोकन आदि उल्लेखनीय है।

1.2.4 यात्रा वृत्तांत

यात्रा वृत्तांत समकालीन साहित्य की नवीन विधा है। यात्रावृत्त या वृत्तांत को अंग्रेजी में Travelogue कहते हैं। इसका प्रारम्भ आधुनिककाल में हुआ है। किसी यात्रा के पश्चात लेखक द्वारा आकर्षक भाषा और शैली में लिखी जाने वाली प्रामाणिक रचना को यात्रावृत्त कहते हैं। यात्रावृत्त में यायावर अपने अनुभवों, सौंदर्यबोधों का प्रकाशन करते हैं।

हिन्दी गद्य के आरंभ काल में भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने कविवचन सुधा पत्रिका में कई यात्रा विवरण लिखे हैं। जिनमें सरयू पार की यात्रा, लखनऊ की यात्रा और हरिद्वार की यात्रा आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

SGOU

बालकृष्ण भट्ट, श्रीमती हरदेवी, भगवानदास वर्मा, स्वामी मंगलानन्द,श्रीधर पाठक, उमा नेहरु, मोहन राकेश, रामधारीसिंह दिनकर, अज्ञेय, देवेन्द्र सत्यार्थी, नगेन्द्र, यशपाल, विनय मोहन शर्मा आदि हिन्दी के प्रमुख यात्रावृत्तांतकार है।

Critical Overview / अवलोकन

निबंध का उद्‌भव और विकास आधुनिक गद्य काल के अन्य साहित्य विधाओं के उद्‌भव और विकास समान हुआ है ।आत्मकथा किसी व्यक्ति द्वारा अपनेआप लिखनेवाला साहित्य विधा है। आत्मकथा और जीवनियाँ दोनों ही विषय के जीवन के संदर्भ को दर्शाती हैं, जिसमें उस समय पर चर्चा की जाती है। जिसमें विषय रहता था वह संस्कृति और स्थान जहाँ वह रहता था, आदि। यात्रावृत्त में यायावर अपने अनुभवों, सौंदर्यबोधों का प्रकाशन करते हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- जीवनी को अंग्रेज़ी में Biography कहते हैं।
- जीवनी एक व्यक्ति के बार में दूसरा लिखता है।
- सन् 1588 में नाभादास कृत भक्तमाल हिन्दी की पहली जीवनी है।
- आवारा मसीहा विष्णु प्रभाकर रचित विख्यात जीवनी है।
- आत्मकथा को अंग्रेज़ी में Autobiography कहते हैं।
- आत्मकथा वास्तविक जीवन पर अधिष्ठित साहित्य है।
- बनारसीदास जैन द्वारा 1641 में कृत अद्धर्कथानक प्रथम आत्मकथा मानी जाती है।
- यात्रावृत्त या यात्रा वृत्तांत को अंग्रेज़ी में Travelogue कहते हैं।
- यात्रा वृत्तांत समकालीन साहित्य की नवीननतम विधाओं में एक है।

SGOU

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निबंध को अंग्रेज़ी में क्या कहते हैं?
2. निबंध शब्द का अर्थ क्या हैं?
3. हिन्दी निबंध का जनक कौन है?
4. चिंतामणि के लेखक कौन है?
5. आत्मकथा की विशेषता क्या है?

6. हिन्दी की प्रथम जीवनी कौन सी है?
7. अंग्रेज़ी के Biography को हिन्दी में क्या कहते हैं?
8. किसी व्यक्ति के जीवन वृत्तांत को क्या कहते हैं?
9. यात्रावृत्त या यात्रा वृत्तांत को अंग्रेजी में क्या कहते हैं?
10. आरंभ काल में भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने किस पत्रिका में कई यात्रा विवरण लिखे हैं?

Answers/ उत्तर

1. निबंध को अंग्रेज़ी में Essay कहते हैं।
2. निबंध शब्द का अर्थ है सुगठित या अच्छा-सा बंधा।
3. भारतेन्दु हिन्दी निबंध का जनक।
4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल
5. आत्मकथा वास्तविक जीवन पर अधिष्ठित साहित्य है।
6. 1588 में नाभादास कृत भक्तमाल को हिन्दी की प्रथम जीवनी मानी जाती है।
7. जीवनी को अंग्रेज़ी में Biography कहते हैं।
8. जीवनी
9. यात्रावृत्त या यात्रा वृत्तांत को अंग्रेजी में Travelogue कहते हैं।
10. आरंभ काल में भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने कविवचन सुधा पत्रिका में कई यात्रा विवरण लिखे हैं।

SGOU

Assignments/ प्रदत्त कार्य

1. किसी यात्रा को लेकर एक यात्रा विवरण तैयार कीजिये।
2. आत्मकथा वास्तविक जीवन पर अधिष्ठित साहित्य है, व्यक्त कीजिए।
3. 'निबंध का उद्‌भव और विकास' विषय पर एक लेख तैयार कीजिए।
4. आपकी मनपसंद जगह को लेकर एक यात्रावृत्त तैयार कीजिए।
5. पढी हुई किसी एक आत्मकथा पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
6. यात्रावृत्त की विशेषता और उसकी विशिष्टता पर एक पर्चा तैयार कीजिए।
7. अपनी मनपसंद एक जीवनी पर टिप्पणी तैयार कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य। रामचन्द्र शुक्ल।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र।
3. हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास - हजारीप्रसाद द्विवेदी।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ.क्रपूर टंडन।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ.नगेन्द्र।
6. हिन्दी साहित्य का समग्र इतिहास - डॉ.रमेशचंद्रशर्मा।
7. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य – हरिशंकर दुबे।

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई : 3

गद्य के अन्य प्रकार -2

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- गद्य साहित्य की विविधविधाओं में संस्मरण, रेखाचित्र, एकांकी व्यंग्य आदि सभी का विशेष परिचय प्राप्त करता है।
- गद्य साहित्य के प्रमुख संस्मरणकार, रेखाचित्रकार, एकांकीकार और व्यंग्यकार से परिचय प्राप्त करता है।
- गद्य साहित्य के प्रमुख संस्मरण, रेखाचित्र, एकांकी और व्यंग्य रचनाओं से परिचय प्राप्त करता है।
- गद्य रचनाओं में चित्रित समस्याओं और उसके समाधान से अवगत होता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भाषा के प्रभावशाली प्रयोग की क्षमता अर्जित करने के लिए गद्य की प्रमुख विधाओं का ज्ञान अपेक्षित है। हिन्दी गद्य साहित्य मात्रा एवं वैविध्य की दृष्टि से पर्याप्त समृद्ध है। हिन्दी साहित्य जगत के उत्कृष्ट साहित्यकारों की रचनाओं का अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में भी उपलब्ध है।

नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, और आलोचना जैसे प्रमुख विधाओं के साथ-साथ जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण आदि विधाओं को भी समझना आवश्यक है। यह साहित्य के विभिन्न पहलुओं को जानने और समझने का अवसर प्रदान करता है। हिन्दी में संस्मरण, रेखाचित्र, एकांकी व्यंग्य आदि का विकास तीव्र गति से हुआ है। संस्मरण एक विशेष प्रकार की स्मृति है। रेखाचित्र में लेखक शब्दों द्वारा आकर्षक रचना करते हैं। व्यंग्य आधुनिक साहित्य की एक मुख्य विधा है। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी आदि हिन्दी के उल्लेखनीय व्यंग्यकार है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

संस्मरण, एकांकी, रेखाचित्र, आत्मकथ्य, व्यंग्य

Discussion / चर्चा

1.3.1 संस्मरण

संस्मरण को अंग्रेज़ी में Memoirs कहते हैं। संस्मरण सम् + स्मरण, दो शब्दों के योग से बनने वाला शब्द है, जिसका अर्थ होता है - सम्यक स्मरण। इसमें व्यक्ति का महत्व गौण होता है वस्तु की घटना का महत्व मुख्य होता है। किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना का स्मृति के आधार पर कलात्मक साहित्यिक वर्णन को संस्मरण कहते हैं। संस्मरण एक विशेष प्रकार की स्मृति होती है।

हिन्दी के सर्वप्रथम संस्मरण सन् 1929 में पद्मसिंह शर्मा लिखा गया पद्मराग माना जाता हैं। संस्मरण और रेखाचित्र,

SGOU

दोनों में कम अंतर होता है। संस्मरण एक विवरणात्मक साहित्य विधा है तो रेखाचित्र रेखा मात्र या विवरण रहित साहित्य विधा है। संस्मरण और रेखाचित्र के बारे में पद्मसिंह शर्मा का मत उल्लेखनीय है– प्रायः प्रत्येक संस्मरण लेखक रेखाचित्र लेखक भी है और प्रत्येक रेखाचित्र लेखक संस्मरण लेखक भी है।

संस्मरणकार जीवन के विशेष प्रसंगों और अनुभवों का उल्लेख करता है। संस्मरण को अवास्तविक या काल्पनिक न होकर यथार्थ पर अधिष्ठित होना आवश्यक है। संस्मरण मर्मस्पर्शी स्मृति पर अधिष्ठित होना चाहिए।

1.3.2 रेखाचित्र

अंग्रेजी के Sketch को हिन्दी में रेखाचित्र कहते हैं। रेखाचित्र, रेखा और चित्र, दो शब्दों के मेल से बना शब्द है। जिसका अर्थ है रेखाओं द्वारा बनाने वाला चित्र। इसमें लेखक शब्दों द्वारा आकर्षक रचना करते हैं। रेखाचित्र शब्दों द्वारा बनाने वाला होने से इसे शब्द चित्र भी कहते हैं। चित्रकला में रेखा का जो महत्व होता है, वही महत्व शब्द चित्र (रेखाचित्र) में शब्द को होता है।

रेखाचित्र आधुनिक गद्य विधा है। किसी सत्य पर आधारित घटना की वस्तु अथवा व्यक्ति का चित्रात्मक भाषा में करने वाले वर्णन को रेखाचित्र कहते हैं।

रेखाचित्र संस्मरण के सबसे नज़दीक रहने वाली साहित्यविधा है। साहित्य में रेखा चित्रकार शब्दों के माध्यम से व्यक्ति का पूर्ण चित्र उद्घाटित करता है। रेखाचित्र कथात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, डायरी शैली, सम्बोधनात्मक शैली, संवादात्मक शैली के होते हैं।

हिन्दी का पहला रेखाचित्र पद्मसिंह शर्मा कृत पद्मपराग (1929) माना जाता है। इसके पश्चात कई लेखक हिन्दी रेखाचित्र को उत्तरोत्तर विकसित किया है।

1.3.3 एकांकी

एकांकी शब्द का अर्थ है एक अंक वाला (लघु नाटक)। एकांकी को अंग्रेज़ी में One act play कहते हैं। शब्दार्थ के अनुसार एक अंक वाला नाटक है एकांकी। नाटक की अपेक्षा एकांकी आकार में छोटा है। विषय के अनुसार एकांकी को सामाजिक एकांकी, पौराणिक एकांकी, ऐतिहासिक एकांकी, राजनीति से संबंधित एकांकी, चरित्रप्रधान एकांकी, अर्थपूर्ण एकांकी के रूप में विभाजित कर सकते हैं।

1.3.4 हिन्दी में व्यंग्य

व्यंग्य आधुनिक साहित्य की एक मुख्य विधा है। गद्य साहित्य के आरंभ से करीब भारतीय आज़ादी काल तक व्यंग्य को एक स्वतंत्र साहित्य विधा के रूप में माना न था। स्वातंत्रोत्तर काल में हिन्दी में व्यंग्य साहित्य को स्वतंत्र अस्तित्व मिला है।

विद्वानों ने व्यंग्य की परिभाषा अलग-अलग रूप में किया है। सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य को जीवन का साक्षात्कार माना है। नरेन्द्र कोहली ने विसंगति से उत्पन्न आक्रोश को व्यंग्य कहा है। व्यंग्य का अस्तित्व बुराइयों की आलोचना पर अधिष्ठित है। आलोचना जितना तीव्र होता, व्यंग्य का उद्देश्य उतना निकट आता है।

आरंभिक काल में हिन्दी में भारतेंदु हरिश्चंद्र व्यंग्य लेखन का नेतृत्व दे दिया था। स्वतंत्र रूप में न होकर भी उनके अंधेर नगरी में व्यंग्य का अच्छा पुट मिलता है। द्विवेदी युग के प्रमुख व्यंग्यकारों में प्रताप नारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, पांडेय बेच्चन शर्मा उग्र, ठाकुर प्रसाद सिंह, निराला आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। हरिशंकरपर साई, शंकर पुणतांबेकर, नरेंद्र कोहली, गोपाल चतुर्वेदी, विष्णु नागर, प्रेम जन्मेजय, ज्ञान चतुर्वेदी, सूर्यकांत व्यास, शरद जोशी, आलोक पुराणिक, सुरेश आचार्य, ज्ञान चतुर्वेदी, विवेक रंजनश्रीवास्तव आदि हिन्दी के उल्लेखनीय व्यंग्यकार हैं।

SGOU

Critical Overview / अवलोकन

संस्मरण एक विशेष प्रकार की स्मृति होती है। संस्मरणकार जीवन के विशेष प्रसंगों और अनुभवों का उल्लेख करता है। रेखाचित्र संस्मरण के नज़दीक रहने वाला साहित्य विभाग है। रेखाचित्र के लेखक शब्दों द्वारा आकर्षक रचना करते हैं। संस्मरण के लिए भावना तथा अनुभूति का होना जरूरी है। लेकिन रेखाचित्र के लिए इसमे पैनी दृष्टि की जरूरत होती है। संस्मरण और रेखाचित्र दोनों ही हिंदी साहित्य की आधुनिकतम गद्य विधाएँ हैं। दोनों ही चरित्रांकन पर आधारित है लेकिन दोनों को अलग-अलग विधाएँ माना जाए या दोनों की एक ही विधा में अन्तर्मुखी मान लिया जाए, यह विवाद का विशय रहा है। इस प्रकार दोनों विधाओं के स्वरूप-स्पश्टीकरण के लिए संस्मरण और रेखाचित्र दोनों के स्वरूप को समझना जरूरी है।

Recap / पुनरावृत्ति

- अंग्रेजी के Sketch को हिन्दी में रेखाचित्र कहते हैं।
- रेखाचित्र का अर्थ होता है - रेखाओं द्वारा बनाने वाला चित्र।
- हिन्दी का पहला रेखाचित्र पद्मसिंह शर्मा 1929 में रचित पद्मपराग है।
- रामवृक्ष बेनीपुरी हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ रेखा चित्रकार हैं।
- हिन्दी में संस्मरण की वर्तमान स्थिति विचारणीय है।
- रेखाचित्र संस्मरण के सबसे नज़दीक रहने वाला साहित्य विधा है।
- स्वातंत्रोत्तर काल में हिन्दी में व्यंग्य साहित्य को स्वतंत्र अस्तित्व मिला है।
- आरंभिक काल में हिन्दी में भारतेंदु हरिश्चंद्र व्यंग्य लेखन का नेतृत्व दे दिया!

SGOU

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अंग्रेज़ी के Memoirs को हिन्दी में क्या कहते हैं?
2. अंग्रेजी में प्रयुक्त रेखाचित्र के लिए शब्द कौन सा है?
3. रेखाचित्र का अर्थ क्या है?
4. रेखाचित्र किस विधा के नज़दीक रहनेवाला साहित्य विधा है?
5. हिन्दी का पहला रेखाचित्र .... है।
6. कब हिन्दी में व्यंग्य साहित्य को स्वतंत्र अस्तित्व मिला है?
7. आरंभिक काल में हिन्दी मे व्यंग्य लेखन का नेतृत्व किसने दिया था?
8. हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य की परिभाषा किस प्रकार दी है?
9. हरिशंकर परसाई मुख्य रूप में किस विधा के लेखक है?

Answers/ उत्तर

1. संस्मरण को अंग्रेज़ी में Memoirs कहते हैं।
2. अंग्रेजीके Sketch को हिन्दी में रेखाचित्र कहते हैं।
3. रेखाचित्र का अर्थ होता है – रेखाओं द्वारा बनानेवाला चित्र।
4. रेखाचित्र संस्मरण के नज़दीक रहनेवाला साहित्य विभाग है।
5. हिन्दी का पहला रेखाचित्र पद्मसिंहशर्मा द्वारा 1929 में रचित पद्मपराग है।
6. स्वातंत्रोत्तर काल में हिन्दी में व्यंग्य साहित्य को स्वतंत्र अस्तित्व मिला है।
7. आरंभिक काल में हिन्दी में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने व्यंग्य लेखन का नेतृत्व दे दिया था।
8. हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य को जीवन का साक्षात्कार माना है।
9. व्यंग्य

Assignments/ प्रदत्त कार्य

1. संस्मरणकार जीवन के विशेष प्रसंगों और अनुभवों का उल्लेख करता है, स्पष्ट कीजिए।
2. हिन्दी में संस्मरण की वर्तमान स्थिति और गति।
3. टिप्पणी लिखिए – व्यंग्य, रेखाचित्र, जीवनी, संस्मरण।
4. रेखाचित्र संस्मरण के सबसे नज़दीक रहनेवाली साहित्यविधा है, स्पष्ट कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र।
3. हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास - हजारीप्रसाद द्विवेदी।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ.कपूर टंडन।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ.नगेन्द्र।
6. हिन्दी साहित्य का समग्र इतिहास - डॉ.रमेशचंद्रशर्मा।
7. हिन्दी का हास्य – ज्ञान प्रकाश शर्मा।
8. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य – हरिशंकर दुबे।

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

BLOCK - 02

विविध गद्य रूपों का परिचय

SGOU

इकाई : 1
ईदगाह- प्रेमचंद (कहानी)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी के विख्यात कहानीकार एवं उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द ज़ बारे में समझता है।
- प्रेमचन्द के धर्मनिरपेक्ष मानवीय दृष्टिकोण से परिचित होता है।
- ईद जैसे त्योहार उत्पन्न करने वाले भाईचारा भाव से अवगत होता है।
- प्रेमचन्द के धार्मिक समभाव पर विचार करने का अवसर मिल जाता है।
- छात्रों में धन का मूल्य और उसके सदुपयोग के बारे में जागरूकता पैदा करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी साहित्य के मशहूर लेखक, कहानी सम्राट, उपन्यास सम्राट, मुंशी प्रेमचंद की बहु चर्चित, बाल मनोविज्ञान पर आधारित सुंदर कहानी है 'ईदगाह'। इसमें मध्यवर्गीय परिवार की एक छोटे बालक की जीवन पर प्रकाश डाला गया है। बिन माँ बाप के इस छोटे बच्चे ने अपने जीवन से इतना कुछ सीख गया कि वह अपने उम्र से कहीं ज़्यादा समझदारी एवं सहानुभूति दर्शाता है। उसने अपनी ज़िंदगी में जो फैसला ली है, और उस फैसले तक पहूँचने केलिए उसे जिन हालातों ने मजबूर किया है वह हर मध्यवर्गीय परिवार की सच्चाई है। ईदगाह हिन्दी के अनुपम भाव से ओतप्रोत कहानियों में एक माना जाता है।

ईद एक साधारण त्योहार नहीं है। ईद क्षमा, करुणा, दया, शांति, भाईचारा आदि मानवीय भावनाओं को उद्घोषित करने वाले एक महत्वपूर्ण त्योहार माना जाता है। ईद के अवसर पर करोड़ों मुसलमान अपनी असीम आत्मीय अच्छाई प्रदर्शित करते हैं। मुसलमान रमज़ान महीने के तीस दिन उपवास करते हैं। तीस दिन के उपवास के पश्चात ईद आता है। ईद के दिन मुसलमान एक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जिस जगह पर एकत्रित हो कर नमाज अदा करते हैं, उस जगह को ईदगाह कहते हैं। ईद का दिन मुसलमानों केलिए बहुत ही खुशी का अवसर है। नए कपड़े, खिलौने आदि खरीदने, एक दूसरे को तोहफ़े देने, परिवार के सारे सदस्यों का एकसाथ होने का समय। लेकिन इस कहानी का पात्र हमीद नामक इस छोटे से बालक इन सब सुविधाओं से वंचित है। यहाँ तक कि उसके सिर पर माता पिता का साया तक नहीं है। और अपनी इन विकल परिस्थितियों से गुजरकर वह इतना सयाना हो गया है कि पाठक भौंचके रह जाते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

ईद, ईदगाह, त्योहार, प्रेमचंद, बाल मनोवैज्ञानिक, हामिद, अमीना, मनोभाव, समझदार

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Discussion / चर्चा

2.1.1 लेखक परिचय

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 को बनारस के पास लमही नामक गाँव में एक किसान परिवार में हुआ था। नाम रखा गया धनपतराय श्रीवास्तव। पिता का नाम मुंशी अजायबलाल और माता का नाम आनंदी देवी था। किसानी से गुज़ारा न होता था तो पिता ने डाकख़ाने में 20 रुपए पगार पर मुंशी की नौकरी कर ली थी। सात वर्ष के थे तो माता का देहांत हो गया और पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। पंद्रह की आयु में उनका विवाह करा दिया गया और सोलह की आयु में पिता चल बसे।

उनकी आरंभिक शिक्षा गाँव के मदरसे में हुई। गाँव में रहते थे और हाई स्कूल की पढ़ाई करने शहर जाते थे। दसवीं पास कर कॉलेज में दाख़िला लिया। 18 रुपए मासिक पर अध्यापक की नौकरी करने लगे। 1904 में उर्दू और हिन्दी में विशेष वर्नाकुलर परीक्षा पास कर ली थी। स्वाध्याय से हिन्दी, उर्दू, फ़ारसी, अँग्रेज़ी का ज्ञान भी बढ़ा रहे थे। फ़रवरी 1921 में गाँधी जी इलाहबाद आए। वह देश से असहयोग की माँग कर रहे थे। प्रेमचंद भी सरकारी नौकरी छोड़ आंदोलन में शरीक़ हो गए। पहले वह महावीर प्रसाद पोद्दार के साथ चर्खे का प्रचार करते रहे, फिर कई निजी संस्थानों में अध्यापक रहे। इस बीच पत्रकारिता भी शुरू कर दी थी। पहले 'मर्यादा' पत्रिका का संपादन किया, फिर सरस्वती प्रेस की स्थापना से संलग्न हुए। इसी सरस्वती प्रेस से आगे 'हंस' और 'जागरण' का प्रकाशन किया। आगे उन्होंने गंगा पुस्तक माला के साहित्यिक सलाहकार, 'माधुरी' पत्रिका के संपादक और हिंदुस्तानी अकादेमी के काउंसिल सदस्य के रूप में भी योगदान दिया। वह प्रगतिशील लेखक संघ के पहले अध्यक्ष भी रहे थे।

प्रेमचंद ने अपना साहित्यिक सफ़र एक उपन्यासकार और आलोचक की हैसियत से शुरू किया था। उनका पहला उपन्यास 1901 में प्रकाशित हुआ और दूसरा 1904 में। वह तब उर्दू में लिखते थे और उनका नाम था नवाब राय। उन्होंने 1907 से कहानियाँ लिखना भी शुरू कर दिया था। वे आरंभिक कहानियाँ उस ज़माने की मशहूर पत्रिका 'ज़माना' में प्रकाशित हुईं। उनका पहला कहानी-संग्रह 'सोज़े वतन' तब प्रकाशित हुआ जब प्रथम विश्वयुद्ध की तैयारियाँ ज़ोरों पर थी। इस संग्रह को अँग्रेज़ शासक द्वारा ख़तरे के रूप में देखा गया और लेखक को इसकी पाँच सौ प्रतियों को आग लगा देने के लिए मजबूर किया गया। यहीं से फिर प्रेमचंद ने नवाबराय नाम छोड़कर प्रेमचंद नाम से लिखना शुरू किया। उन्हें यह नाम उर्दू लेखक और संपादक दयानारायण निगम ने दिया था।

उन्हें हिन्दी समाज में प्रेमपूर्वक 'कहानी सम्राट' पुकारा जाता है। उनके कहानी समाज के विभिन्न पक्षों को उद्‌घाटित करते हैं। हिन्दी कहानी के इतिहास में उनके समय को 'प्रेमचंद युग' के नाम से जाना जाता है। वह हिन्दी के अत्यंत लोकप्रिय कहानीकार हैं। जयशंकर प्रसाद के साथ वह हिन्दी कहानी की विकास यात्रा में एक युग का निर्माण करते हैं। उन्होंने उद्देश्यपरक कहानियाँ लिखी हैं जहाँ जीवन की सच्चाई को भाषा की सहजता-सरलता में प्रकट किया है। लेखन के आरंभिक दौर में उन्होंने टैगोर की कहानियों का भी अनुवाद किया था।

एक संपादक और पत्रकार के रूप में उन्होंने समय और समाज के मसलों पर गंभीर टिप्पणियों के रूप में योगदान किया। प्रेमचंद की रचनाओं का देश-विदेश की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया गया है। उनकी रचनाओं पर फ़िल्म, टीवी सीरीज़ का निर्माण हुआ है और उनके नाट्य-मंचन किए गए हैं।

2.1.1.1 प्रमुख कृतियाँ

उपन्यास : सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, प्रतिज्ञा, गबन, कर्मभूमि, गोदान, मंगलसूत्र (अपूर्ण)।

कहानी-संग्रह : सप्तसरोज, नवनिधि, समरयात्रा, मानसरोवर (आठ खंडों में प्रकाशित)।

चर्चित कहानियाँ : दो बैलों की कथा, ईदगाह, ठाकुर का कुआँ, पूस की रात, कफ़न, बूढ़ी काकी, पंच परमेश्वर, दो बैलों की कथा, बड़े घर की बेटी, नमक का दारोग़ा, कर्मों का फल, बलिदान, शतरंज के खिलाड़ी।

SGOU

नाटक : संग्राम, कर्बला, प्रेम की वेदी।

2.1.2 ईदगाह

ईदगाह मनोवैज्ञानिक कहानी है। इसका प्रकाशन चाँद नामक पत्रिका के 1933 अगस्त अंक में हुई है। इसकी पूरी कथा 'ईद' से मिल जुलकर होती है। लगता है कि इसका वातावरण प्रेमचन्द ने गोरखपुर के दरगाह मुबारक खां शहीद मस्जिद के आसपास को उठा लिया है। इस मस्जिद के निकट एक ईदगाह मैदान है। गोरखपुर के अध्यापन के दौरान प्रेमचन्द इस ईदगाह के समीप के एक छोटे मकान पर रहते थे। ईद के अवसर इस ईदगाह के मैदान में मेले होते हैं। प्रेमचन्द कई बार उस मेले में भाग लिया था। ईद में मिले तीन पैसे से खिलौने के बदले अपनी दादी के लिए लोहे का चिमटा खरीदने वाला हामिद को प्रेमचन्द इधर देखा होगा। अथवा इस कहानी की पृष्ठभूमि के रूप में प्रेमचन्द ने अपनी परिचित जगह और पात्रों को ढूँढ लिया है।

रमजान तीस के बाद आज ईद आयी हैं। ईद के आगमन में गाँव भर खुशी उठते हैं। सभी मुसलमान पुरुष ईदगाह जाने की तैयारी में लगे हुए हैं। लड़कों में ईदगाह जाने की सबसे ज्यादा खुशी है। हामिद माता-पिता विहीन चार-पाँच साल का लड़का है। उनके पिता आबिद और माता पहले मर चुके थे। वह अपनी बूढ़ी दादी अमीना के साथ छोटे घर पर रहते हैं। हामिद अपनी दादी अमीना से ईदगाह जाने का हठ कर रहा है।

गाँव से ईदगाह के लिए तीन कोस (कोस दूरी नापने की एक पुराना मापदंड है। एक कोस = 1.60934 किलो मीटर है।) पैदल चलना है। गाँव के बच्चे अपने पिता के हाथ पकड़ कर नगर के ईदगाह जाते हैं। किंतु हामिद को यह कैसे संभव? हामिद दादी अमीना की गोद में सोने वाला है। अमीना निर्धन है। वह कहीं छोटी-छोटी सिलाई वगैरह करके पेट के लिए कमाई करती हैं।

हामिद अमीना की आँखों के तारे हैं। थोड़ी देर भी एक-दूसरे को अलग रहना दोनों को संभव नहीं है। अमीना को मालूम है हामिद को नया कपड़ा और नया जूता नहीं हैं। उसकी टोपी पुरानी है। सारे बच्चे नये कपड़े और जूते पहन कर बड़ी खुशी में ईदगाह जाने को प्रस्तुत है। नये कपड़े और जूते न होकर भी हामिद बड़ा प्रसन्न है। उनकी प्रसन्नता ईदगाह जाने के कारण हैं।

अमीना इस पर दुखी है कि अपने बच्चे जूते के बिना अकेले तीन कोस पैदल चलकर कैसे ईदगाह जाएगा? उन्हें घर पर सेवैये बनाना है। नहीं तो हामिद को ले कर वह भी जाती। हामिद दादी से वादा करता है कि डरना मत, मैं नमाज पूरा कर सबसे पहले लौटूंगा।

हामिद अपने मित्र मोहसिन, महमूद, सम्मी, नूरे आदि के साथ ईदगाह के लिए जाते हैं। रास्ते में बच्चे भूतों-प्रेतों के बारे में चर्चा करते हैं। बच्चों में किसी के पास बारह पैसे हैं, किसी के पास पन्द्रह है। हामिद के पास केवल तीन पैसे हैं, जो दादी अमीना कई दिनों से इक्कट्ठा कर उन्हें दिये थे। कम पैसा होकर भी दादी की उदारता पर उन्हें गर्व है।

इमली की घनी छाया के नीचे सजाये ईदगाह में बहुत भीड़ है। पहले आने से पहली पंक्ति में स्थान पाती है। नमाज में लाखों लोग पंक्तिबद्ध होकर एक साथ खड़े हो जाते हैं और एक साथ सिर झुकाते हैं। भक्त एक साथ घुटनों के बल पर बैठ जाते हैं। ईदगाह की सम भावना हामिद को अत्यन्त अपूर्व और अद्‌भुत लग रहा है।

नमाज समाप्त होने पर लोग गले मिलकर स्नेह देते-लेते हैं। ईदगाह के निकट मेले चल रहे हैं। बच्चे मेले पर जाकर झूले में झूलकर और अन्य प्रकार आनन्द पा लेते हैं। मोहसिन, महमूद आदि बच्चे घोड़ों और ऊँटों पर चढ़ कर मज़ा लेते हैं। हामिद अपना तीन पैसा ऐसे अनावश्यक खर्च करना नहीं चाहते हैं। हामिद दूर खड़ा रहता है। हामिद को छोड़कर बाकी बच्चे खिलौने और मिठाइयाँ खरीद कर खाते हैं। तब हामिद को थोडी निराशा एवं दुख लगता है। क्योंकि सारे बच्चे मिठाई खाते समय किसी ने भी उसे एक भी मिठाई नहीं दी। तब हामिद के मन में अपने मित्रों के प्रति नारज़गी पैदा होता है।

हामिद अपने तीन पैसे से कोई उपकारी काम करना चाहते हैं। वह एक दुकान की ओर जाता है और एक लोहे का चिमटा उठाकर उसका दाम पूछता है। दुकानदार चिमटे का छः पैसा बताता है। अंत में वह तीन पैसे में

SGOU

चिमटा खरीद लेता है। हामिद अपने चिमटा सिपाही के बंदूक के समान कंधे पर रख देता है।

ग्यारह बजे में सब लोग ईदगाह से गाँव लौटते हैं। रास्ते में बच्चे हामिद को विजेता कहते हैं। क्योंकि बाकी सभी बच्चे मिट्टी की छोटे-बडे खिलौना खरीदे हैं। हामिद उसे अनुपयोगी चीज साबित करते हैं। अर्थात हामिद चिमटा खरीदकर सभी के आगे नायक बन जाते हैं। हामिद का भरोसा था कि उसका चिमटा देखकर दादी अमीना खुश हो जायेगी।

ईदगाह से घर लौटते-लौटते बच्चों की मिट्टी की खिलौने एक-एक होकर गिरकर टूट पड़े। लोहे के होने से हामिद के चिमटे की कोई हानि नहीं होती। हामिद के हाथ पर चिमटा देखते ही अमीना के भाव बदल जाते हैं। वह बडे गुस्से से पूछती हैं कि तुम्हें खरीदने को और कोई चीज़ नहीं मिला? बाकी बच्चे खिलौना खरीदकर या मिठाई खाकर मज़े किए हैं। तुमने अन्य बच्चों की तरह खाया-पिया क्यों नहीं? दादी अमीना के सम्मुख हामिद ने अपराधी भाव से कहा – तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे लिया। यह सुनते ही अमीना का क्रोध स्नेह में बदल जाता है। हामिद के असीमित स्नेह के आगे अमीना का मन गदगद हो जाता है। वह आँसू बहाते हुए हामिद को आलिंगन कर दुआएँ देती हैं।

ईदगाह प्रेमचन्द की बालक-मनोविज्ञान पर आधारित प्रतिनिधि कहानी है। इसमें ईद के त्योहार के आधार पर अभाव ग्रस्त ग्रामीण मुस्लिम परिवार का चित्रण किया गया है। अभाव ग्रस्त बालक बचपन में ही बडों के समान समझदार हो जाता है। कहानी में नायक हामिद का चरित्र इसका उदाहरण है। हामिद के चिमटे के माध्यम से कहानीकार ने श्रम का महत्व एवं सौंदर्य का भी उद्घाटन किया है।

Critical Overview / अवलोकन

ईदगाह की पूरी कहानी हामिद के चरित्र के इर्द-गिर्द घूमती-फिरती हैं। हामिद एक उज्ज्वल चरित्र है। वह एक विशेष स्वभाववाला बालक है। उसमें बालक सुलभ निष्कलंकता, आशा, आकांक्षा, जिज्ञासा, बड़ों के प्रति आदर-सम्मान भाव, समझदारी आदि सभी गुण विद्यमान हैं। हामिद की अपनी इच्छाएँ हैं, लेकिन वह उसे मन पर दबा देता है।

हामिद मात्र एक बच्चा नहीं है, वह एक उज्ज्वल चरित्र है। उसके माता-पिता नहीं हैं। बूढ़ी दादी अमीना ही उसकी एकमात्र अभिभावक है। वह अनपढ़ ग्रामीण औरत है। अशिक्षित होकर भी अमीना का व्यवहार शिक्षित से उच्चतर है। तात्पर्य यह है कि हामिद के माता-पिता की मृत्यु की खबर अमीना छिपा रखती है। यहाँ कहानीकार ने मनोवैज्ञानिक शैली अपनायी है। हामिद और अमीना यहाँ के करोड़ों निस्सहाय-निरालंबों का प्रतिनिधित्व करती है।

Recap / पुनरावृत्ति

- ईद ग्रामीण परिवेश में।
- ईदगाह की सजावट।
- ईद का मुख्य संदेशा – आत्मसमर्पण तथा भाईचारा।
- हामिद का विवेक और समझदारी।
- माता-पिता हीन बच्चे की मनोदशा।

- विवेक और सामर्थ्य आयु के अनुसार नहीं बनते हैं।
- हामिद चिमटा खरीदकर व्यक्त करने वाली सच्चाई – पैसा का सदुपयोग।
- कहानी में मनोविज्ञान का प्रयोग।
- ईदगाह कहानी की अच्छाई-बुराई।
- परंपरागत त्योहार – अपनी दृष्टि में।
- प्रेमचन्द का आदर्शोन्मुख-यथार्थवाद।
- प्रेमचन्द का सामाजिक दृष्टिकोण।
- प्रेमचन्द की धर्मनिरपेक्ष भावना।
- ईदगाह कहानी की भाषा-शैली।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ईदगाह कहानी के रचनाकार कौन हैं?
2. प्रेमचन्द का जन्म कहाँ हुआ था?
3. प्रेमचन्द का वास्तविक नाम क्या है?
4. प्रेमचन्द की मातृभाषा क्या थी?
5. ईदगाह का प्रकाशन कब हुआ?
6. ईदगाह का नायक पात्र कौन है?
7. ईदगाह किस शैली की कहानी है?
8. दुकानदार ने हामिद को पहली बार चिमटे की कीमत कितने बताई थी?
9. हामिद ने चिमटा कितने पैसे में खरीदा?
10. मेले में जाते समय हामिद के पास कितने पैसे थे?

Answers/ उत्तर

1. मुंशी प्रेमचन्द।
2. लमही नामक गाँव में 31जुलाई 1880 ई, एक साधारण परिवार में हुआ था।
3. धनपत राय।
4. उर्दू।

SGOU

5. 1933

6. बालक हामिद।

7. बालमनोवैज्ञानिक।

8. छः पैसा।

9. तीन पैसा।

10. तीन पैसा।

Assignments/ प्रदत्त कार्य

1. ईदगाह की मनोवैज्ञानिकता पर विचार कीजिए।
2. ईदगाह के आधार पर एक पटकथा तैयार कीजिए।
3. हामिद के चरित्र की मुख्य विशेषताएँ व्यक्त कीजिए।
4. अमीना की स्वभावगत विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।
5. ईदगाह का वर्णन संक्षेप में कीजिए।
6. ईदगाह कहानी की विषय वस्तु क्या है?
7. ईदगाह कहानी के लिए यह शीर्षक उचित है या नहीं? चर्चा कीजिये।
8. ईदगाह कहानी में हामिद का स्थान निर्धारित कीजिए।
9. हामिद के साथ गए बच्चों ने मेले से क्या खरीदा?
10. हामिद ने अपने चिमटे को सबसे बेहतर कैसे साबित किया?

SGOU

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानीः सं. कमलेश्वर।
2. हिन्दी कथा साहित्य एक दृष्टिः सत्पकेतु सांस्कृत।
3. हिन्दी का गद्य साहित्यः डॉय रामचन्द्र तिवारी।
4. परिष्कृत हिन्दी व्याकरणः बद्रिनाथ कपूर।

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई : 2

सदाचार का तावीज़

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचय प्राप्त करता है।
- व्यंग्य साहित्य में हरिशंकर परसाई का स्थान समझता है।
- हरिशंकर परसाई के प्रतिनिधि व्यंग्य ‘सदाचार का तावीज़’ से परिचय प्राप्त करता है।
- भ्रष्टाचार -रिश्वतखोरी जैसे दुराचारों के मूल कारण और निवारण मार्ग समझता है।
- भ्रष्टाचार -रिश्वतखोरी से समाज को बचाने की आवश्यकता पर विचार-विमर्श करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी साहित्य जगत के जानेमाने लेखक एवं सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार है हरिशंकर परसाई जी। उनकी अत्यंत चर्चित रचना है ‘सदाचार का तावीज़’। इसके ज़रिए लेखक समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी जैसे दुराचारों पर करारा प्रहार किया है। व्यंग्य के माध्यम से उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला है। उनकी रचनाओं की यही विशेषता है कि सीधे सीधे कुछ न कहकर व्यंग्य रूप में सबकुछ कह डालता है और उनका व्यंग्य की यह विशेषता है कि उसे जहाँ लगना होता है वहाँ तीर के समान लगता है।

भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी समाज को पतन की ओर लेकर जाता है। जिस देश में भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी की बोलबाला है वहाँ कभी भी नैतिकता एवं न्याय सम्पन्न नहीं हो पाएगा। ऐसे में अन्य अमानवीय घटनाओं का चलन भी हम रोक नहीं पाएँगे।

इस तरह की सामाजिक अन्यायों को मिटाना आज की आवश्यकता है। अगली पीढ़ी केलिए ही सही हमें इन दुराचारों से समाज को मुक्त करना है। और एक आदर्श एवं सच्चे साहित्यकार की यह जिम्मेदारी होती है कि वह जनता को इस तरह की सामाजिक अन्यायों के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाए और इन सब के खिलाफ आवाज़ उठाएँ। परसाई जी इस मकसद पर कामयाब हो चुका है और उनकी अनोखी एवं अलग शैली ने साहित्य की उन्नति का भी माध्यम बना है। उनकी रचनाएँ सीख, शिक्षा भी देता है और पर्याप्त मनोरंजन भी प्रदान करता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

सदाचार का तावीज़, परसाई, गूढ़ार्थ, व्यंग्य, भ्रष्टाचार, बोलचाल की भाषा, मनुष्य के भीतर, अनैतिक, जन-जीवन, संकट, सरकारी कर्मचारी, ईमानदारी, भयानक, वास्तविक जगत, रिश्वतखोरी

SGOU

Discussion / चर्चा

2.2.1 लेखक परिचय

हरिशंकर परसाई हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ व्यंग्यकार है। उनका जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के इटारसी के पास जमानी नामक गाँव में 22 अगस्त 1924 को हुआ था। उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए उत्तीर्ण करके कुछ वर्ष अध्यापक वृत्ति किया। फिर जबलपुर से वसुधा नामक पत्रिका के प्रकाशन और संपादन शुरु किया। किंतु आर्थिक विषमता के कारण पत्रिका उपेक्षित कर पूरा समय साहित्य सृष्टि में सक्रिय रहे।

2.2.1.1 साहित्यिक विशेषता

समाज और व्यक्ति की विसंगतियाँ परसाई के व्यंग्य की विषय-वस्तु रही थी। उन्होंने व्यंग्य को समाज परिष्करण का उत्तम मार्ग समझा है। सामाजिक नैतिकता की सुरक्षा उनके व्यंग्य का लक्ष्य था। उनका व्यंग्य पाठक को जितनी अनुभूति देता था, उससे ज्यादा समाज-विरोधियों को प्रहार देती थी। उनकी भाषा तलवार की जैसी ताकतवर थी।

2.2.1.2 'परसाई की रचनाएँ'

तब की बात और थी, पगडण्डियों का ज़माना, भूत के पाँव पीछे, बेईमानी की परत, हँसते हैं रोते हैं, रानी नागमती की कहानी, सदाचार का तावीज़, तट की खोज, विकलांग श्रद्धा का दौर, जैसे उनके दिन फिरे, शिकायत मुझे भी है, और अन्त में, सुनो भाई साधो आदि परसाई की प्रमुख रचनाएँ हैं। परसाई के विकलांग श्रद्धा का दौर नामक रचना केन्द्र साहित्य अकादमी से पुरस्कृत हैं।

2.2.1.3 परसाई की भाषा-शैली

परसाई की भाषा सहज, सरल, रोचक और सुबोध है। उनकी भाषा में तीखी प्रहार शक्ति है, जो व्यंग्य के लिए अनिवार्य है। उन्होंने तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी शब्दों का उपयोग किया है। उनकी भाषा पर्याप्त लाक्षणिक एवं व्यंजन युक्त है। उनकी शैली विषय के अनुकूल वर्णनात्मक हैं।

विख्यात हास्य-व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की मृत्यु 10 अगस्त 1995 को मध्य प्रदेशके जबलपुर में हुई थी।

2.2.1 'सदाचार का तावीज़' - सारांश

'सदाचार का तावीज़' सुप्रसिद्ध साहित्यकार हरिशंकर परसाई का लिखा हुआ व्यंग्यात्मक लेख है। इसमें परसाई ने व्यक्ति और समाज की दुर्बलताओं पर प्रहार किया हैं। इस व्यंग्य में परसाई भ्रष्टाचार की भयानक व्याप्ति व्यक्त करने के साथ-साथ उसके निवारण का उपाय भी पेश करते हैं। परसाई समझाते हैं कि हमारे समाज में भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी ऊपर से निम्न स्तर तक व्याप्त है। सदाचार का तावीज़ में एक संकीर्ण समस्या का रोचक वर्णन वार्तालाप शैली में हुआ है। इसमें लेखक एक ओर भ्रष्टाचार का फैलाव रेखांकित करता है। दूसरी ओर उसे उन्मूलन करने का उपाय सामने लाता है। अंत में यह साफ करता है कि भ्रष्टाचार तब तक समाप्त नहीं होगा, जब तक सरकारी कर्मचारियों को संतोष जनक वेतन नहीं मिल जाता।

एक कल्पित राज्य है। वहाँ लोग हल्ला मचाता है कि भ्रष्टाचार बहुत फैल गया है। राजा ने दरबारियों से कहा कि प्रजा बहुत हल्ला मचा रहा है कि सब जगह भ्रष्टाचार फैला हुआ है। हमें तो आज तक कहीं नहीं दिखा। तुम लोगों को कहीं दिखा हो तो बताओ। दरबारियों ने राजा से कहा कि भ्रष्टाचार सूक्ष्म है। इसलिए साधारण आँखों से देखा नहीं जा सकता है। हमें भ्रष्टाचार दिखा भी तो नहीं है। क्योंकि हमारी आँखों में आपका ही रूप बसा है।

राज्य के कोने में एक विशेष जाति के लोग रहते हैं। उनके पास एक विशिष्ट प्रकार का अंजन है। वह विशेष काजल आँखों में आँजते तो छोटी से छोटी चीज़ तक देख सकते हैं। दरबारियों के अनुरोध पर राजा ने विशेष जाति के पाँच आदमियों को दरबार पर बुलाया। राजा ने विशेषज्ञ जाति के लोगों से बताया कि हमारे राज्य में भ्रष्टाचार है। पर वह कहाँ है, इसका पता नहीं चलता है। तुम लोग उसका पता लगाओ। अगर मिल जाए तो पकड़ कर हमारे पास ले आओ। अगर बहुत हो तो नमूने के लिए थोड़ा-सा ले आना।

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

कुछ दिनों के बाद विशेषज्ञ राजा के पास उपस्थित हुए। भ्रष्टाचार को लेने के लिए राजा ने उनकी ओर हाथ बढ़ाये। विशेषज्ञों ने कहा कि भ्रष्टाचार सूक्ष्म और अगोचर होने से हाथ की पकड़ में नहीं आता है। उसे देखा नहीं जा सकता है, अनुभव किया जा सकता है। विशेषज्ञों ने स्पष्ट किया कि भ्रष्टाचार सर्वत्र व्याप्त है। वह राज भवन में ही नहीं, राजा के सिंहासन में भी होता है। भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए विशेषज्ञ योजना तैयार करते हैं। विशेषज्ञ लोग भ्रष्टाचार दूर करने की योजना-रिपोर्ट राजा के पास प्रस्तुत करता हैं। रिपोर्ट पढ़कर राजा चिंताग्रस्त हुए। वे विचार करते-करते दिन बीतते रहे। चिंता राजा के स्वास्थ्य को खराब कर देता है। विशेषज्ञों के कारण राजा की नींद उड़ जाती है।

राज्य के कोने के एक गुफा में एक साधु रहता है। राजाज्ञा के अनुसार दरबारियों ने उस साधु को राजा के पास उपस्थित करा दिया, जिस साधु ने मंत्रों से सिद्ध सदाचार का तावीज़ बनाया है। दरबारी कहते हैं कि साधु के तावीज़ बाँधने से दुराचारी एकदम सदाचारी हो जाता है। साधु बताते हैं कि भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में रहता है। ईश्वर जब मनुष्य को जन्म देता है, तब किसी की आत्मा में ईमानदारी भरा देता है और किसी की आत्मा में बेईमानी। आदमी के मन से निकलने वाले ईमान या बेईमानी के स्वर को आत्मा की पुकार कहते हैं। आत्मा की पुकार के अनुसार ही आदमी काम करता है। साधु का बनाया तावीज़ बेईमान को ईमान बना सकता है। अर्थात जिस आदमी की भुजा पर यह बाँधा होगा, वह सदाचारी हो जाएगा।

साधु ने सदाचार का तावीज़ का परीक्षण एक कुत्ते पर किया था। यह तावीज़ गले में बाँध देने से कुत्ता रोटी नहीं चुराता है। क्योंकि तावीज़ से सदाचार का स्वर निकलते हैं। जब किसी की आत्मा से बेईमानी के स्वर निकलने लगते हैं तो इस तावीज़ की शक्ति उसकी आत्मा का गला घोंट देती है।

साधु से बनाये तावीज़ पर राजा प्रभावित हुए। राजा ने कहा कि हम आपसे बहुत आभारी हैं। हमें लाखों नहीं, करोड़ों तावीज़ चाहिए। तब मंत्री राजा को अनुरोध देता है कि साधु बाबा को तावीज़ बनाने का ठेका दे दिया जाए। वे अपनी संघ से तावीज़ बनाकर राज्य को सप्लाई कर देंगे। परिणामतः राजा ने साधु को तावीज़ बनाने का कारखाना खोलने के लिए पाँच करोड़ रुपए की ठेका दिया।

सदाचार का तावीज़ लोगों की भुजा में बाँध गये तो राजा खुश हुए। इसके बाद एक दिन राजा को तावीज़ का काम देखने की उत्सुकता हुई। महीने के दूसरे दिन वह वेश बदलकर एक कार्यालय में गए। इससे एक दिन पहले कर्मचारियों को वेतन मिला था। वेश बदलकर राजा एक कर्मचारी के पास जाकर कोई काम बताकर पाँच रुपए का नोट देने लगे। कर्मचारी ने डाँटते हुए कहा कि भाग जा, घूस लेना पाप है। महीने के अंतिम दिन, इकतीस तारीख को राजा ने उस कर्मचारी के पास जाकर पाँच रुपए का नोट दिखाया, जिसके पास पहले गये थे। देखते ही देखते कर्मचारी ने रुपया लेकर जेब में रखा। राजा ने उस भ्रष्टाचारी कर्मचारी को हाथ से पकड़ लिया और व्यक्त किया कि मैं तुम्हारा राजा हूँ। राजा ने पूछा कि क्या तुम आज सदाचार का तावीज़ बाँधकर नहीं आए हैं? कर्मचारी ने भुजा में तावीज़ दिखा दिया। कर्मचारी की भुजा पर तावीज़ देखकर राजा चकित हुए। राजा ने तावीज़ पर कान लगाया। तब उससे इस प्रकार स्वर निकल रहे कि अरे आज इकतीस है, आज तो ले लें।

सदाचार का तावीज़ एक गूढ़ार्थ प्रधान व्यंग्य रचना है। इसमें देश के चारों ओर दिन-प्रतिदिन, क्षण-प्रतिक्षण फैलने वाले भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य किया गया है। मालूम होता है कि ऊपर की दवा से भ्रष्टाचार का उन्मूलन संभव नहीं हो सकता है। समाज में भ्रष्टाचार तब तक संभव है, जब तक व्यवस्था में यह दुराचार होने का मौका मौजूद हो। भ्रष्टाचार के बारे में घोर भाषण करने से यह दुराचार मिट नहीं सकता है। वैसे भ्रष्टाचार के बारे में वाद-विवाद करने से फायदा नहीं मिलता है। भ्रष्टाचार होने के कारणों को ढूँढकर पूर्ण रूप से निकालने का उपाय किये बिना यह दुराचार हट नहीं जाता है।

भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी मनुष्य के भीतर की नैतिक समस्याएँ हैं। अनैतिक व्यवस्था पर जन्म भर पलनेवालों में नैतिकता की बखान करने से लाभ नहीं मिलता है।

SGOU

नैतिक समाज में पलनेवालों में नैतिकता स्वाभाविक उत्पन्न होती है। भ्रष्टाचार जैसी बुराइयों को दूर करने का सरल उपाय नैतिकता का फैलाव है। नागरिकों में नैतिक मूल्य, सच्चाई, ईमानदारी, सीधे-सादे पैसा कमाने का मनोभाव आदि पैदा कर भ्रष्टाचार जैसी बुराइयों को दूर कर सकता हैं।

Critical Overview / अवलोकन

हिन्दी साहित्य में व्यंग्य आधुनिक विधा है। व्यंग्यसाहित्य में किसी व्यक्ति या समाज की विसंगतियों और विएँबनाओं का रोचक एवं हास्यास्पद वर्णन किया जाता है। भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी मनुष्य के भीतर की नैतिक समस्याएँ हैं। भ्रष्टाचार जैसी बुराइयों को दूर करने का सरल उपाय नैतिकता का फैलाव है। व्यंग्य का मूल उद्देश्य भ्रष्टाचारों या बुराइयों को रोकना है। व्यंग्यकार सदा समाज की सुरक्षा एवं भलाई पर ध्यानमग्न रहता है। व्यंग्यकार कभी भी विसंगतियों पर प्रत्यक्ष आक्रमण नहीं करता है। व्यंग्य लेखक सदा बुराइयों पर परोक्ष रूप में कठोर आक्रमण करते हैं। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल आदि हिन्दी के मशहूर व्यंग्यकार हैं।

नागरिकों में नैतिक मूल्य, सच्चाई, ईमानदारी, सीधे-सादे पैसा कमाने का मनोभाव आदि पैदा कर भ्रष्टाचार जैसी बुराइयों को दूर कर सकता हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- सदाचार का तावीज़ हरिशंकर परसाई कृत व्यंग्य है।
- परसाई का व्यंग्य मात्र मनोरंजन का नहीं है, सामाजिक परिवर्तन का होता है।
- एक संकल्पित राज्य के लोग भ्रष्टाचार पर हल्ला मचाता है।
- राजा ने दरबारियों से भ्रष्टाचार हटाने के उपाय पूछते हैं।
- दरबारी की आँखों में राजा की छवि होने से भ्रष्टाचार नहीं दिखता है।
- पता चलता है कि राज्य के कोने के विशेष जाति के लोगों के पास एक काजल है।
- विशेष जाति के अंजन आँखों में आँजते तो छोटी चीज़ तक देख सकते हैं।
- विशेषज्ञ जाति के पाँच लोगों को राजा के सम्मुख उपस्थित करा देता है।
- विशेषज्ञों ने कहा कि भ्रष्टाचार स्थूल, सूक्ष्म और अगोचर है।
- भ्रष्टाचार को देखा नहीं जा सकता है, अनुभव किया जा सकता है।
- विशेषज्ञों के अनुसार भ्रष्टाचार राज सिंहासन में भी होता है।
- विशेषज्ञ भ्रष्टाचार को दूर करने की योजना-रिपोर्ट राजा के पास प्रस्तुत करता हैं।
- रिपोर्ट पढ़ने के बाद महाराज की नींद तक टूट जाती है।
- राज्य के कोने के गुफा में एक साधु रहता है।
- साधु निर्मित मंत्रों-सिद्ध तावीज़ बाँधने से दुराचारी एकदम सदाचारी हो जाता है।

SGOU

- साधु ने सदाचार का तावीज़ का परीक्षण एक कुत्ते पर किया था।
- तावीज़ गले में बाँध देने के पश्चात कुत्ता रोटी नहीं चुराता है।
- साधु द्वारा बनाये तावीज़ पर राजा प्रभावित हुए।
- राजा, साधु को कारखाना खोलने के लिए पाँच करोड़ रुपए पेशगी देते हैं।
- साधु द्वारा बनाये तावीज़ लोगों के भुजा में बाँध गये तो राजा खुश हुए।
- राजा के मन में तावीज़ का काम देखने की उत्सुकता बढ़ती है।
- एक दिन राजा वेश बदलकर एक कार्यालय पर पहुँचता है।
- राजा कोई काम कहकर कर्मचारी को पाँच रुपए का नोट देता हैं।
- कर्मचारी, घूस लेना पाप कहकर राजा को डाँटता है।
- आगे इकतीस तारीख पर राजा उसी कर्मचारी के पास जाकर पाँच रुपए का नोट दिखाता है। नोट देखते ही कर्मचारी उसे लेकर जेब में रख देता है।
- कर्मचारी की भुजा में तावीज़ देखकर राजा स्तब्ध हुए।
- राजा तावीज़ पर कान लगाता है, तब उससे 'अरे आज इकतीस है, आज तो ले लें' स्वर सुनायी पड़ती है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सदाचार का तावीज़ का रचनाकार कौन है?
2. हरिशंकर परसाई जबलपुर से प्रकाशित पत्रिका का नाम क्या है?
3. हरिशंकर परसाई का साहित्य अकादमी से पुरस्कृत रचना का नाम बताइए।
4. हरिशंकर परसाई की रचनाओं का मुख्य उद्देश्य क्या है?
5. राजा ने भ्रष्टाचार ढूंढ़ने का काम किसे सौंप दिया?
6. साधु ने राजा को कौन-सी वस्तु दिखायी?
7. साधु ने पहले पहल किस पर तावीज़ का प्रयोग किया?
8. साधु ने सदाचार और भ्रष्टाचार का कैसा वर्णन किया?
9. साधु का तावीज़ बनाने के लिए राजा द्वारा कितनी पेशगी दी गयी?
10. महीने के अंतिम दिन तावीज़ से कौन-सा स्वर निकल रहे थे?

SGOU

Answers/ उत्तर

1. हरिशंकर परसाई
2. वसुधा
3. विकलांग श्रद्धा का दौर
4. सामाजिक परिवर्तन
5. दरबारियों को
6. मंत्रों से सिद्ध सदाचार का तावीज़
7. एक कुत्ते पर
8. साधु बताते हैं कि भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में रहता है।
9. पाँच करोड़ रुपए
10. अरे आज इकतीस है, आज तो ले लें।

Assignments/ प्रदत्त कार्य

1. सदाचार का तावीज़ समाज पर व्याप्त भ्रष्टाचार एवं घूस का वास्तविक रूप प्रकट करते हैं – अपना तर्कयुक्त उत्तर दे कर समर्थन कीजिए।
2. भ्रष्टाचार एवं घूस दूर करने का उपाय क्या-क्या हैं?
3. 'रिश्वतखोरी पाप है', इस विषय पर आपका विचार प्रकट कीजिए।
4. सदाचार का तावीज़ व्यंग्य का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
5. भ्रष्टाचार की समस्या का हल कैसे निकालें? इस विषय पर पर्चा लिखिए।
6. सदाचार का तावीज़ का सारांश लिखकर विशेषताएँ व्यक्त कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. संपूर्ण रचनाएँ – हरिशंकर परसाई।
2. हरिशंकर परसाई-संकलित रचनाएँ – श्यामकश्यप।
3. हिन्दी व्यंग्य साहित्य और हरिशंकर परसाई – डॉ.राजकुमार वर्मा।
4. हिन्दी व्यंग्य की धार्मिक पुस्तक – प्रेम जनमेजय।

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई : 3
रज़िया - रामवृक्ष बेनीपूरी (रेखाचित्र)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- विख्यात रेखाचित्रकार रामवृक्ष बेनीपुरी के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचय प्राप्त करता है।
- 'रज़िया' रेखाचित्र के भाव जगत से परिचय प्राप्त करता है।
- मानवता का महत्व धर्म से परे है, इस सत्य से अवगत होता है।
- पवित्र स्नेह के उज्ज्वल मुहूर्तों से अवगत होता है।
- रज़िया के द्वारा मनुष्य सहज आत्मीयता से परिचय प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

रज़िया रामवृक्ष बेनीपुरी कृत 'माटी की मूरतें' नामक ग्रंथ में संकलित रेखाचित्र है। इस रेखाचित्र को हम दो तरह से समझ सकते हैं। एक तो दो व्यक्तियों के बीच की स्वच्छ एवं पवित्र मानव प्रेम और दूसरा दो समुदायों के बीच की धर्मनिरपेक्षता की भावना। यद्यपि यह लेखक का अनुभव है, लेखक की वैयक्तिक जीवन की हिस्सा है फिर भी यह भारतीय समाज की दर्शन कराते हैं।

रज़िया बेनीपुरी के निकट के गाँव की एक मुसलमान चूड़ीहारिन की बेटी है। बेनीपुरी ब्राह्मण धर्मी है। पहली मुलाकात में ही बेनीपुरी के मन में रज़िया के प्रति पवित्र मानव स्नेह का अनूठा भाव पैदा होता है। रज़िया अपनी माँ के साथ दूसरे गाँव से बेनीपुर गाँव पर आती थी। जब-जब रज़िया के माँ चूड़ियों का खाँचे लेकर गाँव-गाँव चलती थी, तब-तब लड़की रज़िया उनके साथ होती थी। वह उसी गाँव में रहती थी, जिस गाँव में उनका जन्म हुआ था, बचपन बितायी थी और जवान हुई थी। वैवाहिक जीवन में वह हसन को पति स्वीकार किया था। रज़िया मरते वक्त तक सपरिवार लेखक के पड़ोसी गाँव में रहती थी। लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी और रज़िया के बीच एक अलग-सा अपनापन था। यह अनूठा आत्मीय स्नेह उनके अंत तक मौजूद रहा था।

यह रेखाचित्र दर्शाते हैं कि किस प्रकार आम जनता की जीवन खुशहाली, साझेदारी एवं धार्मिक सहभागिता में गुज़रता है और किसप्रकार धार्मिक कट्टरता एवं साम्प्रदायिकता की भाव उनकी इन खुशियों को उनसे चीन लेते हैं। राजनीतिक दल, धार्मिक नेताएँ आदि अपनी स्वार्थ लाभ के खातिर स्वच्छ जल समान इनकी पवित्र जीवन में पत्थर फेंक देते हैं और वह हलचल जो इससे शुरू होता है कभी नहीं थमता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

रामवृक्ष बेनीपुरी, मानवीय विचार, रज़िया, मुलाकात, मन, आकर्षण, घर-परिवार, यातना, चूड़िहारिन, निपुणता, धार्मिकता, सांप्रदायिकता

SGOU

Discussion / चर्चा

2.3.1 लेखक परिचय

प्रगतिवादी लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म 23 दिसंबर 1899 को बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर गाँव के एक किसान परिवार में हुआ था। बेनीपुर उनके गाँव का नाम है, उसे उन्होंने अपने नाम के साथ जोड़ दिया है। बेनीपुरी स्वतंत्रता आंदोलन के शक्तिशाली सेनानी रहे थे। उनमें बचपन से ही समाजवादी भावना जोरों पर था। राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने के लिए उन्होंने अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ दी। राष्ट्र सेवा के दौरान उन्हें कई बार जेलों में क्रूरता सहनी पडी थी।

रामवृक्ष बेनीपुरी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, रेखाचित्र, यात्रावृत्त, निबन्ध, संस्मरण आदि विधाओं को समृद्ध कर दिया है। उन्होंने बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना करके राष्ट्रभाषा के प्रति अपनी श्रद्धा-भक्ति अर्पित किया है। उनका पूरा सहित्य बेनीपुरी ग्रन्थावली में संकलित है।

पतितों के देश में नामक उपन्यास, 'चिता के फूल नामक कहानी-संग्रह', 'गेहूँ और गुलाब', 'मशाल – निबंध संग्रह', 'माटी की मूरतें', 'लाल तारा - रेखाचित्र', 'मील के पत्थर नामक संस्मरण', 'कार्ल मार्क्स की जीवनी' आदि उनकी महत्वपूर्ण रचनाओं में कुछ हैं। सन् 1946 में प्रकाशित माटी की मूरतें रेखाचित्र बेनीपुरी को सबसे अधिक ख्याति प्राप्त रचना है। रामवृक्ष बेनीपुरी की मृत्यु 7 सितंबर 1968 को हुई थी।

2.3.2 रज़िया - सारांश

रज़िया अत्यंत रूपवती है। बेनीपुरी के गाँव में भी लड़कियाँ हैं, लेकिन रज़िया का सौंदर्य एवं आकर्षण किसी को न था। बेनीपुरी उसका सौंदर्य चित्रित करते हुए लिखते हैं- 'कानों में चाँदी की बालियाँ, गले में चाँदी का हैकल, हाथों में चाँदी के कंगन और पैरों में चाँदी की गोड़ाँई-भरबाँह की बूटेदार कमीज पहने, काली साड़ी के छोर को गले में लपेटे, गोरे चेहरे पर लटकते हुए कुछ बालों को संभालने में परेशान वह छोटी सी लड़की जो उस दिन मेरे सामने आकर खड़ी हो गई थी...।'

जब लेखक स्कूल पर पढ़ते थे, तब रज़िया से उनकी पहली मुलाकात हुई थी। तब का परिचय दोनों के बढ़ने के अनुसार बढ़ने लगते हैं। दोनों के बीच का स्नेह कभी न कम होता था। दोनों विवाहित होकर अलग-अलग परिवार समेत रहते समय भी दोनों की आत्मीयता पहले जैसी ही थी।

रज़िया चूडीहारिन के पेशे में निपुण थी। उनका विशिष्ट व्यवहार हर ग्रामीण को प्रभावित करता था। रज़िया के पेशे का समर्थन करते हुए लेखक लिखते हैं – चूड़ीहारिन के पेशे के लिए सिर्फ यही नहीं चाहिए कि उसके पास रंग-बिरंगी चूड़ियाँ हों-सस्ती, टिकाऊ, टटके-से-टटके फैशन की। बल्कि यह पेशा चूड़ियों के साथ चूड़ीहारिनों के बनाव-श्रृंगार, रूप-रंग, नाजोअदा भी खोजता है, जो चूड़ी पहननेवालियों को ही नहीं, उनको भी मोह सके जिनकी जेब से चूड़ियों के लिए पैसे निकलते हैं। हिन्दू-मुसलमान भेद बिना गाँव के सारे लोग, रज़िया की चूड़ी के ग्राहक बन गये। लेकिन स्थिति अचानक बदल गयी। भारत के अन्यप्रदेशों के समान बेनीपुर गाँव में भी सांप्रदायिकता जाग उठती हैं। फलतः हिन्दू को हिन्दू व्यापारी, मुसलमान को मुसलमान व्यापारी होने लगे। सांप्रदायिकवादियों ने मनुष्य के मन को हिन्दू एवं मुसलमान के रूप में विभाजित कर उसमें बडी-सी दीवार निर्मित की।

रामवृक्ष बेनीपुरी से रज़िया की अंतिम भेंट तब होती है, जब लेखक चुनाव में उम्मीदवार बनकर उनके गाँव पहुँचे। तब दोनों बुढ़ापे पर चढ़ चुके थे। रज़िया बीमार भी थी। जब लेखक उनके घर के बरामदे में खड़े थे, तब दोनों पुत्र वधुओं की सहायता से रज़िया उनके पास आयी। दोनों बड़ी देर तक अवाक रह गए। आगे परस्पर हालचाल पूछने लगे। जब बेनीपुरी रज़िया से विदा ली, तब उनकी आँखें भरकर बह गयी।

SGOU

Critical Overview / अवलोकन

रामवृक्ष बेनीपुरी हिन्दी के विशिष्ट स्थान पर रहने वाले लेखकों में एक है। उन्होंने रेखाचित्र नामक आधुनिक साहित्य विधा को बहुत ही हृदय स्पर्शी एवं जन प्रिय बना दिया है। रामवृक्ष बेनीपुरी लेखक, संपादक, समाज सेवी होने के साथ-साथ प्रगतिवादी लेखक भी है। माटी की मूरतें बेनीपुरी का सन् 1946 में प्रकाशित रेखाचित्र संग्रह है, जिनमें ग्यारह अपूर्व रेखाचित्र संकलित है। रजिया, माटी की मूरतें ग्रंथ का पहला रेखाचित्र है। समकालीन समाज में कहीं-कहीं धर्म के नाम पर पागलपन चलते समय प्रस्तुत रेखाचित्र का महत्व बढ़ता जा रहा है।

Recap / पुनरावृत्ति

- रज़िया एक ग्रामीण मुस्लिम चूडीहारिन की बेटी है।
- रज़िया बेनीपुरी के पड़ोसी गाँव की रहनेवाली है।
- रज़िया बचपन से ही माँ के पीछे, चूड़ियाँ बेचने को जाती थी।
- परिस्थिति के अनुसार रज़िया के शरीर और मन विकास पाते हैं।
- रामवृक्ष बेनीपुरी और रज़िया की भेंट पहले पहल लेखक के घर पर हुई थी।
- रज़िया नटखट और हंसमुख लड़की है।
- रज़िया चूडीहारिन का स्वतंत्र अस्तित्व पा लेती है।
- वह अपने पेशे में निपुण थी।
- बेनीपुरी नौकरी के लिए गाँव छोड़कर नगर जाने से दोनों की मुलाकात न होती थी।
- रज़िया जवान हुई।
- रज़िया की शादी हसन से हुई।
- रज़िया साधारणतः अपने पति के साथ चूड़ी वगैरह खरीदने को पटना पर जाती थी।
- बेनीपुरी पटना के एक अखबार में संपादक का काम करता था।
- एक बार पटना में बेनीपुरी से रज़िया और हसन की भेंट होती है।
- पटना की मुलाकात में गाँव और नगर की सामाजिक परिवेश के परिवर्तन के बारे में रज़िया, बेनीपुरी से खूब कहती है।
- हिन्दू-मुसलमान सांप्रदायिकता फैलने के बारे में रज़िया आशंकित थी।
- पटना की मुलाकात में रज़िया व्यक्त करती है कि अब हिन्दुओं को हिन्दू दुकान और चूड़िहारिन, मुसलमानों को मुसलमान दुकान और चूड़िहारिन है।
- सांप्रदायिकता के फलस्वरूप धीरे-धीरे रज़िया का परंपरागत पेशा बंद हो जाता है।
- बेनीपुरी और रज़िया को आपस में देखे बिना कई साल बीत गयी।

SGOU

- कई साल बाद जब बेनीपुरी चुनाव में उम्मीदवार बनकर रज़िया के गाँव पहुंचे, तब दोनों की फिर मुलाक़ात होती है।
- रज़िया को बुढ़ापे में बीमारी भी हो गई थी।
- अपनी पुत्रवधुओं के सहारे रज़िया घर के बरामदे में आयी थी।
- बेनीपुरी को पता चलता है कि हसन चल बसे, उनके तीनों लड़कों में पहले दोनों किसी न किसी नौकरी कर परिवार चलाते थे।
- यह अंतिम मुलाक़ात बेनीपुरी और रज़िया, दोनों के मन में कई घटनाओं एवं क्षणों को उद्वेलित करते हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रज़िया किस विधा की रचना है?
2. रज़िया किसकी रचना है?
3. रामवृक्ष को बेनीपुरी उपनाम कैसे मिली?
4. बेनीपुरी का व्यक्तित्व कैसा था?
5. रज़िया रामवृक्ष बेनीपुरी के कौन से ग्रंथ में संकलित रेखाचित्र है?
6. रामवृक्ष बेनीपुरी का निधन कब हुआ?
7. रज़िया की रूपगत विशेषता बताइए।
8. रज़िया की माँ क्या काम करती थी?
9. रज़िया कौन है?
10. रज़िया क्यों आशंकित थी?

SGOU

Answers/ उत्तर

1. रेखाचित्र
2. रामवृक्ष बेनीपुरी
3. बेनीपुर उनके गाँव का नाम है, उसे उन्होंने अपने नाम के साथ जोड़ दिया।
4. बेनीपुरी स्वतंत्रता आंदोलन के शक्तिशाली सेनानी रहे थे। उनमें बचपन से ही समाजवादी भावना जोरों पर थे।
5. माटी की मूरतें

6. 7 सितंबर 1968 को
7. रज़िया नटखट और हंसमुख लड़की है।
8. रज़िया की माँ चूड़ियाँ बेचने को जाती थी।
9. रज़िया एक ग्रामीण मुस्लिम चूडीहारिन की बेटी है।
10. हिन्दू-मुसलमान सांप्रदायिकता फैलने के बारे में रज़िया आशंकित थी।

Assignments/ प्रदत्त कार्य

1. रामवृक्ष बेनीपुरी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक लेख तैयार कीजिए।
2. रज़िया नामक रेखाचित्र का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
3. सारांश देकर समर्थन कीजिए कि रज़िया हिन्दी के इने-गिने श्रेष्ठ रेखाचित्रों में एक है।
4. रज़िया का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. माटी की मूरतें – रामवृक्ष बेनीपुरी।
2. रामवृक्ष बेनीपुरी, एक अद्‌भुत रचनाकार - डॉ.संजीव जैन।

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

BLOCK - 03

हिन्दी कहानी का सामान्य परिचय

SGOU

इकाई : 1
हिन्दी कहानी का विकास

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी कहानी की उत्पत्ति और विकास क्रम को समझ सकेंगे।
- प्रमुख कहानीकारों और उनकी कहानियों की विशेषताओं की पहचान कर पाएंगे।
- प्रेमचंद युग और उसके बाद के कहानी कालों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
- हिन्दी कहानी की सामाजिक, नैतिक और यथार्थवादी दृष्टि को समझेंगे।
- समकालीन कहानी के नए रुझानों और तकनीकी प्रभावों को जान पाएंगे।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी कहानी के उद्भव और विकास का अध्ययन करने से पहले हिन्दी साहित्य का सामान्य ज्ञान होना आवश्यक है। यह ज्ञान कहानी के ऐतिहासिक संदर्भ, साहित्यिक प्रवृत्तियों और भाषा के विकास को समझने में सहायक होता है। इससे यह ज्ञात होता है कि हिन्दी कहानी कैसे आरंभ हुई और समय के साथ किन-किन चरणों से गुजरकर आज के स्वरूप तक पहुँची।

कहानी की बुनियादी विशेषताओं जैसे कथानक, पात्र, संवाद, दृष्टिकोण और भाव-संवेदना की समझ भी अत्यंत आवश्यक है। इन तत्वों की जानकारी से यह स्पष्ट होता है कि किसी कहानी की संरचना और प्रभावशीलता किस प्रकार निर्मित होती है तथा भिन्न-भिन्न कहानीकार अपनी शैली और शिल्प में कैसे विविधता लाते हैं।

इसके अतिरिक्त, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, जैनेंद्र कुमार, यशपाल आदि प्रमुख कहानीकारों की प्रसिद्ध कहानियों से परिचित होना भी उपयोगी है। इससे विभिन्न युगों में हिन्दी कहानी की विषय-वस्तु, शिल्प और दृष्टिकोण में आए परिवर्तन को आसानी से समझा जा सकता है और उसके क्रमिक विकास की रूपरेखा स्पष्ट होती है।

साथ ही, हिन्दी कहानी के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संदर्भों का ज्ञान भी आवश्यक है। औपनिवेशिक काल, स्वतंत्रता आंदोलन और आधुनिक भारतीय समाज में हुए परिवर्तनों की पृष्ठभूमि को समझने से यह ज्ञात होता है कि हिन्दी कहानी ने हर दौर में यथार्थ, संघर्ष और मानवीय संवेदनाओं को किस गहराई से अभिव्यक्त किया है। इस प्रकार, इन पूर्वापेक्षाओं की पूर्ति हिन्दी कहानी के समग्र और गहन अध्ययन के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

हिन्दी कहानी, इंदुमती, प्रेमचंद युग, यथार्थवाद, प्रगतिवाद, नई कहानी आंदोलन, समाज सुधार, मनोवैज्ञानिक कथा, समकालीन कहानी, डिजिटल युग की कहानी।

SGOU

Discussion / चर्चा

3.1.1 हिंदी कहानी का सामान्य परिचय

हिंदी कहानी के विकास की प्रक्रिया में यह प्रश्न लंबे समय से चर्चा का विषय रहा है कि हिंदी की पहली कहानी कौन-सी है और उसका पहला कहानीकार कौन था। इस विषय में विद्वानों के बीच भिन्न-भिन्न मत पाए जाते हैं, इसलिए इसका निश्चित निर्णय करना कठिन है। इन मतभेदों के कारण पाठकों के मन में भी अक्सर भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है। अधिकांश विद्वान आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मत को सर्वाधिक प्रमाणिक मानते हैं। उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में यह स्पष्ट किया है कि किशोरीलाल गोस्वामी की 'इंदुमती' (1900) हिंदी की पहली मौलिक कहानी है। अतः किशोरीलाल गोस्वामी को हिंदी का पहला कहानीकार माना जाता है। हालाँकि कुछ विद्वान इंशाअल्ला ख़ाँ की 'रानी केतकी की कहानी' (1803) को हिंदी की पहली कहानी मानते हैं, परंतु अधिकांश आलोचकों का मत है कि उसमें कहानी के आवश्यक तत्व - जैसे कथानक, चरित्र-चित्रण, यथार्थ और भाव-संवेदना - का अभाव है। इसलिए उसे केवल हिंदी गद्य लेखन का प्रारंभिक रूप माना जाता है, न कि एक पूर्ण विकसित कहानी।

हिंदी कहानी के प्रारंभिक विकास काल को शैशव काल कहा जाता है। इस काल की कहानियाँ अपने विकास के बाल्य रूप में थीं - अर्थात् इनमें कहानी के सभी गुण पूरी तरह विकसित नहीं हुए थे। इस काल की प्रमुख रचनाओं में इंशाअल्ला ख़ाँ की 'रानी केतकी की कहानी', लल्लूलाल की 'प्रेमसागर', और सदल मिश्र की 'नासिकेतोपाख्यान' को विशेष रूप से उल्लेखनीय माना जाता है। इन रचनाओं की प्रमुख विशेषताएँ थी - ये विवरणात्मक और घटना प्रधान थीं, इनका स्वरूप कौतूहल और चमत्कार प्रधान था, कथानक प्रायः स्थूल और कभी-कभी अवास्तविक होता था, भाषा, शैली और शिल्प के स्तर पर ये अभी परिपक्व नहीं थीं, और इनमें बंगला तथा अंग्रेज़ी साहित्य का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।

इन आरंभिक कहानियों ने हिंदी कथा साहित्य के विकास की पहली नींव रखी। यद्यपि ये कहानियाँ पूर्ण रूप से परिपक्व नहीं थीं, फिर भी इन्होंने आने वाले कहानीकारों को प्रेरणा दी और हिंदी कहानी को एक स्वतंत्र विधा के रूप में विकसित होने की दिशा प्रदान की। सारांशतः, अधिकांश विद्वानों के अनुसार किशोरीलाल गोस्वामी की 'इंदुमती (1900) हिंदी की पहली मौलिक कहानी मानी जाती है और उन्हें हिंदी का प्रथम कहानीकार कहा जाता है। वहीं, शैशव कालीन कहानियाँ हिंदी गद्य और कथा लेखन के आरंभिक प्रयासों के रूप में साहित्य के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, क्योंकि इन्हीं के आधार पर आगे चलकर हिंदी कहानी एक सशक्त, यथार्थवादी और कलात्मक विधा के रूप में विकसित हुई।

3.1.1.1 हिंदी कहानी का उद्‌भव और विकास

कहानी मानव अभिव्यक्ति का सबसे प्राचीन और सहज रूप है, जो भाषा के साथ-साथ मानव जीवन के प्रारंभिक चरण से ही अस्तित्व में रही है। जब मनुष्य ने अपने अनुभवों, कल्पनाओं और भावनाओं को शब्दों में ढालना सीखा, तभी कथा-परंपरा का आरंभ हुआ। लोककथाएँ, दंतकथाएँ और मिथक मानव सभ्यता के प्रारंभिक साहित्यिक रूप के रूप में विकसित हुईं। इस प्रकार, कहानी मानव सभ्यता की संवेदनात्मक, रचनात्मक और सांस्कृतिक यात्रा का अनिवार्य हिस्सा रही है।

प्राचीन भारतीय भाषाओं के साहित्य-संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि-में भी कथा-परंपरा की सशक्त उपस्थिति मिलती है। पंचतंत्र, कथासरित्सागर और वेतालपंचविंशति जैसी रचनाएँ इस परंपरा की साक्षी हैं। किंतु आधुनिक रूप में हिंदी कहानी का उद्‌भव बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में हुआ।

'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन (1900 से) और हिंदी कहानी का विकास लगभग समानान्तर घटनाएँ हैं। इसी काल में कहानी को एक स्वतंत्र साहित्यिक विधा के रूप में पहचान मिली। हिंदी कहानी ने समाज, व्यक्ति और मनोविज्ञान के विविध पक्षों को अभिव्यक्त करने का कार्य किया।

हिंदी कहानी का विकासक्रम निम्नलिखित कालखंडों में विभाजित किया जा सकता है -

SGOU

1. प्रेमचंद-पूर्व हिन्दी कहानी (1901 - 1914)
2. प्रेमचंद युग की हिन्दी कहानी (1915 - 1936)
3. प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी (1936 के बाद)

3.1.1.1.1 प्रेमचंद-पूर्व हिन्दी कहानी (1901-1914)

प्रेमचंद-पूर्व हिन्दी कहानी दो प्रमुख चरणों - भारतेन्दुयुग (1868-1902) और द्विवेदीयुग (1903 -1918)- में विकसित हुई। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को हिन्दी गद्य का पितामह कहा जाता है। इस युग में अनेक पत्र-पत्रिकाओं जैसे कविवचन सुधा, हरिश्चंद्र मैगज़ीन, बाला बोधिनी आदि के माध्यम से कहानी लेखन को प्रोत्साहन मिला। इन कहानियों का उद्देश्य उपदेश देना, समाज-सुधार करना और नैतिकता की स्थापना करना था। भारतेन्दु की एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न, गौरीदत्त शर्मा की टका कमानी तथा देवरानी-जेठानी जैसी कहानियाँ इस युग की विशेष उपलब्धियाँ हैं।

द्विवेदीयुग में कहानी का स्वरूप अधिक परिपक्व हुआ। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका के माध्यम से हिन्दी कहानी को नई दिशा दी। इस युग के कहानीकारों ने समाज की अशिक्षा, गरीबी, अंधविश्वास और अन्याय की समस्याओं पर ध्यान केंद्रित किया। मास्टर भगवानदास की 'प्लेग की चुड़ैल', रामचन्द्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय', बंग महिला की 'दुलाईवाली', जयशंकर प्रसाद की 'ग्राम' और चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' इस युग की उल्लेखनीय कहानियाँ हैं। इन रचनाओं में आदर्शवाद और नैतिकता की भावना प्रमुख रही।

इन दोनों युगों में हिन्दी कहानी ने प्रारम्भिक विकास की यात्रा पूरी की और एक सशक्त विधा के रूप में उभरने की तैयारी की। भारतेन्दुयुग ने कहानी के बीज बोए, तो द्विवेदीयुग ने उन्हें रूप प्रदान किया। इसी नींव पर आगे चलकर प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी को यथार्थवादी और मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत कर नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं।

3.1.1.1.2 प्रेमचंद युग की हिन्दी कहानी (1915-1936)

प्रेमचंद युग (1916–1936) हिन्दी कहानी के सर्वांगीण विकास का स्वर्णकाल माना जाता है। इस काल में कहानी एक स्वतंत्र और परिपक्व साहित्यिक विधा के रूप में स्थापित हुई। मुंशी प्रेमचंद का आगमन हिन्दी कहानी के इतिहास की सबसे निर्णायक घटना थी। वे मूलतः उर्दू लेखक थे, परंतु उन्होंने हिन्दी कहानी को नई दिशा और यथार्थ का स्वर प्रदान किया। उन्होंने साहित्य को समाज परिवर्तन का माध्यम बनाया, इसलिए उन्हें 'कलम का सिपाही' कहा गया। प्रेमचंद ने कहानी को समाज और मानवीय संवेदना से जोड़ा तथा जीवन की सच्चाइयों को कथा का केंद्र बनाया।

उनकी कहानियों में किसान, मजदूर, स्त्री और पीड़ित वर्ग का सजीव चित्रण मिलता है। 'पंच परमेश्वर', 'नमक का दरोगा', 'कफन' जैसी रचनाएँ सामाजिक यथार्थ का दर्पण हैं। इनमें करुणा, संघर्ष और मानवीयता की गहरी भावना झलकती है। प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी को विदेशी प्रभाव से मुक्त कर आत्मनिर्भर बनाया और जनता की आवाज़ में परिवर्तित किया। उनके कथा-साहित्य में नैतिकता और आदर्शवाद का यथार्थ से सुंदर संगम हुआ। उन्होंने कहानी को जीवन और समाज से इस प्रकार जोड़ा कि वह केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज सुधार का साधन बन गई।

इस युग में जयशंकर प्रसाद, सुदर्शन, जैनेंद्र कुमार और भगवतीप्रसाद वाजपेयी जैसे लेखकों ने प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढ़ाया। प्रसाद की कहानियों में काव्यात्मकता और सांस्कृतिक चेतना का सुंदर मेल मिलता है, जबकि जैनेंद्र और सुदर्शन ने मनोवैज्ञानिक गहराई और नैतिक दृष्टि से कहानी को समृद्ध किया। इस युग की कहानियों में आदर्शवाद, गांधीवाद और यथार्थवाद की स्पष्ट झलक मिलती है। इनमें सामाजिक न्याय, स्त्री समानता, राष्ट्रभक्ति और मानवीय करुणा का भाव प्रमुख रूप से दिखाई देता है। संक्षेप में, प्रेमचंद युग ने हिन्दी कहानी को जनजीवन का सच्चा प्रतिबिंब बना दिया।

3.1.1.1.3 प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी (1936 के बाद)

हिन्दी कहानी हिन्दी साहित्य की सबसे सशक्त और लोकप्रिय विधा है, जो समय और समाज के साथ निरंतर विकसित होती रही है। यह केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवेदना और जीवन-संघर्ष की अभिव्यक्ति का साधन है। प्रगतिवादी युग से लेकर समकालीन दौर तक हिन्दी कहानी ने समाज के बदलते रूप, व्यक्ति की जटिलताओं और मानवीय मूल्यों के संघर्ष को गहराई से प्रस्तुत किया है। आज डिजिटल

SGOU

युग में यह नई तकनीक और माध्यमों के सहारे और भी प्रभावशाली रूप में सामने आ रही है।

प्रगतिवादी युग हिन्दी कहानी के विकास का वह चरण था जब साहित्य को समाज परिवर्तन का सशक्त माध्यम माना गया। इस दौर के लेखकों ने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक यथार्थ को कथा का केंद्र बनाया। इन कहानियों में शोषण, गरीबी, अन्याय और वर्ग-संघर्ष के खिलाफ मुखर स्वर सुनाई देता है। यशपाल, उपेन्द्रनाथ अश्क, विष्णु प्रभाकर, अमृतलाल नागर और पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' जैसे रचनाकारों ने इस दिशा में उल्लेखनीय योगदान दिया। इन कहानियों का उद्देश्य समाज में समानता, न्याय और मानवीयता की भावना को स्थापित करना था। इसके बाद हिन्दी कहानी मनोवैज्ञानिक दिशा में मुड़ी, जहाँ बाहरी घटनाओं की बजाय मनुष्य के अंतर्मन और संवेदनाओं को केंद्र में रखा गया। जैनेंद्र कुमार, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय और भगवतीचरण वर्मा ने व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक द्वंद्व, एकाकीपन और आत्म-संघर्ष को अपनी कहानियों में रूपायित किया। इस प्रवृत्ति ने हिन्दी कहानी को आत्मविश्लेषण और संवेदनशीलता का नया आयाम दिया।

स्वातंत्र्योत्तर काल में हिन्दी कहानी ने एक नई चेतना और दृष्टि प्राप्त की। 1947 के बाद स्वतंत्र भारत के समाज में नवजीवन और नई आकांक्षाएँ उभरीं। इसी पृष्ठभूमि में 'नई कहानी आंदोलन' का जन्म हुआ, जिसके प्रमुख लेखक राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश और कमलेश्वर थे। इन लेखकों ने व्यक्ति की अस्तित्वगत पीड़ा, संबंधों की जटिलता और आधुनिक जीवन के संकटों को कहानी का विषय बनाया। नई कहानी आंदोलन का उद्देश्य था समकालीन यथार्थ को गहराई से उजागर करना। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी केवल नई कहानी तक सीमित नहीं रही, बल्कि सचेतन, अकहानी, सहज, सक्रिय, जनवादी और समान्तर जैसी धाराएँ भी उभरीं। इन धाराओं ने कहानी की विषयवस्तु, शिल्प और दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन किए। कहानीकारों ने समाज के बदलते चेहरे और व्यक्ति के मनोविज्ञान को नए रूप में प्रस्तुत किया।

इस युग में भीष्म साहनी, धर्मवीर भारती, फणीश्वरनाथ रेणु, अमरकांत, निर्मल वर्मा, मन्नू भंडारी और कृष्णा सोबती जैसे लेखकों ने हिन्दी कहानी को नई ऊँचाइयाँ दीं। बाद के दौर में ममता कालिया, ज्ञानरंजन, दूधनाथ सिंह और श्रीकांत वर्मा जैसे लेखकों ने कहानी को जनजीवन और सामाजिक यथार्थ से जोड़ा। समकालीन कहानी ने राजनीति, अर्थव्यवस्था, स्त्री, दलित और हाशिये के समाजों को कथा के केंद्र में लाकर साहित्य में नई चेतना भरी। आज की कहानी डिजिटल युग में पहुँचकर ब्लॉग, ई-पत्रिकाओं, पॉडकास्ट और सोशल मीडिया के माध्यम से और भी व्यापक हुई है। अब यह मुद्रित शब्दों तक सीमित नहीं, बल्कि दृश्य और श्रव्य रूपों में भी जीवंत है। समकालीन हिन्दी कहानी आधुनिक जीवन की जटिलताओं, मानवीय संबंधों की विडंबनाओं और अस्मिता की खोज को गहराई से व्यक्त करती है। इस प्रकार, यह कहानी परंपरा और आधुनिकता के बीच संवाद स्थापित करती है। हिन्दी कहानी की यह निरंतर विकसित होती धारा आज के यथार्थ को सबसे सशक्त और संवेदनशील रूप में प्रस्तुत करती है।

Critical Overview / अवलोकन

हिन्दी कहानी का इतिहास वास्तव में भारतीय समाज, संस्कृति और मानवीय चेतना के विकास का इतिहास है। आरंभिक शैशव काल से लेकर प्रेमचंद के यथार्थवादी युग, प्रगतिवाद और नई कहानी आंदोलन से गुजरती हुई यह विधा आज समकालीन दौर में नये रूप और अर्थ ग्रहण कर चुकी है। हर युग की कहानी ने अपने समय के सामाजिक, आर्थिक और नैतिक प्रश्नों को गहराई से समझा और अभिव्यक्त किया है। प्रेमचंद ने कहानी को समाज का दर्पण बनाया, प्रगतिवादियों ने उसे परिवर्तन का साधन बनाया, नई कहानीकारों ने व्यक्ति के अंतर्द्वन्द्व और अस्तित्व की पीड़ा को स्वर दिया, और समकालीन लेखकों ने आधुनिक जीवन की जटिलताओं को संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया।

SGOU

आज डिजिटल युग में हिन्दी कहानी नए माध्यमों के जरिये और अधिक सशक्त और जीवंत बन रही है। यह अब केवल पृष्ठों तक सीमित नहीं, बल्कि जनमानस की अभिव्यक्ति का गतिशील स्वरूप बन चुकी है। इस प्रकार, हिन्दी कहानी ने समय के साथ स्वयं को निरंतर परिवर्तित करते हुए अपने मूल उद्देश्य - मानव जीवन और समाज के यथार्थ का कलात्मक चित्रण - को सदैव बनाए रखा है। यही उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि और साहित्यिक शक्ति है।

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी कहानी को समझने के लिए हिन्दी साहित्य का सामान्य ज्ञान आवश्यक है।
- कहानी के विकासक्रम को जानने से उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि स्पष्ट होती है।
- कथानक, पात्र, संवाद, दृष्टिकोण और भाव-संवेदना जैसे तत्वों की समझ ज़रूरी है।
- प्रमुख कहानीकारों जैसे प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, जैनेंद्र कुमार और यशपाल की कहानियाँ पढ़नी चाहिए।
- हर युग की कहानियों में विषय और शैली के बदलाव को पहचानना महत्वपूर्ण है।
- सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों का ज्ञान कहानी को गहराई से समझने में मदद करता है।
- औपनिवेशिक काल और स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव हिन्दी कहानी पर देखा जा सकता है।
- आधुनिक समाज में आए परिवर्तनों ने कहानी की विषयवस्तु को व्यापक बनाया।
- हिन्दी कहानी ने हर दौर में यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया है।
- इन सभी पहलुओं के अध्ययन से हिन्दी कहानी का क्रमिक विकास और साहित्यिक महत्त्व समझा जा सकता है।

SGOU

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्दी की पहली मौलिक कहानी किसे माना जाता है?
2. 'इंदुमती' कहानी के लेखक कौन हैं?
3. प्रेमचंद को किस उपनाम से जाना जाता है?
4. 'नई कहानी आंदोलन' से जुड़े प्रमुख लेखक कौन थे?
5. प्रगतिवादी कहानी का मुख्य उद्देश्य क्या था?
6. मनोवैज्ञानिक कहानी का केंद्र क्या होता है?
7. हिन्दी कहानी का स्वर्णकाल किस युग को कहा जाता है?
8. समकालीन हिन्दी कहानी पर सबसे अधिक प्रभाव किसका है?

Answers/ उत्तर

1. इंदुमती
2. किशोरीलाल गोस्वामी
3. कलम का सिपाही
4. राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर
5. समाज सुधार और समानता स्थापित करना
6. व्यक्ति का अंतर्मन और संवेदनाएँ
7. प्रेमचंद युग
8. डिजिटल माध्यमों का

Assignments/ प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी कहानी के विकास के प्रमुख चरणों का संक्षिप्त विवरण लिखिए।
2. प्रेमचंद युग की कहानियों की मुख्य विशेषताएँ समझाइए।
3. प्रगतिवादी युग की हिन्दी कहानियों के विषय और उद्देश्य बताइए।
4. 'नई कहानी आंदोलन' का हिन्दी साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा, स्पष्ट कीजिए।
5. समकालीन हिन्दी कहानी की प्रमुख प्रवृत्तियों का वर्णन कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. कहानी की कहानी - डॉ.इन्द्ननाथमदान।
2. कथाकार अज्ञेय - डॉ.चंद्रकांत।
3. हिन्दी कहानी का विकास - डॉ.मधुरेश।
4. नईकहानी : उपलब्धि और सीमाएँ - शेखावतगोरधनसिंह।
5. हिन्दी कहानी : पहचान और परख - डॉ. इन्द्रनाथमदान।
6. हिन्दी कहानी और कहानीकार - प्रो.वासुदेव।

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई : 2

हिन्दी के प्रमुख कहानिकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कहानी के ऐतिहासिक विकास क्रम की संपूर्ण समझ विकसित होगी।
- प्रमुख कहानीकारों और उनकी प्रतिनिधि कहानियों की पहचान की जा सकेगी।
- हिंदी कहानी की प्रमुख विशेषताओं को समझा जा सकेगा।
- समाज और साहित्य के पारस्परिक संबंध को समझा जा सकेगा।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिंदी कहानी का इतिहास भारतीय समाज, संस्कृति और भाषा के विकास से गहराई से जुड़ा हुआ है। इसकी जड़ें प्राचीन भारतीय साहित्य की कथात्मक परंपरा में मिलती हैं - जैसे पंचतंत्र, जातक कथाएँ, हितोपदेश और पुराणों में वर्णित प्रसंग। इन कथाओं में नैतिक, धार्मिक और सामाजिक संदेश निहित रहते थे। यही परंपरा आगे चलकर हिंदी में कहानी विधा के रूप में विकसित हुई।

आधुनिक हिंदी कहानी का उद्‌भव उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ, जब भारतीय समाज ब्रिटिश शासन, सामाजिक सुधार आंदोलनों और नई शिक्षा प्रणाली के प्रभाव में तेजी से बदल रहा था। इस दौर में हिंदी पत्रकारिता और पत्र-पत्रिकाओं - जैसे सरस्वती और इंदु - ने कहानी विधा को लोकप्रिय मंच दिया।

प्रारंभिक कहानियाँ धार्मिक, कल्पनात्मक और नैतिक विषयों पर आधारित थीं, किंतु धीरे-धीरे कहानी समाज के यथार्थ, व्यक्ति के संघर्ष और भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बन गई। प्रेमचंद ने कहानी को जनजीवन से जोड़ा और इसे साहित्य की गंभीर विधा के रूप में प्रतिष्ठित किया। इसके बाद के युगों में कहानी ने मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, नारीवादी और दलित दृष्टिकोणों को अपनाकर अपने स्वरूप को और व्यापक बनाया।

इस प्रकार, हिंदी कहानी का विकास भारतीय समाज के परिवर्तन, संवेदना और विचारधारा का प्रतिबिंब है, जिसने हर काल में अपने समय की सच्चाइयों को शब्दों में ढालने का कार्य किया है।

SGOU

Keywords / मुख्य बिन्दु

हिंदी कहानी, ऐतिहासिक विकास, प्रमुख कहानीकार, प्रतिनिधि कहानियाँ, कहानी की विशेषताएँ, यथार्थवाद, मानवीय संवेदना, सामाजिक चेतना, प्रयोगशील भाषा, आधुनिक दृष्टिकोण, समाज और साहित्य का संबंध, पारस्परिक विश्लेषण, साहित्यिक विकास, कहानी का शिल्प

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Discussion / चर्चा

हिंदी कहानी साहित्य का विकास एक लंबी और विविध यात्रा है, जो संस्कृत आख्यानों और लोककथाओं से प्रारंभ होकर आधुनिक समाज और व्यक्ति की भावनाओं तक पहुँची। इस विकास में प्रत्येक युग ने अपनी विशेष शैली, विषय-वस्तु और सामाजिक दृष्टिकोण के माध्यम से कहानी को नई दिशा और साहित्यिक गरिमा प्रदान की।

3.2.1 हिंदी कहानी का विकास और प्रमुख कहानीकार

हिंदी कहानी की उत्पत्ति की जड़ें संस्कृत के पौराणिक कथाओं में मिलती हैं। पुराणों और लोककथाओं में जो कथात्मक रूप था, वही आगे चलकर हिंदी कहानी की नींव बना। आरंभिक काल में हिंदी कहानी धार्मिक, सामाजिक और नैतिक विषयों पर केंद्रित रही। धीरे-धीरे इस विधा ने जीवन के यथार्थ, समाज की समस्याओं और व्यक्ति की भावनाओं को अभिव्यक्ति देनी शुरू की।

'सरस्वती' और 'इंदु' जैसी पत्रिकाओं के माध्यम से अनेक रचनाकारों की कहानियाँ पाठकों के सामने आईं। इन कहानियों में जागरूकता, मानवीय संवेदना और समाज-चेतना के स्पष्ट लक्षण दिखाई देते हैं। चंद्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' को हिंदी कहानी कला की उत्कृष्ट कृति माना जाता है। आचार्य शुक्ल ने भी इसकी अत्यधिक प्रशंसा की। इसके बाद जयशंकर प्रसाद ने अपनी पत्रिका इंदु के माध्यम से कहानी विधा को नई दिशा दी। हिंदी कहानी में समय के साथ नवीन कथ्य, नवीन शिल्प और आधुनिक दृष्टिकोण का विकास हुआ।

3.2.2 हिंदी कहानी साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ

हिंदी कहानी साहित्य में कई विशिष्टताएँ हैं जो इसे अन्य विधाओं से अलग पहचान देती हैं। इसमें नागरिक जीवन की झलक स्पष्ट मिलती है। व्यक्ति और समाज के संघर्ष को कहानी के केंद्र में रखा गया है। कहानीकारों ने मानव जीवन के यथार्थ का सजीव चित्रण किया है। नवीन शिल्प, प्रयोगशील भाषा और जनवादी दृष्टिकोण के कारण हिंदी कहानी और भी समृद्ध हुई है।

इस विधा में पूँजीवाद और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध विद्रोह की भावना प्रकट होती है। साथ ही मानवीय संवेदना की गहरी परख और भावनाओं की सूक्ष्म अभिव्यक्ति भी इसकी प्रमुख विशेषता है।

3.2.3 पूर्व-प्रेमचंद युग की कहानी

पूर्व-प्रेमचंद युग की कहानियाँ आरंभिक रूप में थीं। इनमें लोककथाओं, धार्मिक आख्यानों और कल्पनात्मक घटनाओं का प्रभाव अधिक दिखाई देता था। इस काल के प्रमुख कहानीकारों में इंशा अल्ला खाँ, राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द', भारतेंदु हरिश्चंद्र, बंगमहिला, किशोरीलाल गोस्वामी, भगवानदीन, माधवप्रसाद मिश्र, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, राधिका रमण प्रसाद सिंह, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, वृंदावनलाल वर्मा और विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक आदि प्रमुख हैं।

इनकी प्रसिद्ध कहानियों में *रानी केतकी की कहानी, राजा भोज का सपना, अद्भुत अपूर्व स्वप्न, दुलाईवाली, इन्दुमती, प्लेग की चुड़ैल, मन की चंचलता, ग्यारह वर्ष का समय, उसने कहा था, राखी बंधन और रक्षाबंधन* प्रमुख हैं।

इस युग में कहानियाँ अभी लोककथाओं और धार्मिक आख्यानों से प्रभावित थीं। इनमें कल्पनाशीलता अधिक और यथार्थ कम था।

3.2.3.1 पूर्व-प्रेमचंद युग के प्रमुख कहानीकार और उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ

क्रम	कहानी का शीर्षक	लेखक
1	रानी केतकी की कहानी	इंशा अल्ला खाँ
2	राजा भोज का सपना	राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द'
3	अद्भुत अपूर्व स्वप्न	भारतेंदु हरिश्चंद्र
4	दुलाईवाली	बंगमहिला (राजेन्द्रबाला घोष)

5	इन्दुमती	किशोरीलाल गोस्वामी
6	प्लेग की चुड़ैल	भगवानदीन
7	मन की चंचलता	माधवप्रसाद मिश्र
8	ग्यारह वर्ष का समय	आचार्य रामचंद्र शुक्ल
9	इन कानों में कंगन	राधिका रमण प्रसाद सिंह
10	उसने कहा था	चंद्रधर शर्मा गुलेरी
11	राखी बंधन	वृंदावनलाल वर्मा
12	रक्षाबंधन	विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'

3.2.4 प्रेमचंद युग की कहानी

प्रेमचंद युग को हिंदी कहानी का स्वर्णकाल कहा जाता है। इस युग में कहानी समाज के यथार्थ से जुड़ी। प्रेमचंद ने कहानी को जनजीवन और सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया। उनके साथ जयशंकर प्रसाद, सुदर्शन, जैनेंद्र कुमार, चतुर्सेन शास्त्री, अज्ञेय, सुमित्रानंदन पंत, राहुल सांकृत्यायन और सुभद्रा कुमारी चौहान जैसे रचनाकारों ने कहानी को साहित्यिक गरिमा दी।

इस युग की प्रमुख कहानियों में 'कफन', 'हार की जीत', *'चिनगारियाँ', 'खेल, हल्दी घाटी में', 'ग्राम', 'कोठरी की बात, 'पानवाला', 'सतमी के बच्चे' और 'उन्मादिनी' का* उल्लेख किया जा सकता है। इन कहानियों में सामाजिक अन्याय, गरीबी, संघर्ष और मानवता के प्रति करुणा के भाव प्रबल रूप से दिखाई देते हैं।

इस युग में कहानी लोकजीवन, सामाजिक अन्याय, और मानव पीड़ा की सशक्त अभिव्यक्ति बनी।

प्रेमचंद इस युग के प्रमुख कहानीकार हैं जिन्होंने कहानी को साहित्य की गंभीर विधा बनाया।

3.2.4.1 प्रेमचंद युग के प्रमुख कहानीकार और प्रतिनिधि रचनाएँ

क्रम	कहानी का शीर्षक	लेखक
1	कफन	प्रेमचंद
2	हार की जीत	सुदर्शन
3	चिनगारियाँ	पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'
4	खेल	जैनेंद्र कुमार
5	हल्दी घाटी में	चतुर्सेन शास्त्री
6	ग्राम	जयशंकर प्रसाद
7	कोठरी की बात	अज्ञेय
8	पानवाला	सुमित्रानंदन पंत
9	सतमी के बच्चे	राहुल सांकृत्यायन
10	उन्मादिनी	सुभद्रा कुमारी चौहान

3.2.5 प्रेमचंदोत्तर युग की कहानी

प्रेमचंद के बाद कहानी नई दिशाओं में विकसित हुई। इसमें समाज के साथ-साथ व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक, अस्तित्ववादी और आधुनिक पक्षों का चित्रण मिलने लगा। इस युग के कहानीकारों ने कहानी के शिल्प और कथ्य दोनों में प्रयोग किए।

इस काल के प्रमुख कहानीकारों में भगवतीचरण वर्मा, उपेंद्रनाथ अश्क, भुवनेश्वर, गजानन माधव मुक्तिबोध, इलाचंद जोशी, यशपाल, विष्णु प्रभाकर, फणीश्वर नाथ रेणु, मोहन राकेश, भीष्म साहनी और हरिशंकर परसाई का नाम प्रमुख है।

इनकी चर्चित कहानियों में 'प्रायश्चित', 'देशभक्त', 'भेड़िए', 'काठ का सपना', 'आहुति', 'आदमी का बच्चा', 'संघर्ष के बाद', 'ठुमरी', 'परमात्मा का कुत्ता', 'चीफ की दावत' और भोलाराम का जीव विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।

3.2.5.1 प्रेमचन्दोत्तर युग के प्रमुख कहानीकार और प्रतिनिधि

क्रम	कहानी का शीर्षक	लेखक
1	प्रायश्चित	भगवतीचरण वर्मा
2	देशभक्त	उपेंद्रनाथ अश्क
3	भेड़िए	भुवनेश्वर
4	काठ का सपना	गजानन माधव मुक्तिबोध
5	आहुति	इलाचंद जोशी
6	आदमी का बच्चा	यशपाल
7	संघर्ष के बाद	विष्णु प्रभाकर
8	ठुमरी	फणीश्वर नाथ रेणु
9	परमात्मा का कुत्ता	मोहन राकेश

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

10	चीफ की दावत	भीष्म साहनी
11	भोलाराम का जीव	हरिशंकर परसाई

समकालीन हिंदी कहानी

समकालीन हिंदी कहानी ने समाज की जटिलताओं, स्त्री जीवन, दलित चेतना और मध्यमवर्गीय संघर्षों को अपना केंद्र बनाया। इन कहानियों में आधुनिक समाज के मूल्य, असमानताएँ, और नए जीवन-संघर्ष दिखाई देते हैं।

इस युग के प्रमुख कहानीकार हैं - ज्ञान प्रकाश, मोहनदास नैमिशराय, कँवल भारती, ओमप्रकाश वाल्मीकि, अब्दुल बिस्मिल्लाह, विवेक, रमेश उपाध्याय, मृणाल पांडेय, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्‌गल, राजी सेठ, मंजुल भगत, सुधा अरोड़ा और पुन्नी सिंह। इन लेखकों ने हिंदी कहानी को समकालीन समाज के सत्य से जोड़ा और इसे और अधिक सजीव बनाया।

Critical Overview / अवलोकन

हिंदी कहानी का विकास भारतीय समाज और साहित्य की यात्रा का प्रतिबिंब है। प्रारंभिक दौर में जहाँ इंशा अल्ला खाँ, भारतेंदु हरिश्चंद्र, किशोरीलाल गोस्वामी और चंद्रधर शर्मा गुलेरी जैसे लेखकों ने कहानी की नींव रखी, वहीं प्रेमचंद ने इसे यथार्थवादी और जनजीवन से जुड़ी विधा बनाकर हिंदी साहित्य में अमर स्थान दिया।

प्रेमचंदोत्तर काल में यशपाल, भगवतीचरण वर्मा, मोहन राकेश, फणीश्वर नाथ रेणु, भीष्म साहनी और हरिशंकर परसाई जैसे लेखकों ने सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और व्यंग्यात्मक दृष्टि से कहानी को नई दिशा दी। समकालीन काल में चित्रा मुद्‌गल, मृदुला गर्ग, ओमप्रकाश वाल्मीकि, मृणाल पांडेय और सुधा अरोड़ा जैसे रचनाकारों ने स्त्री, दलित और मध्यमवर्गीय जीवन के संघर्षों को केंद्र में लाकर हिंदी कहानी को आधुनिक स्वरूप प्रदान किया।

इस प्रकार, हिंदी कहानी ने अपने आरंभ से अब तक निरंतर विकास किया है - लोककथाओं से लेकर आधुनिक यथार्थ तक की यह यात्रा न केवल साहित्यिक समृद्धि की दास्तान है, बल्कि समाज के बदलते मूल्यों, मानवीय संवेदनाओं और संघर्षों की जीवंत अभिव्यक्ति भी है। हिंदी कहानी आज भी नवाचार, प्रयोग और सामाजिक चेतना की दिशा में अग्रसर है।

Recap / पुनरावृत्ति

- हिंदी कहानी की शुरुआत संस्कृत पौराणिक कथाओं और लोककथाओं से हुई।
- प्रारंभिक कहानियाँ धार्मिक, नैतिक और कल्पनाशील विषयों पर आधारित थीं।
- पूर्व-प्रेमचंद युग में कहानियाँ लोककथाओं और कल्पनाशील घटनाओं से प्रभावित थीं।
- इस युग के प्रमुख कहानीकार थेः इंशा अल्ला खाँ, राजा शिवप्रसाद, चंद्रधर शर्मा गुलेरी।
- प्रेमचंद युग को हिंदी कहानी का स्वर्णकाल माना जाता है।
- इस युग की कहानियाँ सामाजिक यथार्थ, गरीबी, अन्याय और मानव पीड़ा को दर्शाती थीं।
- प्रमुख प्रेमचंद युग के कहानीकार थेः प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत।
- प्रेमचंदोत्तर युग में कहानी ने मनोवैज्ञानिक और आधुनिक दृष्टिकोण अपनाया।

SGOU

- समकालीन हिंदी कहानियाँ समाज की जटिलताएँ, स्त्री जीवन, दलित चेतना और मध्यमवर्गीय संघर्ष पर केंद्रित हैं।
- हिंदी कहानी की प्रमुख विशेषताएँ हैं: यथार्थवाद, मानवीय संवेदना, सामाजिक चेतना, नवीन शिल्प और प्रयोगशील भाषा।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिंदी कहानी की जड़ें किसमें मिलती हैं?
2. चंद्रधर शर्मा गुलेरी की प्रसिद्ध कहानी कौन सी है?
3. हिंदी कहानी का स्वर्णकाल किस युग को माना जाता है?
4. प्रेमचंद की कहानी में प्रमुख रूप से क्या दिखाया गया है?
5. 'इंदु' पत्रिका के माध्यम से किसने हिंदी कहानी को नई दिशा दी?
6. प्रेमचंदोत्तर युग के प्रमुख कहानीकार कौन हैं?
7. हिंदी कहानी की प्रमुख विशेषताओं में क्या शामिल है?
8. समकालीन हिंदी कहानी में किसका विशेष महत्व है?

Answers/ उत्तर

1. संस्कृत पौराणिक कथाओं में
2. उसने कहा था
3. प्रेमचंद युग
4. सामाजिक यथार्थ और मानव पीड़ा
5. जयशंकर प्रसाद
6. भगवतीचरण वर्मा, उपेंद्रनाथ अश्क, फणीश्वर नाथ रेणु
7. यथार्थवाद, मानवीय संवेदना, सामाजिक चेतना
8. स्त्री जीवन, दलित चेतना और मध्यमवर्गीय संघर्ष

SGOU

Assignments/ प्रदत्त कार्य

1. हिंदी कहानी के विकास और उसके प्रमुख युगों के बारे में लिखिए।
2. प्रेमचंद युग के किसी एक कहानीकार और उनकी कहानी पर निबंध लिखिए।
3. हिंदी कहानी की मुख्य विशेषताओं को उदाहरण के साथ समझाइए।
4. किसी एक कहानी का समाज और व्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभाव पर चर्चा कीजिए।
5. समकालीन हिंदी कहानी में समाज और जीवन की समस्याओं को कैसे दिखाया गया है, स्पष्ट कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. कहानी की कहानी - डॅा. इन्द्रनाथमदान।
2. कथाकार अज्ञेय - डॅा.चंद्रकांत।
3. हिन्दी कहानी का विकास - डॅा.मधुरेश।
4. नईकहानी : उपलब्धि और सीमाएँ - शेखावतगोरधन सिंह।
5. हिन्दी कहानी : पहचान और परख - डॅा. इन्द्रनाथमदान।
6. हिन्दी कहानी और कहानीकार - प्रो.वासुदेव।

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई : 3
प्रेमचंद, प्रसाद, जैनेंद्र, अज्ञेय और उषाप्रियंवदा का योगदान

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रमुख हिन्दी कथाकारों के जीवन और साहित्यिक योगदान की समझ प्राप्त होगी।
- हिन्दी कहानी के विकास और उसके विभिन्न चरणों का ज्ञान होगा।
- कहानियों की भाषा, शैली और विषय-वस्तु का विश्लेषण करने की क्षमता विकसित होगी।
- साहित्य और समाज के पारस्परिक संबंध को समझने की दृष्टि प्राप्त होगी।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी कहानी का विकास उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ, जब भारतीय समाज राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। इस समय स्वतंत्रता आंदोलन, सामाजिक सुधार और शिक्षा के प्रसार ने साहित्य को नई दिशा प्रदान की। इसी पृष्ठभूमि में प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, अज्ञेय और उषा प्रियंवदा जैसे महान साहित्यकारों ने हिन्दी कहानी को अपनी विशिष्ट पहचान दी। प्रेमचन्द ने यथार्थवाद को अपनाते हुए आम जनता, किसानों और श्रमिकों के जीवन-संघर्ष को अपनी कहानियों में सजीव रूप में प्रस्तुत किया। जयशंकर प्रसाद ने कहानी को काव्यात्मकता, संवेदना और सौंदर्य के माध्यम से भावनात्मक गहराई दी। अज्ञेय ने आधुनिक हिन्दी कहानी को मनोवैज्ञानिकता, स्वतंत्रता और अस्तित्व-बोध की नई दिशा दी, जिससे कथा-साहित्य और अधिक गहराई और प्रयोगशीलता प्राप्त कर सका। वहीं उषा प्रियंवदा ने नई कहानी आंदोलन के अंतर्गत स्त्री-विमर्श को केंद्र में रखकर मध्यमवर्गीय जीवन की सच्चाइयों, अकेलेपन और संवेदनाओं को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया। इस प्रकार, इन चारों रचनाकारों के योगदान से हिन्दी कहानी का विकास सामाजिक यथार्थ से लेकर आधुनिक चेतना और स्त्री अनुभवों तक विस्तृत हुआ।

SGOU

Keywords / मुख्य बिन्दु

प्रेमचन्द युगीन हिंदी कहानी कला, समाज के सभी पक्षों का चित्रण, जनवादी दृष्टिकोण

Discussion / चर्चा

3.3.1 हिन्दी के प्रमुख कहानी

हिन्दी साहित्य में कहानी कला के क्षेत्र में प्रेमचन्द, प्रसाद, जैनेन्द्र, अज्ञेय और उषा प्रियंवदा का स्थान अतुलनीय है। कहानी साम्राट प्रेमचन्द की पहली कहानी पंचपरमेश्वर सरस्वती पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित हुई। प्रेमचन्द समाज के जनसाधारण की संवेदनाओं के असली चित्रणकर्ता थे।

प्रसाद ने अपनी कहानियों के माध्यम से छायावाद की

सौंदर्य और भावनात्मक गहराई को प्रतिष्ठित किया। यदि प्रेमचन्द समाज की सामाजिक चेतना के प्रतिनिधि थे, तो प्रसाद वैयक्तिक और भावनात्मक चेतना के प्रतीक थे। यह दोनों दृष्टिकोण हिंदी कहानी को दो प्रमुख आयाम प्रदान करते हैं।

प्रेमचन्दोत्तर काल को हिन्दी कहानी साहित्य का पूर्ण उत्कर्ष काल माना जाता है। इस युग में कहानी ने न केवल नई दिशा अपनाई, बल्कि नया रंग-रूप और गहराई भी हासिल की। इस युग के प्रमुख कथाकारों में अज्ञेय और जैनेन्द्र शामिल हैं। जैनेन्द्र मनोवैज्ञानिक कहानियों के अग्रणी लेखक थे, जबकि अज्ञेय ने मनोवैज्ञानिक और सामाजिक दोनों स्तरों की कहानियाँ रची।

साथ ही, महिला कथाकारों ने भी हिन्दी कहानी को सशक्त और समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनमें उषा प्रियंवदा प्रमुख हैं, जिन्होंने नारी संवेदना और आधुनिक समाज की जटिलताओं को कथा रूप में प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया।

3.3.1.1 प्रेमचन्द

साहित्यकार प्रेमचन्द हिन्दी कथा साहित्य के अद्वितीय शिल्पी हैं। उन्होंने लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखी हैं। प्रेमचन्द केवल हिन्दी भाषा का नहीं, बल्कि पूरे भारत का अनमोल वरदान हैं। उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं को इतनी सजीवता और गहराई से चित्रित किया कि उनका तुल्य अन्यत्र दुर्लभ है। प्रेमचन्द आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानीकार थे। यह कहना गलत न होगा कि हिन्दी कहानी क्षेत्र में प्रेमचन्द का कोई विकल्प नहीं है। 1936 में लखनऊ में प्रगतिशील लेखक संघ के सम्मेलन में वे अध्यक्ष भी रहे।

प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई 1880 को काशी से चार मील दूर लमही गाँव में हुआ था। उनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। माता का नाम आनंदी देवी और पिता का नाम अजायबराय था। उन्होंने 1898 में मैट्रिक और 1919 में बी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की। प्रेमचन्द की मातृभाषा उर्दू थी। वे उर्दू से हिन्दी की ओर आए। उर्दू में उनका नाम नवाब राय था, जबकि हिन्दी में प्रेमचन्द नाम से विख्यात हुए। उपन्यास के क्षेत्र में उनके योगदान को देखकर बंगाल के प्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें उपन्यास सम्राट की उपाधि दी।

उर्दू में प्रेमचन्द की पहली कहानी-संग्रह सोजे-वतन (राष्ट्र-विलाप) सन् 1908 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह के लिए उन्हें जनता को भड़काने का आरोप लगाया गया। उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले के कलेक्टर ने सोजे-वतन की पाँच सौ प्रतियाँ जब्त कर आग लगा दी और नवाब राय (प्रेमचन्द) को चेतावनी दी कि अगर आगे लिखा तो जेल भेजा जाएगा। इस घटना के बाद उन्होंने उर्दू में नवाब राय के स्थान पर प्रेमचन्द नाम से लेखन शुरू किया। हिन्दी में प्रेमचन्द की पहली कहानी बड़े घर की बेटी दिसम्बर 1910 में ज़माना पत्रिका में प्रकाशित हुई। उनकी अंतिम कहानी कफन 1936 में, उनके निधन से कुछ समय पहले प्रकाशित हुई। हिन्दी में उनका पहला उपन्यास प्रेमा (1903) और अंतिम उपन्यास अधूरा मंगलसूत्र (1936) है।

प्रेमचन्द ने हिन्दी में कुल 301 कहानियाँ लिखी, जिनमें से 3 अब उपलब्ध नहीं हैं। उर्दू में उनकी पहली कहानी संसार का सबसे अनमोल रत्न थी, जो 'सोजे-वतन' में संकलित थी। उनकी उल्लेखनीय कहानियों में 'पूस की रात', 'सद्‌गति', 'पंचपरमेश्वर', 'आत्माराम', 'बड़े घर की बेटी', 'बूढ़ी काकी', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'बज्रपात', 'ईदगाह', 'सुजान भगत', 'कफन', 'मुक्तिपथ', 'नमक का दारोगा', और 'मंत्र' शामिल हैं।

प्रेमचन्द की भाषा अत्यंत सरल और शैली आकर्षक थी, जिसकी वजह से वे आज भी करोड़ों पाठकों के हृदय में जीवित हैं। उनके पहले कथा-संग्रह सप्तसरोज, नवनिधि, प्रेमपचीसी, प्रेमपूर्णिमा, प्रेमद्वादशी, प्रेमतीर्थ, और सप्तसुमन नामों से संकलित हुए। बाद में उनकी संपूर्ण कहानियाँ आठ भागों में मानसरोवर में प्रकाशित की गईं। इसके अलावा वे माधुरी, मर्यादा, जागरण, और हंस जैसी पत्रिकाओं के संपादक भी रहे।

3.3.1.2 जयशंकरप्रसाद

प्रेमचन्द युग के प्रमुख कहानीकारों में जयशंकर प्रसाद का विशेष स्थान है। मूलतः वे कवि हैं, लेकिन नाटककार, उपन्यासकार और कहानीकार के रूप में भी उनकी प्रतिभा असाधारण रही है। उनकी आरम्भिक

SGOU

कहानी 'ग्राम' इन्दु पत्रिका में प्रकाशित हुई। प्रसाद की कहानियाँ जैसे 'आकाशदीप', 'आँधी', 'छाया', 'प्रतिध्वनि', 'बिसाती', 'पुरस्कार', 'इन्द्रजाल', 'गुण्डा' साहित्य जगत में अत्यंत चर्चित रही हैं।

प्रसाद की कहानियों का महत्त्व उनकी काव्यमयी भाषा, कोमलता और भावनात्मक गहराई में निहित है। भावपक्ष और कलापक्ष दोनों दृष्टियों से उनकी कहानियाँ श्रेष्ठ मानी जाती हैं। कुल मिलाकर उनकी लेखनी से 72 कहानियाँ जन्मी, जिनमें अधिकांश भावना प्रधान हैं। इसके साथ ही कुछ यथार्थोन्मुख और वातावरण प्रधान कहानियाँ भी प्रसाद ने लिखीं। वे मौलिक कहानीकार हैं और अपने कथा संसार में इतिहास को कल्पना के साथ सुंदर रूप से प्रस्तुत करते हैं।

प्रसाद की रचनाओं में भारतीय संस्कृति और सभ्यता की झलक स्पष्ट रूप से मिलती है। उनकी कहानियों में प्रेम, करुणा, सौंदर्य और भावुकता प्रमुख रूप से सम्मिलित है। वे भारतीय अतीत के गौरवगायक माने जाते हैं। उनकी कहानियाँ जैसे 'आँधी', 'आकाशदीप', 'पुरस्कार', 'गुंडा', 'सालवती', 'स्वर्ग के खंडहर में ', 'इन्द्रजाल', 'विराम चिह्न', 'छोटा जादूगर', 'बिसाती', समुद्र संतरण पाठकों के ह्रदय को आकर्षित करती हैं।

इसके अतिरिक्त उनके पात्र-बुद्धगुप्त, चंपा, मणिभद्र, इरावती, मधुलिका, लैला, सालवती, नन्हकूसिंह-पाठक-मन में स्थायी छाप छोड़ते हैं। प्रसाद की कहानियाँ ललित-प्रवाहित काव्यमय भाषा, प्रभावपूर्ण शैली, कल्पना की विविधता और अतीत के प्रति विशेष झुकाव से संपन्न हैं, जो उन्हें कालातीत और अनमोल बनाती हैं।

3.3.1.3 जैनेंद्रकुमार

हिन्दी के अमर कहानीकार जैनेंद्र कुमार का जन्म 2 जनवरी 1905 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ ज़िले के कौड़ियागंज में हुआ था। उनका निधन 24 दिसम्बर 1988 को हुआ। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा के दौरान ही उन्होंने साहित्य-जगत में प्रवेश किया। विद्यार्थी जीवन में वे असहयोग आंदोलन में सक्रिय रहे और परिणामस्वरूप उन्हें जेल भी जाना पड़ा। आगे चलकर वे हिन्दी साहित्य में एक विशिष्ट और सजीव उपस्थिति बनकर उभरे।

जैनेंद्र कुमार को मानव-मन के अत्यंत सूक्ष्म चितेरे कहा जाता है। साहित्य में उनके योगदान के लिए भारत सरकार ने उन्हें 1966 में केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा 1971 में पद्मभूषण से सम्मानित किया। वर्ष 1973 में दिल्ली विश्वविद्यालय ने उन्हें डी.लिट. की उपाधि प्रदान की।

उनके कहानी-साहित्य में दार्शनिकता, मनोविज्ञान और बौद्धिक संवेदना का गहरा प्रभाव मिलता है। प्रेमचन्द द्वारा अधूरे छोड़े गए सामाजिक यथार्थ को जैनेंद्र ने आगे बढ़ाया और उसे एक नए मनोवैज्ञानिक आयाम से समृद्ध किया। उनकी कहानियाँ व्यक्ति-मन के आंतरिक भावों का सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत करती हैं। वे पात्रों के मनोविश्लेषण को अत्यधिक महत्व देते हैं और अंततः पाठक के सामने एक स्पष्ट, संगठित निष्कर्ष रखते हैं। इसी कारण वे हिन्दी कहानी के सर्वोच्च मनोवैज्ञानिक कहानीकार माने जाते हैं।

भगवान बुद्ध की करुणा-भावना, गांधीजी के सत्य-अहिंसा सिद्धांत, दार्शनिक चिंतन और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का सुंदर समन्वय जैनेंद्र के साहित्य में देखा जा सकता है। प्रगतिशील और क्रांतिकारी दृष्टि के कारण वे परंपरागत रीति-रिवाजों से काफी हद तक मुक्त दिखाई देते हैं।

उनकी कहानियों में मनोविज्ञान के साथ-साथ दार्शनिकता भी अंतर्निहित है। ईनाम और मास्टरजी जैसी कहानियों में उन्होंने दार्शनिकता और यथार्थवाद का अद्‌भुत संतुलन स्थापित किया है। सूक्ष्मता, कौशल, सरलता, मानवीय दृष्टिकोण और चिंतन की गहराई-ये सभी गुण उनके कथा-साहित्य की विशिष्ट पहचान हैं।

जैनेंद्र कुमार ने लगभग 200 कहानियाँ लिखीं। उनका पहला कहानी-संग्रह 'फाँसी' सन् 1927 में प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त पाजेब, दो चिड़ियाँ, ध्रुव यात्रा, एक रात, वातायन, नीलम देश की राजकुमारी, जैनेंद्र की कहानियाँ (दस भाग), मेरी प्रिय कहानियाँ, नई कहानियाँ, स्पर्द्धा, एक दिन तथा एक रात आदि उनके प्रमुख कहानी-संग्रह हैं।

SGOU

3.3.1.4 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय

अज्ञेय का पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय है। उनका जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के कसया (कुशीनगर) में हुआ था। वे सन् 1929 में बी.एस.सी. पूरा करने के बाद अंग्रेज़ी में एम.ए. की पढ़ाई करते समय साहित्य में सक्रिय हो गए। अज्ञेय बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे और उन्हें आधुनिक हिन्दी साहित्य के पथ-प्रदर्शक के रूप में माना जाता है। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार (1964, आँगन के पार द्वार), भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार (1978, कितनी नावों में कितनी बार) और भारत-भारती पुरस्कार (1983) जैसी प्रतिष्ठित सम्मानाएँ प्राप्त हुईं।

अज्ञेय महान कवि, शैलीकार, कथा-साहित्य को नया मोड़ देने वाले कथाकार, श्रेष्ठ उपन्यासकार, ललित निबंधकार, समर्थ संपादक, सैनिक और सफल अध्यापक जैसे विविध क्षेत्रों में अद्वितीय स्थान रखते हैं। उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं: विपथगा (1937), परंपरा (1944), अमर वल्लरी (1944), कड़ियाँ तथा अन्य कहानियाँ (1945), कोठरी की बात (1945), शरणार्थी (1948), जयदोल (1951), ये तेरे प्रतिरूप (1961), और संपूर्ण कहानियाँ (1975)। अज्ञेय का निधन 4 अप्रैल 1987 को हुआ।

अज्ञेय की लेखनी से कुल 67 उच्चस्तरीय कहानियाँ प्राप्त हुई हैं। उनकी आरंभकालीन कहानियाँ क्रांतिकारी भावना से ओतप्रोत हैं। उन्हें धीर, वीर और गंभीर कथाकार के रूप में जाना जाता है। उनकी कहानियों में क्रांति की पिपासा, पौरुष, दृढ़ता, अचंचलता, साहस, बलिदान और सर्वत्र समर्पण की भावना स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है।

अज्ञेय भाषा के अत्यंत धनी थे और उन्होंने इसका जादू-सा उपयोग अपनी कहानियों में किया। भावपक्ष और कला पक्ष की दृष्टि से उनकी कहानियाँ श्रेष्ठतम हैं। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आधुनिक हिन्दी के कहान्ीकारों में अज्ञेय का स्थान शीर्षस्थ और अविस्मरणीय है।

3.3.1.5 उषाप्रियंवदा

उषा प्रियंवदा आधुनिक हिन्दी की सुप्रसिद्ध साहित्यकार हैं। उपन्यास और कहानी में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनका जन्म 24 दिसंबर 1930 को उत्तर प्रदेश के कानपुर में हुआ। अंग्रेज़ी में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे कई वर्षों तक श्रीराम कॉलेज, दिल्ली, इलाहाबाद विश्वविद्यालय और अमेरिका के इंडियाना विश्वविद्यालय में अध्यापिका रही थीं।

नई कहानी की महिला कथाकारों में उषा प्रियंवदा शीर्षस्थ मानी जाती हैं। उनका दृष्टिकोण अधिकांशतः स्त्री विमर्श पर केंद्रित है। उनके कहानी संग्रहों में ज़िंदगी और गुलाब के फूल, मेरी प्रिय कहानियाँ, वनवास, एक कोई दूसरा, कितना बड़ा झूठ, संपूर्ण कहानियाँ, शून्य शामिल हैं। वापसी, मछलियाँ और प्रतिध्वनि उनकी सबसे महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने कई उपन्यास और नाटक भी लिखे हैं।

उषा प्रियंवदा मध्य वर्गीय वैयक्तिक एवं पारिवारिक जीवन की संवेदनाओं को प्रभावशाली रूप में चित्रित करती हैं। उनकी कुछ कहानियों में आधुनिक नगरीय जीवन के विविध पक्ष दिखाई देते हैं। अकेलेपन की मानसिक पीड़ा उनकी कहानियों में विशेष गहराई से दिखाई देती है। उषा प्रियंवदा समकालीन व्यक्ति की दशा और दिशा को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में समर्थ हैं और उनकी कथावस्तु यथार्थ धरातल पर आधारित हैं।

Critical Overview / अवलोकन

प्रेमचन्द युग हिन्दी कहानी साहित्य का स्वर्णिम युग माना जाता है। इस युग ने कहानी को समाज और जीवन के वास्तविक चित्रण का माध्यम बनाया। प्रेमचन्द ने लगभग 300 कहानियों के माध्यम से समाज के सभी वर्गों, विशेषकर आम जनमानस की संवेदनाओं और संघर्षों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया। उनके सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली कथन-शैली ने कहानी को आम पाठक के हृदय तक पहुँचाया और कहानी कला को नए आयाम दिए।

SGOU
SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इस युग के अन्य प्रमुख लेखक जैसे जयशंकर प्रसाद, जैनेंद्र कुमार और अज्ञेय ने कहानी को मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और सामाजिक दृष्टि से समृद्ध किया। महिला कथाकार उषा प्रियंवदा ने स्त्री संवेदना और आधुनिक समाज की जटिलताओं को कथा रूप में प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर हिन्दी कहानी को और सशक्त बनाया।

संक्षेप में, प्रेमचन्द युग ने हिन्दी कहानी साहित्य को पूर्ण उत्कर्ष प्रदान किया, जहाँ यथार्थवाद, समाज की सामाजिक चेतना, भावनात्मक गहराई और साहित्यिक सौंदर्य का संतुलित मिश्रण देखने को मिलता है। आधुनिक कहानियाँ समय और परिवेश के अनुसार विकसित हुई हैं, परन्तु प्रेमचन्द और उनके युगीन साहित्यकारों की विरासत आज भी हिन्दी कहानी के लिए प्रेरणास्त्रोत बनी हुई है।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्रेमचन्द हिन्दी कहानी के आदर्श यथार्थवादी लेखक थे और उन्होंने लगभग 301 कहानियाँ लिखीं।
- प्रेमचन्द का वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था, और उन्होंने उर्दू से हिन्दी की ओर लेखन किया।
- जयशंकर प्रसाद कवि होने के साथ-साथ नाटककार, उपन्यासकार और कहानीकार भी थे, और उनकी कहानियाँ भावनात्मक और काव्यमय शैली की हैं।
- अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन) आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख कथाकार थे, जिनकी कहानियों में क्रांति, साहस और सामाजिक चेतना दिखती है।
- उषा प्रियंवदा आधुनिक महिला कथाकार हैं, जो स्त्री विमर्श और नगरीय जीवन के विविध पहलुओं को अपनी कहानियों में प्रस्तुत करती हैं।
- हिन्दी कहानी साहित्य ने समय के साथ यथार्थवाद, आदर्शवाद, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण और स्त्री विमर्श जैसे विभिन्न आयाम अपनाए हैं।
- प्रेमचन्द की प्रमुख कहानियों में कफन, पूस की रात, बड़े घर की बेटी, ईदगाह शामिल हैं।
- जयशंकर प्रसाद की उल्लेखनीय कहानियों में आँधी, आकाशदीप, पुरस्कार, इन्द्रजाल हैं।
- अज्ञेय की कहानियों में विपथगा, शरणार्थी, परंपरा, जयदोल प्रमुख हैं।
- उषा प्रियंवदा की कहानियाँ जैसे वापसी, मछलियाँ, प्रतिध्वनि, ज़िंदगी और गुलाब के फूल आधुनिक सामाजिक और मानसिक संवेदनाओं को उजागर करती हैं।

SGOU

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रेमचन्द का वास्तविक नाम क्या था?
2. प्रेमचन्द की पहली हिन्दी कहानी कौन-सी थी?
3. जयशंकर प्रसाद की कहानियों में कौन-सा सांस्कृतिक तत्व प्रमुख रूप से दिखाई देता है?
4. अज्ञेय का वास्तविक नाम क्या था?
5. अज्ञेय को 'कितनी नावों में कितनी बार' के लिए कौन-सा पुरस्कार मिला था?
6. उषा प्रियंवदा किस आंदोलन की प्रमुख कहानीकार हैं?
7. उषा प्रियंवदा की प्रसिद्ध कहानी कौन-सी है?
8. 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि किसे दी गई थी?

Answers/ उत्तर

1. धनपत राय श्रीवास्तव
2. बड़े घर की बेटी
3. भारतीय संस्कृति और सभ्यता
4. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन
5. भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार
6. नई कहानी आंदोलन
7. वापसी
8. प्रेमचन्द

SGOU

Assignments/ प्रदत्त कार्य

1. हिंदी साहित्य और कहानी लेखन का महत्व पर टिप्पणी लिखिए ।
2. प्रमुख हिंदी कहानियों और उनके कथाकारों पर चर्चा कीजिए।
3. प्रेमचन्द युग के चार प्रसिद्ध कहानीकारों पर टिप्पणी लिखिए ।
4. वर्तमानकालीन हिंदी कहानीकारों पर चर्चा कीजिए।
5. हिंदी कहानी साहित्य पर टिप्पणी कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. कहानी की कहानी - डॉ.इन्द्ननाथमदान।
2. कथाकार अज्ञेय - डॉ.चंद्रकांत।
3. हिन्दी कहानी का विकास - डॉ.मधुरेश।
4. नईकहानी : उपलब्धि और सीमाएँ - शेखावतगोरधनसिंह।
5. हिन्दी कहानी : पहचान और परख - डॉ. इन्द्रनाथमदान।
6. हिन्दी कहानी और कहानीकार - प्रो.वासुदेव।

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई : 4

वापसी – उषा प्रियंवदा

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी कहानी की महिला लेखिकाओं में उषा प्रियंवदा का परिचय प्राप्त करता है ।
- आधुनिक काल की सुप्रसिद्ध कहानीकार उषा प्रियंवदा के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचय प्राप्त करता है।
- मध्य वर्गीय परिवारों में उत्पन्न होने वाली स्वार्थ चिंता से परिचय प्राप्त करता है।
- समकालीन समाज में टूट जाने वाले पितृ-पुत्र संबंध की दर्दनाक चित्र का परिचय प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

उषा प्रियंवदा का जन्म 24 दिसंबर 1930 को कानपुर में हुआ। उन्होंने बचपन से ही साहित्य में गहरी रुचि दिखाई और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य में एम.ए. और पी-एच.डी. पूरी की। इसके बाद वे लेडी श्रीराम कॉलेज, दिल्ली और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन के क्षेत्र में सक्रिय रहीं। उन्हें फुलब्राइट स्कॉलरशिप भी मिली, जिसके तहत वे अमेरिका गईं और ब्लूमिंगटन, इंडियाना में दो वर्ष तक पोस्ट-डॉक्टोरल अध्ययन किया। 1964 में उन्होंने विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय, मैडिसन में दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यभार संभाला। उनके साहित्यिक योगदान में शहरी परिवारों की जटिल भावनाएँ और आंतरिक संघर्ष संवेदनशील रूप से उकेरे गए हैं। उनकी प्रमुख कृतियों में कहानी संग्रह जैसे वनवास, कितना बड़ा झूठ, शून्य और उपन्यास पचपन खंभे लाल दीवारें, रुकोगी नहीं राधिका, शेषयात्रा शामिल हैं।

कहानी 'वापसी' में उषा प्रियंवदा ने बदलते सामाजिक और पारिवारिक मूल्यों का मार्मिक चित्रण किया है। कहानी का मुख्य पात्र गजाधर बाबू रिटायर होकर अपने घर लौटते हैं, लेकिन उन्हें अपने परिवार में अपनापन या सम्मान नहीं मिलता। उनकी पत्नी उदासीन और बच्चे स्वार्थी व्यवहार करते हैं, जो पीढ़ियों के अंतराल और सामाजिक बदलाव को दर्शाता है। कहानी बुजुर्गों के मानसिक और भावनात्मक संघर्ष, परिवार में बदलती प्राथमिकताओं और समय के साथ बदलते संबंधों को संवेदनशील रूप से प्रस्तुत करती है। प्रियंवदा की लेखनी यथार्थपरक और भावनाओं से भरपूर है, जो पाठक को गजाधर बाबू के अनुभवों से जोड़ती है और सामाजिक संदेश भी देती है।

SGOU

Keywords / मुख्य बिन्दु

उषा प्रियंवदा, गजाधर बाबू, परिवार, रिटायर, भावनात्मक संघर्ष, सामाजिक बदलाव

Discussion / चर्चा

3.4.1 उषा प्रियंवदा

उषा प्रियंवदा का जन्म 24 दिसंबर 1930 को कानपुर में हुआ। बचपन से ही उन्हें साहित्य में गहरी रुचि थी। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य में एम.ए. और फिर पी-एच.डी. पूरी की। इसके बाद वे दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन के क्षेत्र में सक्रिय रहीं।

अध्यापन के दौरान उन्हें फुलब्राइट स्कॉलरशिप मिली, और यह अवसर उन्हें अमेरिका ले गया। ब्लूमिंगटन, इंडियाना में दो वर्ष तक पोस्ट-डॉक्टोरल अध्ययन करने के बाद, 1964 में उन्होंने विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय, मैडिसन में दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यभार संभाला।

लेखन के क्षेत्र में उषा प्रियंवदा ने शहरी परिवारों की जटिल भावनाओं और आंतरिक संघर्षों को बड़ी संवेदनशीलता से उकेरा। उनके कथा-साहित्य में 1960 और 1970 के दशक की शहरी जीवन की उदासी, अकेलापन और ऊब स्पष्ट रूप से झलकती है। उनकी रचनाएँ पाठकों को भावनाओं के गहरे अनुभव से जोड़ती हैं और यथार्थ का एक सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं।

3.4.1.1 उनकी प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं

कहानी संग्रह : वनवास, कितना बड़ा झूठ, शून्य, जिन्दग़ी और गुलाब के फूल (1961), एक कोई दूसरा (1966), फिर वसंत आया (1961), कितना बड़ा झूठ (1972)

उपन्यास : पचपन खंभे लाल दीवारे (1961), रुकोगी नहीं राधिका (1967), शेषयात्रा (1984), अंतर्वंशी (2000), भया कबीर उदास (2007), नदी (2013)

उषा प्रियंवदा के योगदान को पहचानते हुए उन्हें 2007 में पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आज वे सेवानिवृत्त होकर लेखन और यात्रा में समय व्यतीत कर रही हैं, लेकिन उनके शब्द आज भी पाठकों के दिलों में जीवंत हैं।

3.4.2 सारांश

कहानी 'वापसी' उषा प्रियंवदा द्वारा लिखी गई है और यह बदलते पारिवारिक जीवन, पीढ़ियों के अंतराल और सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन का मार्मिक चित्रण करती है। कहानी का मुख्य पात्र गजाधर बाबू है। वह रेलवे में 35 वर्षों तक नौकरी करने के बाद रिटायर होकर अपने घर लौटते हैं। गजाधर बाबू के चार बच्चे हैं - बड़ा बेटा अमर, छोटा बेटा नरेंद्र, बड़ी बेटी कांति और छोटी बेटी बसंती।

रिटायर होने के बाद गजाधर बाबू के मन में अपने परिवार के साथ सुखपूर्वक और हंसते-खेलते समय बिताने की उत्कट इच्छा होती है। वे अपने परिचित वातावरण, सहकर्मियों और अकेले जीवन की यादों को पीछे छोड़कर घर पहुँचते हैं। लेकिन घर पहुँचने पर उन्हें यह देखकर गहरा दुःख होता है कि परिवार के किसी सदस्य ने उनके आगमन पर कोई उत्साह या प्रेम नहीं दिखाया।

गजाधर बाबू देखते हैं कि पत्नी उदासीन हो गई हैं। बच्चों में पिता के प्रति प्रेम, सम्मान या श्रद्धा का अभाव है। परिवार की बैठक में उनके लिए अस्थायी चारपाई रखी जाती है, जो यह दिखाती है कि उन्हें परिवार में पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया गया। जब गजाधर बाबू घर की व्यवस्था सुधारने लगते हैं और कुछ सुधार करते हैं, तो बच्चों को यह अच्छा नहीं लगता।

बड़ा बेटा अमर घर का मालिक बन चुका है और वह पिता की कुछ मांगों और उपस्थिति से असहज महसूस करता है। उसका यह विचार कि वह घर से अलग हो जाए, गजाधर बाबू के हृदय को तोड़ देता है। छोटी बेटी बसंती अपनी सहेली षीला के पास जाने के लिए निकलती है, लेकिन पिता के मना करने पर वह उनसे बात करना भी बंद कर देती है।

एक दिन गजाधर बाबू जब घूमकर लौटते हैं, तो पाते हैं कि उनके रहने की जगह, जो बैठक में थी, उसे पत्नी ने अपने कमरे में अन्य सामानों के बीच रख दिया है। इसके बाद भी गजाधर बाबू किसी से शिकायत नहीं करते।

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

लेकिन कुछ समय बाद जब पत्नी नौकर की शिकायत करती हैं, तो वे नौकर को छोड़ देते हैं। इससे परिवार के सभी सदस्य, विशेषकर अमर, उनसे और अधिक अप्रसन्न हो जाते हैं। अमर कहता है - 'बूढ़े आदमी हैं, चुपचाप पड़े रहें,' जिससे पिता का दुःख और बढ़ जाता है।

गजाधर बाबू धीरे-धीरे यह महसूस करते हैं कि उनका घर, जो कभी उनके लिए सुख और अपनापन का प्रतीक था, अब बदल गया है। उनके बच्चे अपने स्वार्थ और व्यक्तिगत इच्छाओं में इतने व्यस्त हैं कि उन्होंने पिता के अनुभव, भावनाओं और उपस्थिति को तुच्छ समझ लिया है।

अंत में गजाधर बाबू को सेठ रामजीमल की चीनी मिल में नौकरी मिल जाती है। वे चाहते हैं कि पत्नी भी साथ चले, पर वह घर-गृहस्थी और बड़ी बेटी की वजह से मना कर देती है। यह सुनकर गजाधर बाबू निराश हो जाते हैं। जाने वाले दिन बेटा नरेंद्र रिक्शा बुलाकर उनका सामान चढ़वा देता है। गजाधर बाबू परिवार को अंतिम नज़र से देखते हुए चुपचाप निकल जाते हैं। उनके जाने के बाद घर के बाकी लोग अपनी रोज़मर्रा और मनोरंजन की बातों में लग जाते हैं, जबकि पत्नी उनके बचाए हुए मठरियाँ समेट कर उनकी चारपाई हटवाने लगती है - जैसे घर फिर से उसी पुराने ढर्रे पर लौट आया हो।

कहानी में यह भी दिखाया गया है कि गजाधर बाबू अपने बच्चों की कठोरता और उदासीनता के बावजूद धैर्य और समझदारी से पेश आते हैं। वे कभी कोई बड़ी शिकायत नहीं करते, और छोटे-मोटे झगड़े और असम्मान को भी सहन करते हैं। उनके जीवन का यह अनुभव यह दर्शाता है कि बुजुर्गों की भावनाएँ और सम्मान अक्सर परिवार के बदलाव और पीढ़ियों के अंतराल में अनदेखा हो जाते हैं।

आखिरकार, कहानी पाठक को यह संदेश देती है कि समय, सामाजिक बदलाव और परिवार में अंतराल के कारण संबंध बदल जाते हैं, और बुजुर्गों की भावनाएँ अक्सर अनदेखी रह जाती हैं। यह एक मार्मिक चित्रण है कि रिटायर होने के बाद भी व्यक्ति को अपने बच्चों और परिवार से उसी अपनापन की उम्मीद होती है जो कभी हुआ करता था, लेकिन बदलते समाज में यह अपेक्षा पूरी नहीं होती।

3.4.2.1 विशेषताएँ

3.4.2.1.1 गजाधर बाबू का व्यक्तित्व

स्नेही, धैर्यशील, समझदार, परिवार और बच्चों के लिए समर्पित।बच्चों की नाक-भौं और पत्नी की शिकायतों को भी वे सहन करते हैं।

3.4.2.1.2 बच्चों का रवैया

वे अपने स्वार्थ और इच्छाओं में इतने व्यस्त हैं कि पिता के अनुभव और भावनाओं की अवहेलना करते हैं।बड़े बेटे अमर की अलग रहने की इच्छा और छोटी बेटी बसंती की लापरवाह हरकतें पिता की भावनाओं को चोट पहुँचाती हैं।

3.4.2.1.3 समाज और परिवर्तित मूल्य

कहानी में दिखाया गया है कि बदलते सामाजिक और पारिवारिक मूल्यों के कारण बुजुर्गों का सम्मान कम होता जा रहा है।संयुक्त परिवार में पीढ़ियों के बीच संवाद और समझ की कमी दिखती है।

3.4.2.1.4 साहित्यिक शैली

उषा प्रियंवदा की लेखनी संवेदनशील और यथार्थपरक है। भावनाओं का मार्मिक चित्रण, संवाद और वर्णन पाठक को गजाधर बाबू के मानसिक और भावनात्मक अनुभवों में खींच लेते हैं।

Critical Overview / अवलोकन

कहानी 'वापसी' बुजुर्गों के अनुभव और पारिवारिक बदलावों का मार्मिक चित्रण करती है। गजाधर बाबू के माध्यम से लेखक ने यह दिखाया है कि रिटायर होने के बाद भी व्यक्ति अपने परिवार में अपनापन और सम्मान की उम्मीद करता है, लेकिन बदलते समय और सामाजिक मूल्यों के कारण यह अपेक्षा अक्सर पूरी नहीं होती। कहानी

SGOU

में बच्चों के स्वार्थी व्यवहार, पत्नी की उदासीनता और पारिवारिक असम्मान यह स्पष्ट करते हैं कि आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन पारिवारिक जीवन में कितनी गहरी छाप छोड़ते हैं।

उषा प्रियंवदा ने कहानी में बुजुर्गों की भावनाओं, उनकी धैर्यशीलता और समझदारी को बड़े संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत किया है। यह कहानी न केवल एक व्यक्तिगत अनुभव की व्यथा को दर्शाती है, बल्कि समाज में बदलते पारंपरिक और नैतिक मूल्यों, पीढ़ियों के अंतराल और परिवार में संवाद की कमी पर भी प्रकाश डालती है।

अंततः 'वापसी' पाठक को यह संदेश देती है कि समय और सामाजिक बदलाव के बावजूद पारिवारिक संबंधों में सम्मान, समझ और प्रेम बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। बुजुर्गों की भावनाओं का सम्मान और उनके अनुभवों की कदर करना परिवार और समाज की स्थिरता के लिए अनिवार्य है। यह कहानी संवेदनशीलता, सामाजिक जागरूकता और मानवीय मूल्यों का प्रतीक है।

Recap / पुनरावृत्ति

- गजाधर बाबू रेलवे में 35 वर्षों तक नौकरी करने के बाद रिटायर होकर घर लौटते हैं।
- वे परिवार के साथ समय बिताने और अपनापन महसूस करने की उम्मीद रखते हैं।
- घर पहुँचने पर बच्चों और पत्नी की उदासीनता उन्हें गहरा दुःख देती है।
- बच्चों में पिता के प्रति सम्मान और प्रेम की कमी साफ दिखाई देती है।
- परिवार की बैठक में उनके लिए अस्थायी चारपाई रखी जाती है, जो उनकी अनदेखी को दर्शाती है।
- बड़े बेटे अमर की अलग रहने की इच्छा गजाधर बाबू को मानसिक चोट पहुँचाती है।
- छोटी बेटी बसंती की लापरवाही और सहेली के प्रति झुकाव पिता के दिल को दुख पहुँचाता है।
- गजाधर बाबू धैर्य और समझदारी से सभी कठिनाइयाँ सहन करते हैं, बिना किसी बड़ी शिकायत के।
- कहानी बुजुर्गों के भावनात्मक संघर्ष और परिवार में बदलते सामाजिक मूल्य को उजागर करती है।
- अंत में यह संदेश मिलता है कि समय और समाज के बदलाव के कारण रिश्ते बदल जाते हैं, लेकिन बुजुर्गों का सम्मान बनाए रखना आवश्यक है।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. उषा प्रियंवदा का जन्म कहाँ हुआ था?
2. उषा प्रियंवदा को 2007 में कौन सा सम्मान मिला था?
3. गजाधर बाबू कितने साल रेलवे में काम किये थे?
4. गजाधर बाबू के कुल कितने बच्चे थे?

SGOU

5. वापसी कहानी के नायक कौन हैं?
6. वापसी कहानी के लेखक कौन हैं?
7. गजाधर बाबू कहाँ काम करता था?
8. गजाधर बाबू किस नौकरी से सेवानिवृत्त हुए थे?

Answers/ उत्तर

1. कानपुर
2. पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार
3. पैंतीस साल (35)
4. कुल चार बच्चे थे
5. गजाधर बाबू
6. उषा प्रियंवदा
7. रेलवे में
8. रेलवे स्टेशन मास्टर

Assignments/ प्रदत्त कार्य

1. हिंदी साहित्य में उषा प्रियंवदा के योगदान पर चर्चा कीजिए।
2. वापसी' कहानी में व्यक्त समस्या पर चर्चा कीजिए।
3. 'वापसी' कहानी में प्रस्तुत पात्रों का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. कहानी की कहानी - डॉ. इन्द्रनाथमदान।
2. कथाकार अज्ञेय - डॉ. चंद्रकांत।
3. हिन्दी कहानी का विकास - डॉ. मधुरेश।
4. नईकहानी : उपलब्धि और सीमाएँ - शेखावतगोरधनसिंह।
5. हिन्दी कहानी : पहचान और परख -डॉ. इन्द्रनाथमदान।
6. हिन्दी कहानी और कहानीकार - प्रो. वासुदेव।

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

BLOCK - 04

संरचनात्मक व्याकरण

SOU

इकाई : 1
शब्द विचार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- शब्द विचार का परिचय प्राप्त करता है।
- व्याकरणिक आधार पर शब्दों के भेदों की जानकारी प्राप्त करता है।
- शब्दविचार का वर्गीकरण समझता है।
- अर्थ, रचना, व्युत्पत्ती के आधार पर शब्द विचार की जानकारी प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

एक अक्षर या अधिक अक्षरों का समुदाय, जिस का कोई अर्थ हो वह 'शब्द' कहलाता है। शब्श दो प्रकार के होते हैं। हिन्दी व्याकरण का वह भाग जिस में शब्द के शुद्ध उच्चारण, शुद्ध लेखन की विवेचना की जाती है उसे शब्द विचार कहते हैं। इसके अंतर्गत शब्द की परिभाषा, भेद -उपभेद, संधि, विच्छेद, रूपांतरण, निर्माण आदि से सम्बंधित नियमों पर विचार किया जाता है। शब्द विचार के अध्ययन से पहले भाषा और व्याकरण की मूलभूत जानकारी होना आवश्यक है। यह समझना चाहिए कि भाषा शब्दों से मिलकर बनती है और व्याकरण उन शब्दों के प्रयोग के नियम बताता है। शब्द क्या होता है और उसका अर्थ कैसे व्यक्त होता है, इसका ज्ञान होना चाहिए। साथ ही वर्ण और अक्षर का भेद, तथा वर्णमाला का सही ज्ञान भी आवश्यक है क्योंकि शब्द इन्हीं से निर्मित होते हैं। यह भी पता होना चाहिए कि शब्द कैसे बनते हैं – जैसे मूल शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय आदि से – ताकि वे शब्द निर्माण की प्रक्रिया को समझ सकें। संधि और समास का सामान्य परिचय भी उपयोगी रहता है, क्योंकि ये शब्दों के मेल-जोल से बने नए रूपों को समझने में सहायता करते हैं। इसके अतिरिक्त, संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण आदि शब्दों के भेद तथा पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थक शब्दों जैसी अर्थगत भिन्नताओं का भी ज्ञान होना चाहिए। अंत में, शुद्ध लेखन और सही उच्चार का अभ्यास आवश्यक है ताकि शब्दों का सही प्रयोग कर सकें और भाषा की सौंदर्यता बनाए रख सकें।

Keywords / मुख्य बिन्दु

वाचक शब्द, लाक्षणिक शब्द, व्यंजक शब्द, रूढ शब्द, यौगिक शब्द, योग रूढ़, तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, देशज शब्द।

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Discussion / चर्चा

4.1.1 शब्द विचार

शब्दों की उत्पत्ति, प्रकार, रूप, रूपांतर आदि के अध्ययन को शब्द विचार कहते हैं। एक या एक से अधिक अक्षरों के सार्थक योग को शब्द कहते हैं।

उदा : – आ, चलो, राम

हिन्दी शब्दों के विभाजन चार आधारों पर किया जाता हैं : –

1. अर्थ के आधार पर
2. व्युत्पत्ति के आधार पर
3. उत्पत्ति के आधार पर
4. वाक्य में प्रयोग करने के आधार पर

4.1.1.1 अर्थ के आधार पर

अर्थ के आधार पर शब्दों के तीन भेद होते हैं: –

1. वाचक शब्द
2. लाक्षणिक शब्द
3. व्यंजक शब्द

4.1.1.1.1 वाचक शब्द

आसानी से समझ में आने वाले और एक मुख्य अर्थ होने वाले शब्द को वाचक शब्द कहते हैं।

उदाहरण : – यमुना, राम, कहाँ, दौड़ना

4.1.1.1.2 लाक्षणिक शब्द

जिस शब्द में प्रधान अर्थ के साथ अप्रधान अर्थ भी प्रकट होता है, उसे लाक्षणिक शब्द कहते हैं। इस में लक्षण के अनुसार अर्थ आता है।

उदा : – अरुण गधा है। (यहाँ गधे की मूर्खता का आरोप अरुण पर किया गया है। वास्तव में अरुण गधा नहीं है। उस पर गधे की मूर्खता का आरोप करने से यह लाक्षणिक शब्द बन गये है।)

4.1.1.1.3 व्यंजक शब्द

मुख्य और लाक्षणिक अर्थ न होकर एक नया गूढ़ अथवा सांकेतिक अर्थ आता है तो उसे व्यंजक शब्द कहते हैं।

उदा : – तुम बड़े बहादुर हो। (यहाँ बहादुर शब्द डर को सूचित करता है।)

4.1.1.2 व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द के भेद

व्युत्पत्ति के अनुसार शब्दों को तीन प्रकार से विभाजित कर सकते हैं : –

1. रूढ़ शब्द
2. यौगिक शब्द
3. योगरूढ़ शब्द

4.1.1.2.1 रूढ़ शब्द

कुछ शब्दों का विभाजन नहीं किया जा सकता है, ऐसे शब्द को रूढ़ शब्द कहते हैं। अथवा विभाजन करते समय यथार्थ अर्थ नहीं मिलता है तो उसे रूढ़ शब्द कहते हैं।

उदा: – पैर (पैर शब्द का विभाजन पैअर के रूप में करता तो'पै' या 'र' को कोई अर्थ नहीं मिलता है।

आँख (आँख शब्द का विभाजन आँअख के रूप में करता तो 'आँ' या 'ख' को कोई अर्थ नहीं मिलता है)

सिर (सिर शब्द का विभाजन सिअर के रूप में करता है तो 'सि' या 'र' को कोई अर्थ नहीं मिलता है।)

कान (कान शब्द का विभाजन का + नके रूप में करता है 'का' या 'न' को कोई अर्थ नहीं मिलता है।)

पानी (पानी शब्द का विभाजन पाअनी के रूपमें करता है 'पा' या 'नी' को कोई अर्थ नहीं मिलता है।)

नदी (नदी शब्द का विभाजन नअदी के रूप में करता है तो 'न' या 'दी' को कोई अर्थ नहीं मिलता है।)

घोड़ा (घोड़ा शब्द का विभाजन घोअड़ा के रूप में करता है 'घो' या 'डा' को कोई अर्थ नहीं मिलता है।)

4.1.1.2.1 यौगिक शब्द

दो शब्दों के मिलन (योग) से बननेवाले शब्द को यौगिक शब्द कहते हैं। (इसमें अलग रहते समय और मिलते समय सही अर्थ होता है।)

उदाः – दूधवाला (दूध + वाला = दूधवाला)

पाठशाला (पाठ + शाला = पाठशाला)

विद्यालय (विद्या + आलय = विद्यालय)

4.1.1.2.3 योगरूढ़

दो या दो से अधिक शब्दों से बनकर यथार्थ अर्थ के बदले नया अर्थ पैदा करने वाले शब्द को योगरूढ़ शब्द कहते हैं।

उदा : पंकज – पंक + ज अर्थात कीचड से उत्पन्न, सामान्य अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ है कमल

4.1.1.3 उत्पत्ति के आधार पर

उत्पत्ति के आधार पर शब्द चार प्रकार के हो सकते हैं –

1. तत्सम शब्द
2. तद्भव शब्द
3. देशज शब्द
4. विदेशज (विदेशी) शब्द

4.1.1.3.1 तत्सम शब्द

किसी भी प्रकार के परिवर्तन के बिना सीधे हिन्दी में आये संस्कृत शब्दों को तत्सम शब्द कहते हैं।

संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते है, तत्सम कहलाते हैं।

उदा : – ग्राम, पुत्र, पौत्र, अग्नि, स्वर्ग, पृथ्वी, भ्रातृ, रात्रि, अक्षि, ओष्ठ, कर्म, गृह, धैर्य, नव्य, पुष्प

4.1.1.3.2 तद्भव शब्द

संस्कृत से कुछ परिवर्तन के साथ हिन्दीमें उपयोग करने वाले शब्दों को तद्भव शब्द कहते हैं।

उदा : –

1. संस्कृत के तत्सम शब्द - आम्र हिन्दी में तद्भव - आम
2. संस्कृत के तत्सम शब्द - अग्नि हिन्दी में – आग
3. संस्कृत के तत्सम शब्द - नव्य हिन्दी में – नया
4. संस्कृत के तत्सम शब्द - दुग्ध हिन्दी में – दूध
5. संस्कृत के तत्सम शब्द - दधि हिन्दी में – दही
6. संस्कृत के तत्समशब्द - दन्तहिन्दी में – दाँत
7. संस्कृत के तत्सम शब्द - शत हिन्दी में – सौ
8. संस्कृत के तत्सम शब्द - हस्त हिन्दी में – हाथ
9. संस्कृत के तत्सम शब्द - अक्षि हिन्दी में – आँख
10. संस्कृत के तत्सम शब्द - आसरा हिन्दी में – आश्रय
11. संस्कृत के तत्सम शब्द - ओष्ठ हिन्दी में – ओंठ
12. संस्कृत के तत्सम कर्म - शब्द हिन्दी में – काम
13. संस्कृत के तत्सम शब्द - गृह हिन्दी में – घर
14. संस्कृत के तत्सम शब्द - घृत हिन्दी में – घी
15. संस्कृत के तत्सम शब्द - भ्रातृ हिन्दी में – भाई
16. संस्कृत के तत्सम शब्द - पृष्ठ हिन्दी में – पीठ
17. संस्कृत के तत्सम शब्द - पौत्र हिन्दी में – पोता
18. संस्कृत के तत्सम शब्द - पुष्प हिन्दी में – फूल

4.1.1.3.3 देशज शब्द

वे शब्द हैं जो न संस्कृत के हैं, न संस्कृत से बने हैं और न ही विदेशी हैं। वे इस देश की अपनी उपज हैं।

उदा : – चिड़िया, खिड़की, लोटा, कपड़ा

4.1.1.3.4 विदेशज (विदेशी) शब्द

अंग्रेजी, अरबी, फारसी, तुर्की, फ्रांसीसी जैसे भारत के बाहर की भाषाओं से हिन्दी की ओर आये शब्दों को विदेशज (विदेशी) शब्द कहते हैं।

उदा : – इंजन, जिला, किताब, हकीम, आदत, तहसील, गवाह, दरवाजा, चालाक, ट्रेन, बेंच, अखबार, आखिर, चादर, दफ्तर, अफसर, पिकनिक, टिकट, चम्मच, उम्र, औरत, नशा, तबादला, चाय, ट्रेन, होटल।

SGOU

Critical Overview / अवलोकन

वर्ण भाषा का मूल आधार है। एक या एक से अधिक वर्णों / ध्वनि से बनी सार्थक एवं स्वतंत्र ध्वनी को शब्द कहते हैं। हिन्दी व्याकरण वह शास्त्र है जो हिन्दी भाषा को शुद्ध रूप में बोलने और लिखने सम्बधी नियमों का बोध करता है। हिन्दी भाषा को शुद्ध रूप से समझने, लिखने और बोलने केलिए हिन्दी व्याकरण के नियमों को अच्छे तरीके से समझना अति आवश्यक है।

Recap / पुनरावृत्ति

- शब्दविचार का परिचय।
- शब्द विचार की उत्पत्ती।
- शब्दों का विभाजन।
- शब्दों के प्रकार।
- शब्दों के भेद।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्दी में शब्दों के विभाजन कितने आधार पर किया गया है?
2. अर्थ के आधार पर शब्द के कितने भेद हैं?
3. व्युत्पत्ती के अनुसार शब्द के भेद क्या क्या हैं?
4. भारत के बाहर की भाषाओं से हिन्दी की ओर आये शब्दों को क्या कहते हैं?
5. अपने ही देश की भाषाओं से हिन्दी की ओर आये शब्दों को क्या कहते हैं?
6. आसानी से समझ में आनेवाले और एक मुख्य अर्थ होने वाले शब्द को क्या कहते हैं?
7. तत्सम शब्द के दो उदहारण दीजिए?
8. एक या एक से अधिक अक्षरों के सार्थक योग को क्या कहते हैं।

Answers/ उत्तर

1. चार।
2. तीन।
3. रूढ़ शब्द, यौगिक शब्द, योगरूढ़ शब्द।

SGOU

4. विदेशज शब्द। (विदेश)
5. देशज शब्द।
6. वाचक शब्द।
7. पुत्र, गृह।
8. शब्द।

Assignments/ प्रदत्त कार्य

1. शब्द विचार की परिभाषा देते हुए उस का वर्गीकरण दीजिए।
2. शब्द किसे कहते हैं? अर्थ के आधार पर शब्दों के कितने भेद हैं?
3. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के भेदों को सोदाहरण समझाइए।
4. हिन्दी व्याकरण में शब्द विचार का स्थान क्या है ?
5. तत्सम शब्द के उदाहरण देकर उसको स्पष्ट कीजिए।
6. 'वर्ण भाषा का मूलआधार है' इस विषय पर आलेख तैयार कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी व्याकरण - आचार्य कामता प्रसाद गुरु।
2. सामान्य हिन्दी व्याकरण - श्रीकृष्ण पाण्डेय।
3. व्यवहारिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना - हरदेव बाहरी।
4. व्यवहारिक हिन्दी व्याकरण अनुवाद तथा रचना -डॉ .एच .परमेश्वरन।

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई : 2
संज्ञा, लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम, विशेषण

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- संज्ञा के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।
- संज्ञा के भेद को समझता है।
- सर्वनाम को समझता है।
- विशेषण का परिचय मिलता है।
- सर्वनाम और विशेषण के भेदों को समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

व्याकरण के द्वारा हमें किसी भाषा का शुद्ध रूप समझ में आता है। व्याकरण भाषा के अध्ययन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इन विषयों का अध्ययन करने से पहले विद्यार्थियों को भाषा और व्याकरण की बुनियादी जानकारी होना आवश्यक है। उन्हें यह समझना चाहिए कि शब्द क्या होते हैं और वे वाक्य में किस प्रकार प्रयोग किए जाते हैं। वर्ण और शब्द का सही ज्ञान होना चाहिए ताकि वे शब्दों को पहचान सकें और उनके अर्थ समझ सकें। वाक्य रचना का थोड़ा ज्ञान भी आवश्यक है, जिससे यह पता चल सके कि कौन-सा शब्द वाक्य में किस काम आता है। इसके साथ ही विद्यार्थियों को संज्ञा और क्रिया जैसे शब्दों का सामान्य परिचय होना चाहिए, ताकि वे लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम और विशेषण जैसे व्याकरणिक तत्वों को सही रूप से समझ सकें। शुद्ध उच्चारण, सही वर्तनी और अर्थ समझने की आदत भी जरूरी है, क्योंकि यही आगे इन विषयों के अध्ययन को आसान और रोचक बनाती है।

SGOU

Keywords / मुख्य बिन्दु

संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा, सर्वनाम, पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम, निजवाचक सर्वनाम, निश्चय वाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम, पुरुषवाचक और निजवाचक, विशेषण, विशेष्य, संख्यावाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, विशेषणों के रुपांतरण।

Discussion / चर्चा

4.2.1 संज्ञा

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव, जाति, अवस्था आदि के नाम के बारे में बोध कराने वाले शब्द के रूप को संज्ञा कहते हैं। इसे अंग्रेजी में Noun कहतेहैं।

उदाः – अरुण, पुस्तक, यमुना, चीन, दिल्ली, दया, मुंबई

संज्ञा विकारी (Changeable) शब्द है।

संज्ञा तीन प्रकार के होते हैं: –

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

1. व्यक्ति वाचक संज्ञा (Proper noun)

2. जातिवाचक संज्ञा (Common noun)

3. भाववाचक संज्ञा (Abstract noun)

4.2.1.1 व्यक्तिवाचक संज्ञा

किसी एक विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के नाम सूचित करने वाले संज्ञा के रूप को व्यक्ति वाचक संज्ञा कहते हैं।

उदा :- अनन्तु, रामायण, कोलकत्ता, कालिकट, ताजमहल।

4.2.1.2 जातिवाचक संज्ञा

एक जाति के संपूर्ण प्राणियों अथवा वस्तुओं के नाम सूचित करने वाले संज्ञा के रूप को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदा : – मनुष्य, गाय, पहाड़, पशु, पुस्तक, नदी, जानवर

4.2.1.3 भाव वाचक संज्ञा

पदार्थ के गुण, दोष, अवस्था, स्थिति, व्यापार आदि के बारे में बोध कराने वाले संज्ञा के रूप को भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

उदा:– हंसी, रुलाई, मिठास, खुशी, चतुराई, बुढ़ापा, शोक, लड़कपन, चोरी।

भाववाचक संज्ञाएँ जाति वाचक संज्ञा से, विशेषण से और क्रिया से बनती है।

उदा : – जातिवाचक संज्ञा से : –

मनुष्य	>	मनुष्यत्व
बूढ़ा	>	बुढ़ापा
लड़का	>	लड़कपन
पंडित	>	पांडित्य
दोस्त	>	दोस्ती
आदमी	>	आदमियत
गुरु	>	गुरुत्व
बच्चा	>	बचपन
शिशु	>	शैशव
ईश्वर	>	ऐश्वर्य
युवक	>	यौवन

उदा: – विशेषण से -

रंग	>	रंगीन
महान	>	महानता
काला	>	कालापन
आलसी	>	आलस्य
विधवा	>	वैधव्य
उचित	>	औचित्य
गरम	>	गरमी
तपस्वी	>	तपस्या
वीर	>	वीरता
सफेद	>	सफेदी
सुन्दर	>	सौन्दर्य

उदा: – क्रिया से –

पढ़ना	>	पढ़ाई
पूजना	>	पूजा
चलाना	>	चाल, चलन
उठना	>	उठाई
गिरना	>	गिरावट
लड़ना	>	लड़ाई
दौड़ना	>	दौड़
बोलना	>	बोल
हँसना	>	हँसी
चुनना	>	चुनाव

SGOU

भूखा > भूख

4.2.2 संज्ञाओं के रूपांतर

लिंग, वचन और कारक के कारण संज्ञाओं में होने वाले विकार (परिवर्तन) को संज्ञाओं के रूपांतर कहते हैं।

लिंग के कारण

लड़का खेलता है > लड़की खेलती है।

बच्चा आता हैं > बच्ची आती है।

अध्यापक पढ़ाता है > अध्यापिका पढ़ाती है।

वचन के कारण

लड़का खेलता है > लड़के खेलते हैं।

अध्यापक पढ़ाता है > अध्यापक पढ़ाते हैं।

बच्चा आता हैं > बच्चे आते हैं।

कारक के कारण

लड़का खेलता हैं। > लड़के को खेलने दो।

4.2.3 सर्वनाम

संज्ञा की पुनरुक्ति (आवृत्ति) को दूर करने के लिए उसके अर्थ में प्रयोग करने वाले विशेष शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

अथवा : – संज्ञा के बदले प्रयोग करने वाले विकारी शब्द को सर्वनाम कहते हैं।

सर्वनाम शब्द का अर्थ है – सबका नाम।

उदा : – मैं, हम, तू, तुम, वह, यह, कोई, आप, कुछ, जो, आदि।

शरण किरण से कहा कि मैं तुमसे सबेरे मिलूँगा।

(ऊपर दिये वाक्य में 'मैं' और 'तुम' सर्वनाम हैं। इधर सर्वनाम का प्रयोग न होता तो वाक्य इस प्रकार होता:– 'शरण किरण से कहा कि शरण किरण से सबेरे मिलेगा' – इससे शब्दों की आवृत्ति आती है जो भाषा के सौन्दर्य में बाधा आ जाता है, इसलिए सर्वनाम का प्रयोग होता है।

सर्वनाम विकारी (Changeable) शब्द है। वचन और कारक के कारण सर्वनाम में रूपांतर होता है। सर्वनाम लिंग भेद के सिवा सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं।

प्रयोग के अनुसार सर्वनाम के छः भेद हैं : –

1. पुरुषवाचक सर्वनाम- (मैं, तू, तुम, आप हम, यह, वह ये, वे)
2. निजवाचक सर्वनाम (– आप)
3. निश्चयवाचक सर्वनाम (यह, वह ये, वे)
4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम (कोई, कुछ)
5. सम्बन्धवाचक सर्वनाम (जो, सो)
6. प्रश्नवाचक सर्वनाम (कौन, क्या)

4.2.3.1 पुरुष वाचक सर्वनाम

बोलने वाले, सुनने वाले तथा अन्य व्यक्ति को सूचित करने वाले सर्वनाम को पुरुष वाचक सर्वनाम कहते हैं।

उदा: – मैं, तुम, हम, आप, यह, वह, ये, वे

पुरुष वाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते है: –

1. उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम
2. मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम
3. अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम

4.2.3.1.1 उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम

बोलने वाले या लिखने वाले के स्थान पर प्रयोग करने वाले सर्वनाम को उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम कहते हैं। (मैं, हम)

उदा: – मैं पढ़ रहा हूँ।

मैं लिखता हूँ।

हम पढ़ चुके हैं।

हम लिखते हैं।

4.2.3.1.2 मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम

सुनने वाले के लिए प्रयुक्त सर्वनाम को मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम कहते हैं। इसका प्रत्यय (चिह्न)

SGOU

(तू, तुम, आप)

उदाः – तू पढ़ रहा है।

तू क्या कह रहा है?

तुम जाओ।

तुम इधर आओ।

आप कहाँ जा रहे हैं?

आप जाइये।

4.2.3.1.3 अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम

जिसके विषय में कुछ कहा जाये या लिखा जाये, उस के लिए प्रयोग करने वाले सर्वनाम को अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम कहते हैं। इसका चिह्न यह, वह, ये, वे है।

उदाः –

यह राहुल है

वह पढ़ती है।

ये शामको सिनेमा देखते हैं ।

वे अनाथ बच्चे हैं।

4.2.3.2 निजवाचक सर्वनाम

अपने आप (स्वयं) के लिए प्रयोग करने वाले सर्वनाम को निज वाचक सर्वनाम कहते हैं। इसका चिह्न आप है।

उदाः – मैं आप (स्वयं)यह काम करूँगा।

मैं खुद लिख लूंगा।

मैंने यह रोटी आप बनायी है।

यह अपना ही घर है।

वरुण आप गाड़ी चलाकर आया।

वह अपने आप यहाँ आया।

वह अपना काम अपने आप करती है।

4.2.3.3 निश्चयवाचक सर्वनाम

किसी व्यक्ति या वस्तु की निश्चित सूचना देने वाले सर्वनाम को निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। इसका चिह्न यह, वह, ये, वे है।

उदाः – यह मेरा किताब है।

यह किसकी किताब है।

वह उसकी कलम है।

ये पुरानी किला है।

वे किताबें हैं

4.2.3.4 अनिश्चय वाचक सर्वनाम

किसी अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु के बारे में सूचना देने वाले सर्वनाम को अनिश्चय वाचक सर्वनाम कहते हैं। (कोई, कुछ)

उदाः– यहाँ कोई आ रहा है।

रसोई पर कोई है।

कोई गा रहा है।

खिड़की के सामने कुछ चमक रहा है।

चाय में कुछ गिर गया है।

खड़े हुए लोगों में किसी ने उसे मारा।

कक्षा में कुछ पड़ा है।

4.2.3.5 सम्बन्धवाचक सर्वनाम

दो व्यक्तियों, दो वस्तुओं या दोबातों को परस्पर संबंध करने वाले सर्वनाम को सम्बन्ध वाचक सर्वनाम कहते हैं। (जो सो)।

उदाः – जो अच्छा पढ़ेगा सो परीक्षा में उत्तीर्ण होता।

जो सच्चा मित्र है सो सहायता करेगा।

जिसकी लाठी उसकी भैंस।

जैसा करोगे वैस भरोगे।

जो पैसा मिलता सो सिनेमा देखता।

4.2.3.6 प्रश्नवाचक सर्वनाम

प्रश्न (सवाल) का बोध कराने वाले सर्वनाम को प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

SGOU

उदाः – वहाँ कौन सोता है?

तुम कौन हो?

तुम्हें क्या चाहिए?

क्या मैं अन्दर आऊँ?

यह कलम किसकी है?

बर्तन में क्या रखा है?

कौन-कौन आये हैं?

वे क्या – क्या ले आये?

पुरुषवाचक आप और निजवाचक आप में अन्तर

4.2.4 पुरुष वाचक आप शब्द

आप, आपने	आप लोग, आप लोगों ने
आपको	आप लोगों को
आप से	आप लोगों से
आपको, आप के लिए	आप लोगों को, आप लोगों के लिए

आपका, आपकेआप लोगों का, आप लोगों के

आपकी आप लोगों की

आप में आप पर आप लोगों में, आप लोगों पर

4.2.5 निजवाचक आप शब्द

आप (इसका बहुवचन नहीं होता)

आपको, अपने को, अपने आपको

आपसे, अपने से, अपने आपसे

आपको, अपने को, अपने आपको

आपसे, अपने से, अपने आप से

अपना, अपने, अपनी

आपमें, अपने में, अपने आप में

आप पर, अपने पर, अपने आप पर

4.2.6 विशेषण

वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

उदाः– लम्बा आदमी, काली बिल्ली, लाल किताब, अच्छा लड़का, चौड़ारास्ता, पुराना किला।

(ऊपर दिये उदाहरणों में लम्बा, काली, लाल, अच्छा, चौड़ा, पुराना आदि शब्द उनके साथ की संज्ञाओं की विशेषता को व्यक्त करते हैं। अथवा ये विशेषण हैं।)

4.2.7 विशेष्य

विशेषण के द्वारा जिस शब्द की विशेषता प्रकट होते हो, उसे विशेष्य कहते हैं।

(लम्बा आदमी, काली बिल्ली, लाल किताब, अच्छा लड़का, चौड़ा रास्ता, पुरानाकिला-इन वाक्यों में आदमी, बिल्ली, किताब, लड़का, रास्ता, किला आदि विशेष्य हैं।)

विशेषण विकारी (Changeable) शब्द है। लिंग और वचन के अनुसार विशेषण में परिवर्तन होता है।

उदाः– एकवचन में – अच्छा लड़का।

बहुवचनमें – अच्छे लड़के।

पुल्लिंग के अनुसार – अच्छा लड़का।

स्त्रीलिंग के अनुसार – अच्छी लड़की।

विशेषण चार प्रकार के होते हैं: –

1. गुण वाचक विशेषण
2. संख्या वाचक विशेषण
3. परिमाण वाचक विशेषण
4. सार्वनामिक विशेषण

4.2.7.1 गुणवाचक विशेषण

संज्ञा या सर्वनाम के रूप, रंग, गुण, आकार, दशा, स्थान, काल आदि की विशेषता प्रकट करने वाले विशेषण को गुण वाचक विशेषण कहते हैं।

उदाः – (गुण) - भला आदमी, बुरा लड़का, दुष्ट

SGOU

जन, अच्छा लड़का, बलवान आदमी, विद्वान लोग।

(रंग) - सफेद कपड़ा, लाल किला, धुंधला आसमान

(दशा) - अमीर लोग, गरीब आदमी, मोटालड़का, पतला कमरा

(आकार) - लम्बा आदमी, चौड़ा सड़क, सीधे रूप

(काल) - पिछले साल, प्राचीन गुफा, अगला आदमी

(स्थान) - भारतीय इतिहास, दायें हाथ, ऊपरी कमरे

4.2.7.2 संख्यावाचक विशेषण

संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध कराने वाले विशेषण को संख्या वाचक विशेषण कहते हैं।

उदाः – एक रुपया, पाँच बालक, आधा पेट, पहला लड़का, तीनों बच्चे, चारों तरफ, थोड़ा चावल, इतना चीज़, ज़रा-सा नमक।

संख्या वाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं : –

1. निश्चित संख्या वाचक विशेषण
2. अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण

1. निश्चित संख्या वाचक विशेषण

किसी निश्चित संख्या का बोध करानेवाले विशेषण

को निश्चित संख्या वाचक विशेषण कहते हैं।

उदा : – एक, सौ, लाख, पहला, दूसरा, तीसरा, दुगुना, तिगुना, चौगुना, दोनों, चारों प्रति

निश्चित संख्या वाचक विशेषण के 6 भेद होते हैः–

1. पूर्णांक बोधक, उदा :– एक, सौ, पाँच, लाख, करोड़
2. अपूर्णांक बोधक, उदाः- आधा, पाव, सवा
3. क्रमवाचक, उदा :- पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ, सातवाँ, दसवाँ
4. आवृत्तिवाचक, उदाः- दुगुना, तिगुना, चौगुना
5. समूहवाचक, उदाः- दोनों, चारों, दसों, हज़ारों, करोड़ों
6. प्रत्येक वाचक, उदा :- प्रति, प्रत्येक, हर एक

2. अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण

किसी अनिश्चित संख्या का बोध करानेवाले विशेषण को अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण कहते हैं।

उदा : – कुछ लोग, कई साल, अनेक समस्याएँ, थोड़ा, बहुत, काफी, ज्यादा।

4.2.7.3 परिमाणवाचक विशेषण

वस्तु की माप, तोल अथवा परिमाण का बोध कराने वाले विशेषण को परिमाण वाचक विशेषण कहते हैं।

परिमाण वाचक विशेषण दो प्रकार केहोते है : –

1. निश्चित परिमाण वाचकविशेषण
2. अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषण

उदा :– (निश्चित संख्या) – पाँच मन गेहूँ, एक किलो मांस, दो आम, एक लीटर दूध।

उदा :– (अनिश्चित संख्या) – मुझे बहुत मिला है, उसे कम आमदनी होती है।

4.2.7.4 सार्वनामिक विशेषण

सर्वनाम विशेषण के रूप में आकर संज्ञा की विशेषता प्रकट करता है तो उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

उदाःवह घर उसका है।

उस बच्चे का नाम क्या है?

वह साफ-सुधरा कमरा है।

यह लड़की कहाँ से आती हैं।

ये घेड़े मेरे हैं।

4.2.8 विशेषणों के रूपांतर

लिंग, वचन और कारक के कारण विशेषण में

SGOU

होनेवाले रूपांतर को विशेषणों के रूपांतर कहते हैं।

4.2.9 परिमाण वाचक विशेषण

उदाः – अच्छा – अच्छे – अच्छी

काला – काले – काली

नीला – नीले – नीली

Critical Overview / अवलोकन

भाषा सम्बन्धी ज्ञान केलिए व्याकरण की शिक्षा आवश्यक है। भाषा का सामान्य ज्ञान हो जाने पर ही व्याकरण की शिक्षा दी जाना चाहिए।

Recap / पुनरावृत्ति

- संज्ञा के भेद।
- संज्ञा के रूपांतरण।
- व्यक्तिवाचक संज्ञा।
- जातिवाचक संज्ञा।
- भाववाचक संज्ञा।
- सर्वनाम।
- विशेषण।
- 'ने' का प्रयोग।

SGOU

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. संज्ञा के कितने प्रकार हैं?
2. जातिवाचक संज्ञा का दो उदाहरण दीजिए।
3. सर्वनाम के कितने प्रकार हैं?
4. वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्दों को क्या कहते है?
5. विशेषण के कितने प्रकार हैं?
6. संख्यावाचक विशेषण के कितने प्रकार हैं?

7. लिंग, वचन और कारक के कारण विशेषण में होनेवाले रूपांतरण को क्या कहते हैं?
8. वस्तु की माप, तोल, अथवा परिमाण का बोध करानेवाले विशेषण को क्या कहते हैं?

Answers/ उत्तर

1. तीन प्रकार।
2. पहाड़, नदी।
3. छः भेद है।
4. विशेषण
5. चार प्रकार। गुणवाचक विशेषण, संख्या वाचक विशेषण, परिमाण वाचकविशेषण, और सार्वनामिक विशेषण।
6. दो प्रकार। निश्चित संख्या वाचक और अनिश्चितसंख्या वाचक।
7. विशेषणों के रूपांतरण कहते हैं।
8. परिमाण वाचक विशेषण।

Assignments/ प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी में समुदाय वाचक और द्रव्य वाचक संज्ञाएँ किस संज्ञा के अन्तर्गत आती हैं?
2. संज्ञा क्या है और संज्ञा के प्रकार व्यक्त कीजिए।
3. संज्ञा को समझते हुए संज्ञा के प्रकार और भेद की चर्चा कीजिए।
4. सर्वनाम के भेद को समझाइए।
5. विशेषण के रूपांतरण क्या है? समझाइए।
6. भाषा सम्बन्धी ज्ञान केलिए व्याकरण की शिक्षा आवश्यक है, स्पष्ट कीजिए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी व्याकरण - आचार्य कामता प्रसाद गुरु।
2. सामान्य हिन्दी व्याकरण - श्रीकृष्ण पाण्डेय।
3. व्यवहारिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना - हरदेव बाहरी।
4. व्यवहारिक हिन्दी व्याकरण अनुवाद तथा रचना -डॉ .एच .परमेश्वरन।

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई : 3

क्रिया, क्रिया विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादी बोधक और काल

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- क्रिया और काल को समझता है।
- क्रिया के सामान्य रूपका परिचय प्राप्त करता है।
- क्रिया के प्रकार को समझता है।
- 'ने' के प्रयोग को समझता है।
- 'काल' को समझता है।
- 'काल' के भेद को समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

इन विषयों को समझने से पहले विद्यार्थियों को भाषा और व्याकरण की सामान्य जानकारी होना आवश्यक है। उन्हें यह पता होना चाहिए कि शब्द वाक्य में किस प्रकार प्रयोग किए जाते हैं और उनका अर्थ कैसे बदलता है। वाक्य और शब्द भेद का सामान्य ज्ञान होना चाहिए, ताकि यह समझा जा सके कि कौन-सा शब्द कार्य करता है (जैसे क्रिया), कौन-सा शब्द क्रिया का गुण बताता है (जैसे क्रिया विशेषण), और कौन-से शब्द वाक्य के अन्य शब्दों को जोड़ने या संबंध बताने का काम करते हैं (जैसे संबंधबोधक और समुच्चयबोधक)। विद्यार्थियों को यह भी समझना चाहिए कि विस्मयादिबोधक शब्द भावनाओं को प्रकट करते हैं और काल (भूत, वर्तमान, भविष्य) समय का बोध कराते हैं। इसके साथ ही, सही वाक्य रचना, अर्थ की समझ, और शब्दों के उचित प्रयोग का अभ्यास होना चाहिए ताकि इन सभी विषयों को सरलता से सीखा जा सके।

SGOU

Keywords / मुख्य बिन्दु

क्रिया, कर्ता, कर्म, धातु, क्रिया का सामान्य रूप, सकर्मक क्रिया, अकर्मक क्रिया, द्विकर्मक क्रिया, प्रेरणार्थकक्रिया, मूल धातु, यौगिक धातु, नाम् धातु क्रिया, संयुक्त क्रिया, भूत काल, वर्त्तमानकाल, भविष्यत काल।

Discussion / चर्चा

4.3.1. क्रिया

किसी काम के करने या होने को सूचित करने वाले शब्द के रूप को क्रिया कहते हैं।

उदाः – बच्चे मैदान में खेल रहे हैं।

अध्यापक हिन्दी पढ़ाते हैं।

अमृता नाचती हैं।

मोहन खाना खाता हैं।

(कुछ काम स्वयं होता हैं और कुछ करना पड़ता है, दोनों क्रिया है।)

4.3.1.1 कर्ता

क्रिया या काम (प्रवृत्ति) करने वाले को कर्ता कहते हैं।

4.3.1.2 कर्म

कर्ता के द्वारा किये ने वाले काम को कर्म कहते हैं।

उदाः – आना, जाना, करना, लिखना, दौड़ना।

क्रिया विकारी (Changeable) शब्द है। यह लिंग, वचन और कारक के अनुसार परिवर्तित होती है।

4.3.1.3 धातु (Verb root)

शब्द के मूल रूप को धातु कहते हैं।

धातु के साथ विशेष प्रत्यय (चिह्न)लगाकर क्रिया बनाते हैं।

उदाः – आ + ना = आना (इसमें आ मूल रूप या धातु है, ना क्रिया का चिह्न है।)

जा + ना = जाना (इसमें जा मूल रूप या धातु है, ना क्रिया का चिह्न है।)

कर + ना = करना (इसमें कर मूल रूप या धातु है, ना क्रिया का चिह्न है।)

लिख + ना = लिखना (आ, जा, कर, लिख आदि शब्द के मूल रूप या धातु है। ऐसे मूल रूप के साथ क्रिया का प्रत्यय (चिह्न) ना मिलाते तो क्रिया बनते हैं।)

उदाः – पढ़ से पढ़ना

चढ़ से चढ़ना

उठ से उठना

नाच से नाचना

4.3.2 क्रिया का सामान्य रूप

धातु और प्रत्यय से बनने वाले रूपों को क्रिया के सामान्य रूप कहते हैं। संज्ञा के स्थान पर इन रूपों के प्रयोग को क्रियार्थकसंज्ञा (Verbal noun) कहते हैं।

उदाः – ऊँचे आवाज़ में हँसना अच्छा नहीं हैं।

मध्याहन में सोना अच्छी स्वभाव नहीं है।

क्रिया के प्रकार

क्रिया दो प्रकार के होते हैं –

1. सकर्मक क्रिया
2. अकर्मक क्रिया

4.3.2.1 सकर्मक क्रिया

क्रिया का फल कर्ता पर न पड़कर कर्मपर पड़ता है तो उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

उदाः – सीता ने आम खाया। (यहाँ क्रिया का फल आम पर पड़ता हैं, इसलिए सकर्मक क्रिया है।)

अमर व्याकरण पुस्तक पढ़ता हैं। (यहाँ क्रिया का फल पुस्तक पर पड़ता हैं, इसलिए क्रिया सकर्मक है।)

ममता दूध पीती है। (यहाँ क्रिया का फल दूध पर पड़ता हैं, इसलिए क्रिया सकर्मक है।)

4.3.2.2 अकर्मक क्रिया

क्रिया का फल कर्म पर न पड़कर कर्ता पर पड़ता है तो उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

उदाः– लड़की नाचती है।

सनल सोता है।

अमृता रोती है।

लड़का हँसता है।

बैल दौड़ता है।

(ऊपर दिये वाक्यों में क्रिया का फल - भोक्ता कर्ता है। इसलिए क्रिया अकर्मक है।)

4.3.3 सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं की पहचान

सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं की पहचान क्या, किसे या किसको आदि प्रश्न करने से होती है। यदि कुछ

उत्तर मिलता तो सकर्मक क्रिया और उत्तर न मिलता तो अकर्मक।

उदाहरण के लिए पढ़ता है क्रिया के साथ 'क्या' प्रश्न किये जाने पर – हिन्दी पढ़ता है, अंग्रेजी पढ़ता है, कन्नड़ा पढ़ता है जैसे उत्तर मिलता है तो सकर्मक क्रिया है।

इसी प्रकार- क्या, किसे, किसको – आदि प्रश्नों के उत्तर नहीं मिलता है तो क्रिया अकर्मक है।

(कुछ क्रियाएँ सकर्मक और अकर्मक, दोनों में समान रूप में होती है।)

उदाः – ललचाना, लजाना, खुजलाना, भरना, घबराना आदि।

4.3.4 द्विकर्मक क्रिया

कुछ क्रियाएँ पूर्ण होने के लिए दो कर्मों की आवश्यकता होती है, ऐसे क्रिया को द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

उदाः – दादी ने बच्ची को कविता सुनाई – इस वाक्य में दो कर्म हैं। इसमें पहले कर्म को मुख्य कर्म और दूसरे को गौण (अप्रधान) कर्म कहते हैं।

क्रिया का अधिक फल पड़ने वाला मुख्यकर्म और कम फल पड़ने वाला गौण (अप्रधान)है।

उदा : – विद्यार्थी को छात्रवृति दी – इस वाक्य में छात्रवृति मुख्यकर्म (कार्य) है और दिया गौण (अप्रधान) कर्म (कार्य) है।

(क्रिया से 'क्या' प्रश्न पूछने पर जो उत्तर मिलता है वह मुख्य कर्म है और 'किसे' या 'किसको' प्रश्न पूछने पर जो उत्तर मिलता है वह गौण कर्म है।)

4.3.5 प्रेरणार्थक क्रिया

क्रिया कर्ता स्वयं न करके, किसी की प्रेरणा से करता तो उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

उदाः – मालकिन नौकरानी से काम करवाती हैं।

मोहन ने बच्चे को सीढ़ियाँ चढ़ाया।

चलवाना, खिलवाना, नचवाना

मूल क्रिया	पहली प्रेरणार्थक क्रिया	दूसरी प्रेरणार्थक क्रिया
पीना	पिलाना	पिलवाना
खाना	खिलाना	खिलवाना
जीना	जिलाना	जिलवाना
चढ़ना	चढ़ाना	चढ़वाना
अकर्मक क्रिया	सकर्मक क्रिया	प्रेरणार्थक क्रिया
चमकना	चमकाना	चमकवाना
निकलना	निकलाना	निकलवाना
तड़पना	तड़पाना	तड़पवाना

4.3.6 व्युत्पत्ति के अनुसार क्रिया के भेद

व्युत्पत्ति (Origination) के अनुसार क्रिया के मूल धातु और यौगिक धातु नामक दो भेद होते हैं।

4.3.6.1 मूल धातु –

दूसरी धातुओं से स्वतंत्र रहने वाले धातु को मूल धातु कहते हैं।

आ, जा, पढ़, लिख, चल, उठ, खेल जैसे सब मूल धातु हैं।

4.3.6.2 यौगिक धातु –

अन्य धातुओं से निर्मित धातु को यौगिक धातु कहते हैं।

उदा :कर धातु से करा और करवा।

4.3.7 नाम धातु क्रिया

साधारण क्रिया के अलावा अन्य शब्दों में प्रत्यय (चिह्न) लगाकर क्रिया बनायी जाती हैं, ऐसी क्रिया को नाम धातु क्रिया कहते हैं।

उदाः – रंग + ना = रंगना

हाथ + ना = हथियाना

अपना + ना = अपनाना

शर्म + ना = शर्माना

स्वीकार + ना = स्वीकारना

दुःख + ना = दुःखाना

4.3.8 संयुक्त क्रिया

दो या दो से अधिक धातुओं को मिला (संयुक्त) कर बनानेवाली क्रिया को संयुक्त क्रिया कहते हैं।

उदाः – कह देना – इसमें कह, देना – दोनों क्रिया है।

(रमेश उमेश से कह दिया कि आज हड़ताल नहीं चलता।)

खा जाना – (नीता से पहले रीता ने खा लिया)

चिल्ला उठाना – (बुधिया की मृत्यु पर घीसू और माधव चिल्ला उठे)।

4.3.9 संबंध बोधक

संबंधबोधक वे अव्यय शब्द हैं जो संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जोड़ते हैं। ये शब्द संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उनका संबंध वाक्य के दूसरे पदों से बताते हैं और अक्सर 'के', 'से', 'की', 'को' जैसे परसर्गों के साथ आते हैं। उदाहरण के लिए, 'के ऊपर', 'के बिना', 'की ओर', 'के साथ' जैसे शब्द संबंधबोधक हैं।

संबंधबोधक के उदाहरणः

लाल किले पर तिरंगा लहरा रहा है।

घर के आगे बगीचा है।

राम के नाम के बिना सुख नहीं मिलता।

उसके साथ बच्चे भी गए।

ज्ञान के बिना जीवन बेकार है।

पेड़ के नीचे गाय है।

पुलिस स्टेशन के चारों ओर भीड़ इकट्ठी हो गई।

4.3.10 समुच्चय बोधक (Conjunction)

समुच्चयबोधक (Conjunction) वे अविकारी शब्द होते हैं जो दो या दो से अधिक शब्दों, वाक्यांशों (phrases) या वाक्यों (sentences) को आपस में जोड़ते हैं, इन्हें 'योजक' भी कहते हैं; जैसे 'और', 'लेकिन', 'या', 'क्योंकि', 'इसलिए' आदि, जो वाक्यों में संबंध स्थापित करते हैं और उन्हें एक पूर्ण अर्थ देते हैं। ये मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं: समानाधिकरण (समान शब्दों/वाक्यों को जोड़ना) और व्यधिकरण (प्रधान और आश्रित उपवाक्यों को जोड़ना)।

उदाहरण (Examples):

'और': राम और श्याम दोस्त हैं। (दो शब्दों को जोड़ा)

'लेकिन': मैं जाना चाहता था, लेकिन जा न सका। (दो वाक्यों को जोड़ा, विरोध प्रकट किया)

'या': तुम चाय पियोगे या कॉफी? (दो विकल्पों को जोड़ा)

'क्योंकि': वह स्कूल नहीं आया क्योंकि वह बीमार था। (कारण बताया)

'इसलिए': उसने मेहनत की, इसलिए सफल हुआ। (परिणाम बताया)

'यदि... तो': यदि तुम पढ़ोगे, तो पास हो जाओगे। (संकेत/शर्त बताई)

4.3.10.1 मुख्य भेद (Main Types):

1. **समानाधिकरण समुच्चयबोधक (Coordinating Conjunctions):** समान स्तर के शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ते हैं।

   संयोजकः और, एवं, तथा (जोड़ना)

   विभाजक/वियोजकः या, अथवा, या-या (विकल्प देना)

   विरोधसूचकः किंतु, परंतु, लेकिन, मगर (विरोध दिखाना)

   परिणामसूचकः अतः, इसलिए, फलतः (परिणाम बताना)

2. **व्यधिकरण समुच्चयबोधक (Subordinating Conjunctions):** एक मुख्य (प्रधान) वाक्य और एक या एक से अधिक आश्रित वाक्यों को जोड़ते हैं।

   कारणसूचकः क्योंकि, चूँकि, चूंकि (कारण बताना)

   संकेतसूचकः यदि-तो, यद्यपि तथापि, ज्योंही-त्योंही (संकेत/शर्त)

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

उद्देश्यसूचकः ताकि, जिससे (उद्देश्य बताना)

स्वरूपसूचकः कि, अर्थात, मानो (स्वरूप/अर्थ स्पष्ट करना)

संक्षेप में, समुच्चयबोधक ऐसे शब्द हैं जो भाषा में प्रवाह और स्पष्टता लाते हैं, वाक्यों को एक-दूसरे से जोड़कर उन्हें अर्थपूर्ण बनाते हैं।

4.3.11 विमस्यादि बोधक

विस्मय (आश्चर्य), हर्ष, शोक, आशीर्वाद आदि प्रकट करते हुए हम ऐसे शब्द बोल देते हैं जिसका वाक्य से कोई व्याकरणिक संबंध नहीं होता; जैसे-वाह! क्या बात है! हाय, यह क्या हो गया? 'वाह, हाय' आदि विमस्यादि बोधक अव्यय हैं।

क. अर्थ की दृष्टि से इनके मुख्य-मुख्य भेद ये हैं :-

- विस्मयसूचक-अरे, क्या, सच, ऐ, ओहो!
- हर्षसूचक-वाह, अहा, शाबाश, धन्य, जय!
- शोकसूचक-आह, ओह, हाँ, हाय, बाप रे, दइया रे!
- स्वीकारसूचक-ठीक, अच्छा, बहुत अच्छा, हाँ, हाँ हाँ।
- तिरस्कारसूचक-छिः, धिक, धत्, दुर, हट।
- अनुमोदनसूचक-हाँ हाँ, ठीक-ठीक, अच्छा, भला, अवश्य।
- आशीर्वादसूचक-जय हो, जियो।
- संबोधनसूचक-हे, रे, अरे, अरी, ऐ, ए, ओ, अजी।

इनका विशिष्ट अर्थ बोलने की रीति से प्रकट होता है।

ख. इन अव्ययों में संज्ञाएँ (राम राम! शाबाश!) (क्या), विशेषण (अच्छा, धन्य, ठीक, सच, भला!), क्रियाएँ (हट, जियो, चलचल), क्रियाविशेषण (दुर-दुर, क्यों, अवश्य), योजक (फिर, तो), वाक्य (क्या करें, ठीक है, न जाने - सब तरह के शब्द पाये जाते हैं।

4.3.12 काल

क्रिया के करने या होने के समय का बोध कराने वाले शब्द के रूप को काल कहते हैं। इससे क्रिया कब चला, चलता हैं या चलेगा, इसका पता मिलता है।

उदाः– लड़का आया था।

लड़का आता हैं।

लड़का आयेगा।

काल विकारी (Changeable) शब्द है। लिंग, वचन, कारक, वाच्य आदि के कारण काल का रूपान्तर होता है।

उदा :– विमल सोता है।

विमल सोया।

विमल सोएगा।

हिन्दी में काल तीन प्रकार के होते हैं –

1. भूतकाल
2. वर्तमान काल
3. भविष्यत् (भावी) काल

4.3.12.1 भूतकाल (Past Tense)

क्रिया के बीते हुए समय का बोध करानेवाले काल के रूप को भूतकाल कहते हैं।

– अथवा –

क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का पता चले, उसे भूतकाल कहते हैं।

उदाः– लड़का आया था।

राहुल कालिकट गया था।

वह खा चुका था।

मैंने पत्र लिखा था।

(भूतकाल का अर्थ है बीता हुआ। इससे क्रिया के कार्य के समाप्त होने का पता मिलताहै।)

भूतकाल 6 प्रकार के होते हैं : –

1. सामान्य भूतकाल

SGOU

2. आसन्न भूतकाल
3. पूर्ण भूतकाल
4. अपूर्ण भूतकाल
5. सन्दिग्ध भूतकाल
6. हेतुहेतुमद् भूतकाल

4.3.12.1.1 सामान्य भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से भूतकाल के किसी विशेष समय को निश्चय नहीं होता, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं।

उदा :–

गया, गये, गई, गईं।

4.3.12.1.2 आसन्न भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात है कि क्रिया का व्यापार अभी – अभी समाप्त हुआ है, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं।

उदा :– गया है, गये हैं, गई है, गई हैं।

4.3.12.1.3 पूर्ण भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात है कि क्रिया का व्यापार समाप्त हुए बहुत समय बीत चुका है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं।

उदा:– गया था, गये थे, गई थी, गई थीं।

4.3.12.1.4 अपूर्ण भूतकाल

क्रिया का व्यापार भूतकाल में रही थी, पर उसकी समाप्ति का पता न मिलता, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं।

उदा:– जाता था, जाते थे, जाती थी, जा रहा था, जा रहे थे, जा रही थी, जा रही थीं।

4.3.12.1.5 सन्दिग्ध भूतकाल

क्रिया बहुत समय पहले बीत चुका है, किन्तु उसके होने में कुछ संशय (सन्दिग्ध) होता है, उसे सन्दिग्ध भूतकाल कहते हैं।

उदा :– गया होगा, गयी होगी, गए होंगे, गयी होंगी, गया हूँगा, गयी हूँगी।

4.3.12.1.6 हेतुहेतुमद् भूतकाल

क्रिया का व्यापार भूतकाल में होना संभव था, पर किसी कारण से नहीं हुआ, उसे हेतुहेतुमद् भूतकाल कहते हैं।

उदा:– यदि वह आता तो मैं उससे मिलता।

पिताजी निर्देश देता तो बच्चा चुप रहता।

4.3.12.2 वर्तमानकाल (Present Tense)

क्रिया का व्यापार समाप्त नहीं हुआ है, काम अब भी चल रहा है, यह सूचित करने वाले काल के रूप को वर्तमान काल कहते हैं।

उदा: – मोहन पढ़ रहा है।

तुम सो रहे हो।

अनघ लिखता है।

वर्तमान काल तीन प्रकार के होते हैं –

1. सामान्य वर्तमान काल
2. संदिग्ध वर्तमान काल
3. तात्कालिक या अपूर्ण वर्तमान काल

4.3.12.2.1 सामान्य वर्तमान काल

क्रिया वर्तमान काल में होने की सूचना देने वाले काल को सामान्य वर्तमान काल कहते हैं।

उदा: – मैं पढ़ता हूँ।

तुम सोते हो।

लड़के खेलते हैं।

लड़की आती है।

4.3.12.2.2 संदिग्ध वर्तमान काल

क्रिया वर्तमान काल में होने की सूचना संदिग्धता (संशय) के साथ देने वाले काल को संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं।

उदा: – रमेश पढ़ता हूँगा।

अमर सोता होगा।

लड़के पढ़ते होंगे।

SGOU

4.3.12.2.3 तात्कालिक अथवा अपूर्ण वर्तमान काल

क्रिया का व्यापार शुरु हुआ है, किंतु अभी जारी है, उसे सूचित करने वाले काल को तात्कालिक या अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं।

उदाः – वे कपड़े पहन रहे हैं।

गाड़ी आ रही है।

अरुण खाना खा रहा है।

मैं पढ़ रहा हूँ।

वे पढ़ रहे हैं।

4.3.12.3 भविष्यत् काल (Future Tense)

आने वाले क्रिया की सूचना देने वाले काल के रूप को भविष्यत् काल कहते हैं।

उदाः – मैं जाऊँगा।

लड़के खेलेंगे।

वह आएगा।

लड़की आऊंगी।

भविष्यत् काल के दो भेद हैं –

1. सामान्य भविष्यत् काल
2. सम्भाव्य भविष्यत् काल

4.3.12.3.1 सामान्य भविष्यत् काल

क्रिया के आगे होने की सूचना मिलनेवाले भविष्यत् काल के रूप को सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं।

उदा : – मैं जाऊँगा।

तुम चलोगे।

लड़का खेलेगा।

लड़के खेलेंगे।

4.3.12.3.2 सम्भाव्य भविष्यत् काल

क्रिया भविष्य काल में होने की सम्भावना पायी जाये तो उसे सम्भाव्य भविष्यत् काल कहते हैं।

उदाः – आज शायद पानी बरसे।

शायद कल सुबह वह आ जाए।

ईश्वर हमारी रक्षा करें।

'ने' प्रत्यय का प्रयोग

हिन्दी में कुछ विशेष सन्दर्भों में कर्ता कारक को सूचित करने के लिए वाक्य में कर्ता के साथ ने प्रत्यय लगाते हैं।

'ने' प्रत्यय लगाने का नियम

1. सामान्य, आसन्न, संदिग्ध, पूर्ण भूत्कालों में सकर्मक क्रिया का प्रयोग करता है तो कर्ता के साथ ने प्रत्यय लगाते हैं।

उदाः – अनन्तु ने सबेरे आम खाया।

2. कर्ता के साथ 'ने' प्रत्यय लगाने पर क्रिया कर्म, लिंग और वचन का अनुसरण करती हैं।

उदाः – अनन्तु ने फल खाया।

अनन्तु ने दो फल खाए।

अनन्तु ने दो जलेबी खाई।

3. अगर कर्म के साथ को प्रत्यय लगा हो, अथवा वाक्य में कर्म अव्यक्त हो, तो क्रिया रूप पुल्लिंग एकवचन में रहता हैं।

उदाः – लड़कों ने बैल को पीटा।

अध्यापक ने विद्यार्थियों को बुलाया।

मैंने परीक्षा के लिए रात भर पढ़ा।

SGOU

Critical Overview / अवलोकन

'क्रिया' और 'काल' का अध्ययन हिन्दी व्याकरण में वाक्य संरचना केलिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। काल की जानकारी होने से वाक्य में घटित होनेवाली क्रियाओं के समय की पहचान कर सकते हैं, जैसे कि वाक्य में बताया हुआ कार्य करना है, या हो चूका है, या अभी भी जारी है।

Recap / पुनरावृत्ति

- क्रिया का प्रकार।
- काल को समझना।
- काल का भेद।
- वर्तमानकाल की जानकारी प्राप्त करना।
- भविष्य काल को समझना।
- भूतकाल और उनकी विशेषताएँ।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. काल कितने प्रकार के हैं?
2. क्रिया कितने प्रकार की हैं?
3. व्युत्पत्ति के आधार पर क्रिया के भेद कितने हैं?
4. क्रिया कैसे परिवर्तित होती है?
5. क्रिया का फल कर्ता परन पड़कर कर्म पर पड़ता है तो उसे क्या कहते हैं?
6. दो या दो से अधिक धातुओं को मिला कर बनानेवाली क्रिया को क्या कहते हैं?
7. कुछ क्रियाएँ पूर्ण होने केलिए दो कर्मों की आवश्यकता होती है। ऐसी क्रिया को क्या कहते है?

Answers/ उत्तर

1. तीन प्रकार, भूतकाल, वर्त्तमानकाल, भविष्य काल।
2. दो प्रकार, सकर्मक क्रिया, अकर्मक क्रिया।
3. दो भेद, मूल धातु और यौगिक धातु।
4. लिंग, वचन और कारक के अनुसार।

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

5. सकर्मक क्रिया।
6. संयुक्त क्रिया।
7. द्विकर्मक क्रिया

Assignments/ प्रदत्त कार्य

1. काल के विविध रूपों का सामान्य परिचय दीजिए।
2. भूतकाल के भेदों को सोदाहरण समझाइए।
3. 'ने' का प्रयोग उदाहरण देकर समझाइए।
4. वर्तमान काल से क्या तात्पर्य है, उसके भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
5. भविष्यत् काल से क्या तात्पर्य है, उसके भेदों को सोदाहरण समझाइए।

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी व्याकरण - आचार्य कामता प्रसाद गुरु।
2. सामान्य हिन्दी व्याकरण - श्रीकृष्ण पाण्डेय।
3. व्यवहारिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना - हरदेव बाहरी।
4. व्यवहारिक हिन्दी व्याकरण अनुवाद तथा रचना -डॉ .एच .परमेश्वरन।

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई : 4
व्याकरण के व्यावहारिक प्रयोग

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भाषा सिद्ध होने की प्रधानता समझता है।
- व्याकरण की प्रधानता समझता है।
- व्याकरण की विशेषताएँ समझता है।
- भाषा की अशुद्धियों को समझता है।
- सामान्य जीवन में प्रयुक्त भाषा की प्रधानता समझता है।
- विभिन्न वार्तालापों से परिचय प्राप्त करता है।
- विभिन्न अनुच्छेदों से परिचय प्राप्त करता है।
- एक अनुच्छेद मिले तो पहला इसका वाचन कर इसका ग्रहण करने का अवसर प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

व्याकरण के व्यावहारिक प्रयोग को समझने से पहले भाषा के मूल स्वरूप और उसके नियमों की सामान्य जानकारी होना आवश्यक है। उन्हें यह जानना चाहिए कि व्याकरण केवल नियमों का संग्रह नहीं, बल्कि भाषा को शुद्ध, स्पष्ट और प्रभावशाली बनाने का साधन है। विद्यार्थियों को शब्द, वाक्य और उनके प्रकारों का आधारभूत ज्ञान होना चाहिए ताकि वे यह समझ सकें कि किस प्रकार व्याकरण के नियम वाक्य निर्माण और बोलचाल में लागू होते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, लिंग, वचन, कारक, काल आदि व्याकरणिक तत्वों की समझ होना जरूरी है, क्योंकि इन्हीं के प्रयोग से वाक्य शुद्ध बनते हैं। साथ ही, सही उच्चारण, वर्तनी और भाषा प्रयोग का अभ्यास भी आवश्यक है, जिससे लेखन, पठन और वाचन में व्याकरण के नियमों का सही उपयोग कर सकें। इस प्रकार व्याकरण का व्यावहारिक ज्ञान भाषा को निखारने और अभिव्यक्ति को सशक्त बनाने में सहायक होता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

तू, तुम, आप, बहुवचन, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, वार्तालाप

SGOU

Discussion / चर्चा

4.4.1 शुद्ध कीजिए

'तू, तुम, आप' का प्रयोग देखिए

- मध्यम पुरुष 'तू' कर्ता हैं तो क्रिया धातु का प्रयोग करते हैं।

जैसे; तू वहाँ मत जा।

तू बाज़ार चल।

- मध्यम पुरुष बहुवचन 'तुम' कर्ता हैं तो क्रिया धातु के अंत में 'ओ' जोड़ा जाते हैं।

जैसे; तुम वहाँ मत जाओ।

तुम बाज़ार चलो।

- मध्यम पुरुष बहुवचन 'आप' कर्ता हैं तो क्रिया धातु के अंत में 'इए' और जोड़ जाते हैं।

जैसे; आप वहाँ मत जाइए।

आप बाज़ार चलिए।

अधिक जानकारी केलिए देखिए;

1. तू मेरी बात सुन।
2. तुम यह बात ध्यान से सुनो।
3. आप मेरी मदद कीजिए।
4. तू बीच में मत बोल।
5. तुम बीच में मत बोलो।
6. आप बीच में मत बोलिए।

अतिरिक्त अभ्यास केलिए आगे देखिए;

- तुम कौन हो?

मैं एक छात्र हूँ। यहाँ 'मैं' पुल्लिंग हैं। 'मैं'स्त्रीलिंग हैं तो, मैं छात्रा हूँ ऐसा कहती हैं।

- तुम्हारा नाम क्या है?

मेरा नाम राजू है।

- तुम कहाँ पढ़ते हो?

मैं सर्वोदया स्कूल में पढ़ता हूँ। यहाँ 'मैं' पुल्लिंग होने के कारण पढ़ता हूँ। मैं स्त्रीलिंग हैं तो क्रिया पढ़ती हूँ, हो जाएँगे।

- लड़का पलंग पर सोता है। 'लड़का' पुल्लिंग एकवचन हैं, इसलिए क्रिया 'सोता है'।

लड़की पलंग पर सोती है। 'लड़की' स्त्रीलिंग एकवचन है इसके कारण क्रिया 'सोती है'।

लड़के मैदान में खेलते हैं। 'लड़के' पुल्लिंग बहुवचन होने से क्रिया 'खेलते हैं'।

लड़कियाँ मैदान में खेलती हैं। 'लड़कियाँ' स्त्रीलिंग बहुवचन हैं, इसलिए क्रिया 'खेलती हैं'।

- वह घर का काम करती हैं। इधर 'वह' स्त्रीलिंग हैं।

वे इलहाबाद में काम करते हैं।

'वे' बहुवचन हैं इसलिए क्रिया 'करते' हैं।

हम सब यहाँ आराम करते हैं।

- आदर को सूचित करने केलिए भी बहुवचन का प्रयोग करते हैं।

मामाजी पंजाब में काम करते हैं।

पिता मुंबई में रहते हैं।

- रजिला और शमीरा प्रार्थना करती हैं।
- रमेश और निसार खेलते हैं।
- बाप और माँ हँस रहे हैं। इधर देखिए, यहाँ 'बाप' पुल्लिंग हैं और 'माँ' स्त्रीलिंग हैं तो भी क्रिया पुल्लिंग बहुवचन में हैं।

आगे देखिए,

- जोस केला खाता होगा।

उमा केला खाती होगी।

लड़के केला खाते होंगे।

SGOU

जोस और जोसफ केले खाते होंगे।

लड़कियाँ केला खाती होंगी।

उमा और रमा केला खाती होंगी।

आगे देखिए, वार्तालाप द्वारा व्याकरण पढेंगे;

रवि : नमस्कार

जॉन : नमस्कार, आप कैसे हैं?

रवि : मैं ठीक हूँ। आप कब आए?

जॉन : मैं परसों आया।

रवि : कितने दिन की छुट्टी है?

जॉन : एक महीने की छुट्टी है।

रवि : घरवाले भी आए हैं?

जॉन : नहीं, बच्चों को स्कूल जाना हैं, इसलिए अब वे न आ सके।

रवि : अच्छा, आप से मिलकर बड़ी खुशी हुई।

जॉन : मुझेभी। फिर मिलेंगे, धन्यवाद।

रवि : धन्यवाद।

एक ओर वार्तालाप देखिए,

- अध्यापक और अभिभावक केबीच का वार्तालाप

अध्यापक : आप क्यों आए?

अभिभावक : मैं एक अभिभावक हूँ, प्रधान अध्यापक से मिलने आया हूँ।

अध्यापक : उनसे मिलने की क्या जरूरत है?

अभिभावक : मेरे बच्चे इस स्कूल में पढ़ते हैं, उनकीपढ़ाई के संबंध में जानने के लिए आया हूँ।

अध्यापक : प्रधान अध्यापक यहाँ नहीं हैं। वे अभी आएँगे, आप उधर बैठिए।

(प्रधान अध्यापक के आने के बाद)

अभिभावक : नमस्कार मास्टर जी, मैं आप से मिलने आया हूँ।

प्रधानअध्यापक : बताओ, क्या बात है?

अभिभावक : मेरा एक लड़का इधर पढ़ता हैं।

प्रधानअध्यापक : वह किस दर्जे में हैं?

अभिभावक : वह दसवें दर्जे में पढ़ता है।

प्रधानअध्यापक : वह किस डिविषन में है?

अभिभावक : वह डिविषन ए में पढ़ता है।

प्रधानअध्यापक : अच्छा मैं क्लास टीचर को बुलाऊँगा। ये है क्लास टीचर उनसे पूछ लीजिए।

अभिभावक : नमस्ते मास्टर जी, में अपने बच्चे की पढ़ाई के बारे में पूछने आया हूँ।

क्लासटीचर : वह पढ़ने में होशियार हैं। सार्वजनिक इम्तहान केलिए अभी दो महीने बाकी है, थोड़ा और ध्यान देकर पढ़ना चाहिए।

अभिभावक : जरूर, मैं बताऊँगा। अच्छा, में चलताहूँ। शुक्रिया मास्टर जी।

क्लासटीचर : शुक्रिया।

अभ्यासार्थ अनुच्छेद

एक गद्यांश मिले तो किस प्रकार इसका उत्तर दे सकताहैं, हम इसका विश्लेषण कर चुके हैं। एक बार फिर इसे देखें।

- पहले अच्छी तरह गद्यांश का वाचन करना चाहिए।
- फिर इसका भाव समझना है
- दिए गए प्रश्नका वाचन करना चाहिए।
- अंत में ध्यानपूर्वक उत्तर लिखना चाहिए।

पहले नमूने के लिए एक अनुच्छेद देखिए–

1. **निम्न लिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए सवाल का सही उत्तर लिखिए;**

SGOU

मानव जीवन में सफलता प्राप्त करने केलिए परिश्रम का प्रमुख स्थान है। जीवन बिताने का माध्यम है परिश्रम। परिश्रम के बिना कोई काम चल नहीं सकता। हमारे जीवन की समस्त बातें परिश्रम के अधीन हैं। परिश्रम दो प्रकार के होते हैं। वे शारीरिक तथा मानसिक परिश्रम हैं। शारीरिक और मानसिक परिश्रम आपस में संबंधित हैं। शरीर को स्वस्थ रखने तथा शरीर के अंगों का उचित रूप से संचालन करने केलिए शारीरिक परिश्रम अत्यंत आवश्यक हैं। बिना परिश्रम के मानसिक उन्नति नहीं होती है। वह मनुष्य को स्वावलंबी तथा साहसी बनाता है। जीवन में सुख और शांति परिश्रम द्वारा ही प्राप्त होते हैं।

1. मानव जीवन में सफलता प्राप्त करने केलिए किसको प्रमुख स्थान है?
2. परिश्रम कितने प्रकार के होते हैं? कौन - से हैं?
3. परिश्रम के बिना क्या नहीं होती हैं?
4. परिश्रम मनुष्य को क्या बनाता है?
5. गद्यांश केलिए उचित शीर्षक लिखिए?

इसप्रकार का एक अनुच्छेद मिले तो क्या- क्या करने हैं, देखिए,

पहले, अनुच्छेद का अच्छी तरह वाचन करना चाहिए।

दो या तीन बार वाचन करना चाहिए।

इसके बाद गद्यांश के नीचे दिए गए सवाल को समझना चाहिए।

एक – एक सवाल को ध्यानपूर्वक सही उत्तर लिखना चाहिए।

इसका उत्तर देखिए;

उत्तर

1. मानव जीवन में सफलता प्राप्त करने केलिए परिश्रम की आवश्यकता हैं।
2. परिश्रम दो प्रकार के होते है। शारीरिक तथा मानसिक
3. परिश्रम के बिना उन्नति नहीं होती है।
4. परिश्रम मनुष्य को स्वावलंबी तथा साहसी बनाते हैं
5. परिश्रम का महत्व।

इस तरह उत्तर लिखना चाहिए।

अगला अनुच्छेदए देखिए;

2 नीचे दिएगए गद्यांश ध्यानपूर्वक पढिए और नीचे दिए गए प्रश्न का उत्तर लिखिए;

भारत देश में अनेक संप्रदाय तथा धर्मों के लोग हजारों वर्षों से बहुत ही प्यार से निवास कर रहे हैं। भारत में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, बौद्ध, जैन आदि धर्म के लोग भाईचारे से जीते हैं। भाषा, रीति – रिवाज, खान – पान, धर्म, जाति, वस्त्र और आभूषण में विविधता होनेवाले हमारे देश में राष्ट्रीय एकता का बड़ा महत्व हैं। जब हमारे देश पर बाहरी शक्तियों ने आक्रमण किया तब भारत की एकता दर्शनीय रही। हम स्वयं बंगाली, गुजराती, मराठी, पंजाबी, आदि नाम से संबोधित करनेवाले लोग सब भारतीय हैं। हम सब भारत देश के नागरिक हैं। देश की एकता में साहित्य एवं कला भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत में भावात्मक एकता प्रारंभ से ही विद्यमानहैं।

1. भारत में विविध धर्म के लोग किस प्रकार जीते हैं?
2. हमारे देश में बाहरी शक्तियों के आक्रमण के समय क्या दर्शनीय रही?
3. देश की एकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले क्या - क्या हैं?
4. प्रस्तुत गद्यांश केलिए उचित शीर्षक लिखिए?

उत्तर

1. भारतमें विविध धर्म के लोग भाईचारे से जीते हैं।
2. भारतकी एकता दर्शनीय रही।
3. देशकी एकता में साहित्य एवं कला महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
4. भारत की एकता।

3. निम्नलिखित गद्यांश ध्यानपूर्वकपढिए और नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखिए;

SGOU

श्रीनारायण गुरु का जन्म 1856 ईसवींमें तिरुवनंतपुरम के चेम्बषंती नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम माड़न और माता कुट्टी थी। पिता अध्यापक के साथ ही वैद्य भी थे। श्रीनारायण गुरु के बचपन का नाम नाणु था। नाणु कुशाग्र बुद्धि का छात्र था। उसके गुरु उससे बहुत प्यार करता था और उसे छात्रों का नेता बनाया। नाणु घुमक्कड़पकृति के थे और धर्म परायण जीवन व्यतीत करने के इच्छुक थे। उन्होंने जीवन के रहस्यों को जानने केलिए दैहिक बंधनों को तोड़ते हुए मुक्त संसार की ओर निकल पड़े। गुरुजी मानव से कहते हैं कि सभी धर्मों का उद्देश्य एक ही है मानव जाति केलिए श्रीनारायण गुरु का संदेश यह है - 'एक जाति, एक धर्म और एक ईश्वर मानव का'।

1. श्रीनारायण गुरु का जन्म कब हुआ?
2. श्रीनारायण गुरु का जन्म कहाँ हुआ?
3. श्रीनारायण गुरु के पिता और माता का नाम क्या है?
4. श्रीनारायण गुरु के बचपन का नाम क्या था?
5. मानव जाति केलिए श्रीनारायण गुरु का संदेश क्या है?

4. निम्नलिखित गद्यांश पढिए और नीचेदिए गए प्रश्नों का उनित्तर लिखिए :

बाबा आमटे का पूरा नाम मुरलीधरदेवीदास आमटे है। इनका जन्म महाराष्ट्रा के एक कट्टर ब्रह्मण परिवार में 26 दिसंबर 1914 को हुआ। इनके पिता देविदास हरबाजी आमटे एक बड़े जमींदार होने के साथ – साथ सरकारी अधिकारी भी थे। बचपन से ही बालक मुरलीधर का ध्यान निर्धन और असहाय लोगों के कष्टों की ओर जाता। प्रकृति से प्यार उसके स्वभाव की दूसरी विशेषता थी यौवन काल में मुरलीधर पर महात्मागाँधी का बहुत प्रभाव पड़ा। भारत सरकार ने उनकी सेवाओं केलिए उन्हें 'पद्मश्री' की उपाधि से पुरस्कृत किया।

1. बाबा आमटे का पूरा नाम क्या हैं?
2. आमटे का जन्म कब हुआ और कहाँ?
3. आमटे के पिता का नाम क्या था?
4. यौवन काल में आमटे पर किसका प्रभाव पड़ा?
5. प्रस्तुत गद्यांश केलिए उचित शीर्षक लिखिए?

Critical Overview / अवलोकन

भाषा के शुद्ध प्रयोग केलिए व्याकरण की आवश्यकता है।

भाषा का सही ज्ञान व्याकरण से ही प्राप्त होता है।

व्याकरण वह विधा है जिसकी सहायता से मानव शुद्ध भाषा बोल सकते हैं, पढ़ सकते हैं और लिखसकते हैं।

इससे व्याकरण के बारे में थोडी जानकारी मिली होगी। अब हम व्याकरण के अभ्यास के लिए कुछ वाक्य देखेंगे। आप इकाई एक में सज्ञा, सर्वनामआदि पढ़ चुके हैं। अब उसके बारे में बताने की आवश्यकता नहीं।

Recap / पुनरावृत्ति

- तू, तढम, आप कर्ता होते समय क्रिया इसप्रकार हैं - तू आ, तुमआओ, आप आइए।
- कर्ता पुल्लिंग एकवचन हो तो क्रिया पुल्लिंग एकवचन में होतेहैं। जैसे; राम काम करता है।
- कर्ता पुल्लिंग बहुचन में है तो क्रिया पुल्लिंग बहुवचन में होते हैं। जैसे; लड़के काम करते हैं

SGOU

- कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन है तो क्रिया भी ऐसी होती हैं। जैसे; रानी काम करती है।
- कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन है तो क्रिया भी ऐसी हैं। जैसे; लड़कियाँकाम करती हैं।
- कर्ता एकवचन है, तो भी आदर को सूचित करने केलिए क्रिया बहुवचनमें प्रयोग करते हैं जैसे ;
- माँ उत्तराखंड में रहती हैं।
- बड़े भाई दिल्ली में रहते हैं।

Objective questions / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. गद्यांश मिले तो पहले क्या करना चाहिए?
2. गद्यांशमिले तो दूसरा कार्य क्या करना चाहिए?
3. गद्यांशमिले तो तीसरा कार्य क्या करना चाहिए?
4. गद्यांश मिले तो अंतिम कार्य क्या करना चाहिए?
5. गद्यांशका भाषा कैसी होनी चाहिए?
6. गद्यांश का शीर्षक कैसे होना चाहिए?
7. गद्यांश का उत्तर कैसा लिखना चाहिए?
8. तुम कर्ता है तो क्रिया का रूप कैसा है? उदाहरण लिखिए?
9. वर्तमानकाल में कर्ता पुल्लिंग एकवचन हो तो क्रिया कैसे होते हैं?
10. वर्तमानकाल में कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन है तो क्रिया कैसी होती हैं?
11. वर्तमानकाल में कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन हैं तो क्रिया कैसी होती हैं?
12. कर्ता एकवचन है, तो भी आदर को सूचित करने केलिए क्रियाका प्रयोग कैसे करते हैं?
13. भाषा के शुद्ध प्रयोग केलिए किसकीआवश्यकता है?
14. भाषा के कितने रूप होते है?
15. शब्दों के स्वार्थक समूह को क्याकहता है?

SGOU

Answers/ उत्तर

1. अच्छी तरह गद्यांश का वाचन करना चाहिए
2. भाव समझना हैं।
3. दिए गए प्रश्न का वाचन करना चाहिए।

4. ध्यानपूर्वक उत्तर लिखना चाहिए।
5. सरल होना चाहिए।
6. सामग्री पर आधारित होना चाहिए।
7. उत्तर एक या दो पंक्तियों मेंलिखना चाहिए।
8. तू आ, तुम आओ, आप आइए
9. पुल्लिंग एकवचन में
10. स्त्रीलिंग एकवचनहोती है।
11. स्त्रीलिंग बहुवचन।
12. बहुवचन में प्रयोग करते हैं।
13. व्याकरण की।
14. दो रूप।
15. वाक्य।

Assignments/ प्रदत्त कार्य

1. सामान्य जीवन में भाषा की प्रधानता को समझाइए।
2. अनुछेद अभ्यास करने से क्या- क्या लाभ है, अपना मत व्यक्त कीजिए।
3. गद्यांश लिखते समय किन-किन बातें पर ध्यान देना चाहिए?
4. हिंदी व्याकरण में गद्यांश को महत्वपूर्ण स्थान है, निर्धारित कीजिए।
5. किताब की दूकान में दूकानदार और ग्राहक के बीचका वार्तालाप तैयार कीजिए।
6. भाषा के सही ज्ञान व्याकरण से ही प्राप्त होते हैं, व्यक्त कीजिए।
7. भाषा के दो रूप को उदाहरण सहित समझाइए।
8. व्याकरण की विशेषताओं पर टिप्पणी लिखिए।

SGOU

Reference / सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी व्याकरण - आचार्य कामता प्रसाद गुरु।
2. सामान्य हिन्दी व्याकरण - श्रीकृष्ण पाण्डेय।
3. व्यवहारिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना - हरदेव बाहरी।
4. व्यवहारिक हिन्दी व्याकरण अनुवाद तथा रचना -डॉ .एच .परमेश्वरन।

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

Model Qustion Paper Sets

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ………   Reg. No : ....
                                                                                              Name : ……...........

Model Question Paper- Set-I
FOUR YEAR UNDERGRADUATE PROGRAMME
BA (HONOURS) HINDI LANGUAGE AND LITERATURE
END-SEMESTER EXAMINATION- FOURTH SEMESTER
ABILITY ENHANCEMENT COURSE

SGB24HD102AC - हिन्दी गद्य साहित्य और संरचना (CBCS - UG)

2024-25 - Admission Onwards

Maximum Time: 3   Hours Maximum Mark: 70

Section A

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में लिखिए।

1. आधुनिक गद्य के पितामह कौन है?
2. सरस्वती पत्रिका कब निकली?
3. हिंदी के यूग प्रवर्तक नाटककार कौन है?
4. आत्मकथा को अंग्रेजी में क्या कहते हैं?
5. हरिशंकर परसाई मुख्य रूप से किस विधा के लेखक हैं?
6. ईदगाह का नायक पात्र कौन है?
7. रज़िया किस विधा की रचना है?
8. हिंदी की पहली मौलिक कहानी किसे माना जाता है? (5×1= 5)

SGOU

Section B

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए।

9. समकालीन हिंदी कहानी की दो प्रमुख प्रवृत्तियां लिखिए।
10. भ्रष्टाचार एवं खुश दूर करने का उपाय क्या-क्या है?
11. ईदगाह कहानी का विषय वस्तु क्या है?
12. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के भेद को सोदाहरण समझाइए?
13. संज्ञा क्या है और संज्ञा के प्रकार व्यक्त कीजिए?
14. 'ने' का प्रयोग उदाहरण देकर समझाइए। (5×2=10)

Section C

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

15. वापसी में व्यक्त समस्या पर चर्चा कीजिए?
16. तत्सम शब्द के उदाहरण देकर उसको स्पष्ट कीजिए?
17. सर्वनाम के भेद को समझाइए?
18. भूत काल के भेद सोदाहरण समझाइए?
19. नई कहानी आंदोलन का हिंदी साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा? स्पष्ट कीजिए।
20. रज़िया का चरित्र चित्रण कीजिए? (4×5=20)

Section D

किसी एक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों में लिखिए।

21. हिन्दी कहानी के विकास और उसके प्रमुख युगों के बारे में लिखिए।
22. प्रेमचंद युगीन कहानिकार एवं कहानियों पर चर्चा की जिए। (1×10 = 10)

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ……… Reg. No : ....
Name : ……..............

Model Question Paper- Set-II
FOUR YEAR UNDERGRADUATE PROGRAMME
BA (HONOURS) HINDI LANGUAGE AND LITERATURE
END-SEMESTER EXAMINATION- FOURTH SEMESTER
ABILITY ENHANCEMENT COURSE

SGB24HD102AC - हिन्दी गद्य साहित्य और संरचना (CBCS - UG)
2024-25 - Admission Onwards

Maximum Time: 3 Hours Maximum Mark: 70

Section A

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में लिखिए। (5×1= 5)

1. आधुनिक गद्य के पितामह कौन हैं?
2. प्रेमचंद का वास्तविक नाम क्या है?
3. उषा प्रियंवदा की प्रसिद्ध कहानी कौन-सी है?
4. अर्थ के आधार पर शब्दों के कितने भेद होते हैं?
5. काल कितने प्रकार के होते हैं?
6. क्रिया किस प्रकार परिवर्तित होती है?
7. 'चिंतामणि' के लेखक कौन हैं?
8. 'वापसी' कहानी के नायक कौन हैं?

SGOU

Section B

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए। (5×2=10)

9. आत्मकथा की विशेषताएँ क्या हैं?
10. जीवनी क्या है?
11. हिंदी के गद्य की विधाएँ क्या हैं?
12. हिंदी के प्रमुख यात्रावृत्तांतकार कौन-कौन हैं?
13. हिंदी के प्रमुख दो व्यंग्यकारों के नाम लिखिए।
14. रेखाचित्र का अर्थ क्या है?
15. शब्द किसे कहते हैं?
16. सर्वनाम के कितने प्रकार होते हैं?

Section C

किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर लिखिए। (4×5=20)

17. हिंदी गद्य के विकास पर एक समीक्षात्मक निबंध तैयार कीजिए।
18. व्यंग्य क्या है?
19. 'ईदगाह' कहानी की विषयवस्तु क्या है?
20. प्रगतिवादी कहानी का मुख्य उद्देश्य क्या है?
21. हिंदी कहानी की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
22. विशेषण क्या है?

Section D

किसी एक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों में लिखिए। (1×10 = 10)

23. कहानी का सामान्य परिचय दीजिए।
24. 'रज़िया' शीर्षक रेखाचित्र का उद्देश्य लिखिए।

SGOU

സർവ്വകലാശാലാഗീതം

വിദ്യയാൽ സ്വതന്ത്രരാകണം
വിശ്വപൗരരായി മാറണം
ഗ്രഹപ്രസാദമായ് വിളങ്ങണം
ഗുരുപ്രകാശമേ നയിക്കണേ

കൂരിരുട്ടിൽ നിന്നു ഞങ്ങളെ
സൂര്യവീഥിയിൽ തെളിക്കണം
സ്നേഹദീപ്തിയായ്‌വിളങ്ങണം
നീതിവൈജയന്തി പാറണം

ശാസ്ത്രവ്യാപ്തിയെന്നുമേകണം
ജാതിഭേദമാകെ മാറണം
ബോധരശ്മിയിൽ തിളങ്ങുവാൻ
ജ്ഞാനകേന്ദ്രമേ ജ്വലിക്കണേ

കുരീപ്പുഴ ശ്രീകുമാർ

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin : 673002
Ph: 04952920228
email:rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery
Kannur, Pin : 670106
Ph: 04952990494
email:rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tirpunithura, Ernakulam
Kerala, Pin : 682301
Ph: 04842927436
email:rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad
Kerala, Pin : 679303
Ph: 04662912009
email:rcddirector@sgou.ac.in

SGOU

DON'T LET IT BE TOO LATE

SAY NO TO DRUGS

LOVE YOURSELF AND ALWAYS BE HEALTHY

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

हिन्दी गद्य साहित्य और संरचना

COURSE CODE :SGB24HD102AC

YouTube

Sreenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841

ISBN 978-81-995975-0-1
9 788199 597501